76 KABEERA GUNAH (HINDI)

76 कबीरा गुनाह

मुसन्निफ़ : इमाम ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह्बी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي

(मुतवफ़्फ़ा 748 हिजरी)

(دعوتِ اسلامی)
شعبہ تراجم کتب

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब **"76 कबीरा गुनाह"** उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **'हिन्दी' रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ृ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

A-3

कुरआनो ह़दीस

की रौशनी में बड़े गुनाहों का मुख़्तसर बयान

اَلْکَبَائِر

तर्जमा बनाम

76 कबीरा गुनाह

मुसन्निफ़

इमाम ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह्बी शाफ़ेई

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मुतवफ़्फ़ा 748 हिजरी)

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : الکبائر

तर्जमा बनाम : 76 कबीरा गुनाह

मुअल्लिफ़ : ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह़बी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی

मुतर्जिमीन : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

पहली बार : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सिने. 1438 हिजरी

ता'दाद : 3100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि. **ह़वाला नम्बर :** 199

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "الکبائر" के तर्जमे बनाम

"76 कबीरा गुनाह" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)

08-12-2014

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद्दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	5
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)	6
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8
ह़ालाते मुअल्लिफ़	12
मुक़द्दमा	15
गुनाहे कबीरा नम्बर 1 : शिर्क करना	19
गुनाहे कबीरा नम्बर 2 : क़त्ले नाह़क़	21
गुनाहे कबीरा नम्बर 3 : जादू करना	27
गुनाहे कबीरा नम्बर 4 : नमाज़ छोड़ देना	33
गुनाहे कबीरा नम्बर 5 : ज़कात न देना	39
गुनाहे कबीरा नम्बर 6 : वालिदैन की ना फ़रमानी करना	42
गुनाहे कबीरा नम्बर 7 : सूद	47
गुनाहे कबीरा नम्बर 8 : ज़ुल्मन यतीम का माल खाना	49
गुनाहे कबीरा नम्बर 9 : रसूलुल्लाह ﷺ पर झूट बांधना	50
गुनाहे कबीरा नम्बर 10 : रमज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्र छोड़ देना	52
गुनाहे कबीरा नम्बर 11 : मैदाने जिहाद से भाग जाना	54
गुनाहे कबीरा नम्बर 12 : ज़िना करना	54
गुनाहे कबीरा नम्बर 13 : ह़ाकिम का अपनी रिआ़या को धोका देना और उन पर ज़ुल्मो जब्र करना	58
गुनाहे कबीरा नम्बर 14 : शराब पीना	68
गुनाहे कबीरा नम्बर 15 : तकब्बुर करना, फ़ख़्र करना, शैख़ी मारना और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना	71

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 16 : झूटी गवाही देना	77
गुनाहे कबीरा नम्बर 17 : लिवात़त	79
गुनाहे कबीरा नम्बर 18 : पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना	81
गुनाहे कबीरा नम्बर 19 : माले ग़नीमत बैतुल माल और ज़कात के माल में ख़ियानत करना	84
गुनाहे कबीरा नम्बर 20 : नाजाइज़ व बातिल त़रीक़े से लोगों का माल ले कर ज़ुल्म करना	89
गुनाहे कबीरा नम्बर 21 : चोरी करना	93
गुनाहे कबीरा नम्बर 22 : डाका डालना	95
गुनाहे कबीरा नम्बर 23 : झूटी क़सम खाना	96
गुनाहे कबीरा नम्बर 24 : झूट बोलना	99
गुनाहे कबीरा नम्बर 25 : ख़ुदकुशी करना	104
गुनाहे कबीरा नम्बर 26 : कुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना	106
गुनाहे कबीरा नम्बर 27 : दय्यूसी	110
गुनाहे कबीरा नम्बर 28 : मर्दों का ज़नानी और औ़रतों का मर्दानी वज़्अ़ अपनाना	111
गुनाहे कबीरा नम्बर 29 : ह़लाला करना	114
गुनाहे कबीरा नम्बर 30 : मुर्दार, ख़ून और सूअर का गोश्त खाना	115
गुनाहे कबीरा नम्बर 31 : पेशाब से न बचना	117
गुनाहे कबीरा नम्बर 32 : नाजाइज़ टेक्स वुसूल करना	118
गुनाहे कबीरा नम्बर 33 : रियाकारी	119
गुनाहे कबीरा नम्बर 34 : ख़ियानत करना	122
गुनाहे कबीरा नम्बर 35 : दुन्या के लिये इ़ल्म सीखना और इ़ल्म छुपाना	123
गुनाहे कबीरा नम्बर 36 : एह़सान जताना	128
गुनाहे कबीरा नम्बर 37 : तक़्दीर को झुटलाना	129
गुनाहे कबीरा नम्बर 38 : लोगों की ख़ुफ़्या बातें सुनना	135

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 39 : ला'नत भेजना	136
गुनाहे कबीरा नम्बर 40 : अमीर के साथ अ़ह्द शिकनी वग़ैरा करना	139
गुनाहे कबीरा नम्बर 41 : काहिन और नुजूमी को सच्चा जानना	143
गुनाहे कबीरा नम्बर 42 : शोहर की ना फ़रमानी करना	145
गुनाहे कबीरा नम्बर 43 : रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना	148
गुनाहे कबीरा नम्बर 44 : कपड़े या दीवार वग़ैरा में तस्वीर बनाना	151
गुनाहे कबीरा नम्बर 45 : चुग़ली	153
गुनाहे कबीरा नम्बर 46 : नौहा करना और चेहरा पीटना	155
गुनाहे कबीरा नम्बर 47 : नसब पर त़ा'न करना	156
गुनाहे कबीरा नम्बर 48 : बग़ावत व सर्कशी करना	157
गुनाहे कबीरा नम्बर 49 : मुसलमान पर नाहक़ ख़ुरूज करना और कबीरा गुनाह के मुर्तकिब को काफ़िर क़रार देना	161
गुनाहे कबीरा नम्बर 50 : मुसलमान को अज़िय्यत देना और बुरा भला कहना	164
गुनाहे कबीरा नम्बर 51 : औलियाउल्लाह को अज़िय्यत देना और उन से अ़दावत रखना	170
गुनाहे कबीरा नम्बर 52 : फ़ख़्र व ग़ुरूर से तहबन्द वग़ैरा लटकाना	171
गुनाहे कबीरा नम्बर 53 : मर्द का रेशमी लिबास पहनना और सोना इस्ति'माल करना	175
गुनाहे कबीरा नम्बर 54 : ग़ुलाम का भाग जाना	177
गुनाहे कबीरा नम्बर 55 : ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह करना	179
गुनाहे कबीरा नम्बर 56 : पराई ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के लिये ज़मीन के निशानात मिटाना	180
गुनाहे कबीरा नम्बर 57 : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला कहना	181
गुनाहे कबीरा नम्बर 58 : अन्सार को बुरा भला कहना	186
गुनाहे कबीरा नम्बर 59 : गुमराही की त़रफ़ बुलाना या बुरा त़रीक़ा ईजाद करना	187
गुनाहे कबीरा नम्बर 60 : बाल जोड़ना, दांत कुशादा करना और गूदना	188

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 61 : हथयार से मुसलमान को इशारा करना	189
गुनाहे कबीरा नम्बर 62 : ख़ुद को अपने बाप के इलावा की तरफ़ मन्सूब करना	190
गुनाहे कबीरा नम्बर 63 : बद शुगूनी	192
गुनाहे कबीरा नम्बर 64 : सोने चांदी के बरतनों में खाना पीना	194
गुनाहे कबीरा नम्बर 65 : नाहक़ झगड़ना, दूसरे को हक़ीर समझ कर उस के कलाम में ता'न करना, इन्तिहाई दुश्मनी रखना और हक़ जाने बिग़ैर क़ाज़ी का वकील बनना	195
गुनाहे कबीरा नम्बर 66 : ग़ुलाम को ख़स्सी करना, नाक काटना और इस पर ज़ुल्मो सितम करना	198
गुनाहे कबीरा नम्बर 67 : माप तोल में डन्डी मारना	200
गुनाहे कबीरा नम्बर 68 : अल्लाह तआला की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना	201
गुनाहे कबीरा नम्बर 69 : रहमते ख़ुदावन्दी से ना उम्मीद होना	202
गुनाहे कबीरा नम्बर 70 : मोहसिन की नाशुक्री करना	203
गुनाहे कबीरा नम्बर 71 : बचा हुवा पानी रोकना	203
गुनाहे कबीरा नम्बर 72 : अलामत के लिये जानवर का चेहरा दाग़ना	206
गुनाहे कबीरा नम्बर 73 : जुवा खेलना	207
गुनाहे कबीरा नम्बर 74 : हरम में बे दीनी फैलाना	211
गुनाहे कबीरा नम्बर 75 : नमाज़े जुमुआ तर्क करना	213
गुनाहे कबीरा नम्बर 76 : मुसलमानों की जासूसी करना और इन के पोशीदा उमूर पर दूसरों को आगाह करना	214
उन उमूर का बयान जिन के गुनाहे कबीरा होने का एहतिमाल है	217
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	239
माख़ज़ो मराजेअ	252
अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तआरुफ़	255

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"76 कबीरा गुनाह" (उर्दू) के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ**

"या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیرللطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्दो सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा)। ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾3﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾4﴿ क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾5﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ और رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पढूंगा। ﴾6﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्म ह़ासिल करूंगा। ﴾7﴿ इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। ﴾8﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याददाश्त" वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾10﴿ अपनी इस्लाह़ की कोशिश करूंगा। ﴾11﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "दा'वते इस्लामी" की तमाम मजालिस ब शुमूल "अल मदीनतुल इल्मिय्या" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

कौन कब और कहां मरेगा ?

जंगे बद्र के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द जां निसारों के साथ रात में मैदाने जंग का मुआ़इना फ़रमाया, उस वक़्त दस्ते अन्वर में एक छड़ी थी। आप उस छड़ी से ज़मीन पर लकीर बनाते हुवे फ़रमा रहे थे कि येह फ़ुलां काफ़िर के क़त्ल होने की जगह है और कल यहां फ़ुलां काफ़िर की लाश पड़ी हुई मिलेगी। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस जगह जिस काफ़िर की क़त्लगाह बताई थी उस काफ़िर की लाश ठीक उसी जगह पाई गई उन में से किसी एक ने लकीर से बाल बराबर भी तजावुज़ नहीं किया।

(مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب غزوة بدر، ص ۹۸۱، حدیث: ۱۷۷۸ ..... شرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوة بدر الکبری، ۲/ ۲۶۹)

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को दो बातिनी कुव्वतों का मजमूआ़ बनाया है एक अ़क़्ल और दूसरी शहवत और फिर इन दोनों कुव्वतों के कुछ मददगार मुक़र्रर फ़रमाए हैं। पहली कुव्वत के मददगार ह़ज़राते अम्बियाए किराम, फ़िरिश्ते और नेक लोग हैं और दूसरी कुव्वत के मददगार शैत़ान, नफ़्स और बुरे लोग हैं। अ़क़्ल का नूर इन्सान को सीधी राह पर चलाने की कोशिश करता है जब कि शहवत का फ़ुतूर उसे इस राह से भटकाने का काम करता है। इन्सान अगर अ़क़्ल की बात मानता है तो वोह उसे तक़्वा व परहेज़गारी की त़रफ़ ले जाती है और अगर शहवत व ख़्वाहिश के पीछे चले तो वोह उसे फ़िस्क़ो फ़ुजूर की जानिब ले जाती है क्यूंकि इन्सान की ज़ात में तक़्वा और फ़िस्क़ो फ़ुजूर दोनों की पहचान व समझ रख दी गई है। पहली चीज़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमांबरदारी से ता'बीर किया जाता है और दूसरी बात को उस की ना फ़रमानी और गुनाह कहा जाता है। अ़क़्ल का नूर और दिल का शुऊ़र रखने वाले शख़्स को येह किसी त़रह़ ज़ेब नहीं देता है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दिया हुवा रिज़्क़ खाए मगर फिर भी गुनाह करे, उस के मुल्क व बादशाही में रहे मगर ना फ़रमानी न छोड़े, उसे समीअ़ो बसीर भी माने कि वोह हर जगह और हर लम्ह़ा उसे देख रहा है फिर भी मा'सिय्यत का इर्तिकाब करे और दिन रात उस की मुसलसल व बेपायां ने'मतों से लुत़्फ़ उठाए मगर उस के अह़काम से रूगर्दानी का अ़मल तर्क न करे।

जिस त़रह़ इत़ाअ़त बिल इत्तिफ़ाक़ उ़म्दा व पसन्दीदा है इसी त़रह़ गुनाह भी बिल इत्तिफ़ाक़ बुरा व ना पसन्दीदा है।

www.dawateislami.net

इताअ़त व फ़रमांबरदारी इन्सान को दुन्या व आख़िरत में इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत से सरफ़राज़ करती है जब कि गुनाह व ना फ़रमानी उसे ज़िल्लतो रुस्वाई के अ़मीक़ गढ़े में पहुंचा देती है। सच्ची बात है कि गुनाह न सिर्फ़ आख़िरत के लिये मुज़िर हैं बल्कि बेशुमार दुन्यावी नुक़्सानात का भी बाइ़स हैं जैसे रोज़ी व उ़म्र में कमी, मुसीबतों और बलाओं का हुजूम, दिल व दीगर आ'ज़ाए बदन में कमज़ोरी, अ़क़्ल में फ़ुतूर व ख़राबी, ख़तरनाक जिस्मानी व रूहानी बीमारियों का ह़म्ला, नूरे ईमान ज़ाइल होने के बाइ़स चेहरे की बे रौनक़ी, दिल की परेशानी व तंगी, खेतों और बाग़ात की पैदावार में कमी, ने'मतों से दूरी या महरूमी, इबादात से महरूमी, शर्म व ग़ैरत का सफ़ाया, ख़ालिक़ व मख़्लूक़ की ला'नत में गिरिफ़्तारी, चहार जानिब से रुस्वाइयों और नाकामियों का सामना, ज़ालिम हुक्मरानों का तसल्लुत, आंधियों, सैलाबों और ज़लज़लों में घिर जाना और نَعُوْذُبِاللّٰه ख़ातिमा बिल ख़ैर से महरूम हो जाना वग़ैरा नुक़्सानात का सबब गुनाह भी बनते हैं।

गुनाह कभी "सग़ीरा" होता है और कभी "कबीरा"। सग़ीरा तो नमाज़, रोज़ा, ह़ज और जुमुआ़ वग़ैरा इबादात की दुरुस्त अदाएगी से मुआ़फ़ हो जाता है मगर कबीरा की मुआ़फ़ी के लिये तौबा शर्त है। यहां दो बातें याद रखना ज़रूरी हैं : **पहली** येह कि सग़ीरा गुनाह पर इसरार से वोह कबीरा बन जाता है और **दूसरी** येह कि जिन गुनाहों का तअ़ल्लुक़ बन्दों के ह़ुक़ूक़ से है उन में तौबा के साथ साथ तलाफ़ी की ख़ातिर ह़क़ की अदाएगी या साह़िबे ह़क़ से मुआ़फ़ कराना भी लाज़िम है। याद रहे ! गुनाह छोटा हो या बड़ा दोनों **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का बाइ़स हैं। फिर येह भी वाज़ेह़ है कि जब तक गुनाहों की पहचान और इन के बारे में

www.dawateislami.net

मा'लूमात न हों तो किसी भी अ़क़्लमन्द का इन से महफ़ूज़ रहना मुश्किल है लिहाज़ा नफ़्सो शैत़ान की चालों और शरारतों से आ़म मुसलमानों को बा ख़बर करने के लिये ह़ज़राते उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने गुनाहों की पहचान, इन की तबाहकारियों, इन पर मुरत्तब होने वाले नुक़्सानात व अ़ज़ाबात और इन से बचने के त़रीक़ों के बयान पर मुश्तमिल काफ़ी किताबें तह़रीर फ़रमाई हैं जिन में "इह़याउल उ़लूम", "अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर" और "किताबुल कबाइर" सरे फ़ेहरिस्त हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए तराजिमे कुतुब से पहली दोनों कुतुब के उर्दू तराजिम हो कर ख़ूब बरकतें लुटा रहे हैं और अब तीसरी किताब "किताबुल कबाइर" का तर्जमा बनाम "**76 कबीरा गुनाह**" भी आप के हाथों में है। इस में 76 कबीरा गुनाहों को क़ुरआनो सुन्नत और अक़्वाले अइम्मा की रौशनी में इख़्तिसार के साथ बयान किया गया और आख़िर में इन गुनाहों का इजमाली तज़किरा है जिन के कबीरा होने का एह़तिमाल है। किताब के मुसन्निफ़ जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस, इमामुल जर्ह़ वत्ता'दील ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़ह़बी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा 748 हिजरी) हैं "किताबुल कबाइर" के त़वील और मुख़्तसर कई नुस्ख़े हैं और इ़ल्मिय्या ने तर्जमे के लिये "مَكْتَبَةُ الْفُرْقَان، عجمان، الامارات العربية المتحدة" का मुख़्तसर नुस्ख़ा मुन्तख़ब किया।

गुनाहों की पहचान और इन से बचने के लिये ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दीजिये ताकि हमें तक़्वा व परहेज़गारी नसीब हो और हमारा नफ़्स पाकीज़ा व सुथरा हो जाए।

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुसूले तक़्वा और नफ़्स की पाकीज़गी के लिये अ़मली कोशिशों के साथ येह दुआ़ भी करते रहिये जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूरए शम्स पारह 30 की आयत नम्बर 8 فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا (1) की तिलावत के वक़्त येह दुआ़ करते थे :

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكَّاهَا اَنْتَ وَلِیُّهَا وَمَوْلٰهَا

''या'नी ऐ मेरे परवर दगार ! मेरे नफ़्स को तक़्वा से नवाज़ और इसे सुथरा व पाकीज़ा फ़रमा, तू नफ़्स को सब से ज़ियादा पाक फ़रमाने वाला है, तू ही इस का वली व मौला है।''(2)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

सख़ी का खाना दवा है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सख़ी का खाना दवा और बख़ील का खाना बीमारी है।

(جمع الجوامع، حرف الطاء مع العین، ۵/ ۱۱۸، حدیث: ۱۳۸۹۱)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़गारी दिल में डाली।

2 ...روح البیان، ۱۰/ ۴۴۳

www.dawateislami.net

हालाते मुअल्लिफ़

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उ़स्मान बिन क़ाइमाज़ ज़ह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अ़ज़ीम मुह़द्दिस, मुह़क़्क़िक़ और मुअर्रिख़ थे। अपनी अस्ल के ए'तिबार से तुर्कमानी और मियाफ़ारक़ीन के रिहाइशी थे। आप की विलादत रबीउ़ल आख़िर 673 हिजरी में दिमश्क़ में हुई। आप के वालिद सुनार थे, इसी निस्बत से आप को ज़ह़बी कहा जाता है कि अ़रबी में ज़ह़ब सोने को कहते हैं। आप के वालिद साहिब ने तह़सीले इ़ल्म के लिये कोशिश की और सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा का समाअ़ किया। इमाम ज़ह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی 18 साल की उ़म्र में त़लबे ह़दीस में मश्ग़ूल हुवे और ह़दीस में इमामत के दर्जे पर फ़ाइज़ हुवे ह़त्ता कि इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی जैसे अ़ज़ीम मुह़द्दिस ने आप के मक़ाम तक पहुंचने की दुआ़ की। चुनान्चे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आबे ज़म ज़म पीते वक़्त मैं ने येह निय्यत की, कि "मैं ह़िफ़्ज़े ह़दीस में अ़ल्लामा ज़ह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मर्तबे तक पहुंच जाऊं।" इमाम ज़ह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی 20 साल की उ़म्र तक पहुंचने से पहले ही क़िराअते सब्आ़ की तह़सील से फ़ारिग़ हो चुके थे। इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی "ذَیْلُ طَبَقَاتِ الْحُفَّاظِ لِلذَّہَبِی" में फ़रमाते हैं : इस दौर के मुह़द्दिसीन फ़न्ने रिजाल और फ़ुनूने ह़दीस में चार शख़्सिय्यतों के मोह़ताज हैं जिन में से एक इमाम ज़ह़बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی हैं।

आप ने तह़सीले इ़ल्म के लिये मक्कए मुकर्रमा, क़ाहिरा, बा'लबक्क, त़राबुलुस, करक, मिस्र, नाबुलुस, इस्कन्दरिय्या

www.dawateislami.net

वग़ैरा मुतअ़द्दिद शहरों का सफ़र किया और वहां के मुक़्तदर उ़लमा व मुह़द्दिसीन से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप के असातिज़ा की ता'दाद एक हज़ार से ज़ाइद बताई जाती है। चन्द मश्हूर असातिज़ा के नाम येह हैं : (1).....शैख़ुल इस्लाम इब्ने दक़ीक़ुल ईद (2).....ह़ाफ़िज़ शरफ़ुद्दीन दिमयाती़ (3).....अ़ब्दुल ख़ालिक़ बिन अ़लवान (4).....ईसा बिन अ़ब्दुल मुनइ़म (5).....मुस्नदुल वक़्त अह़मद बिन इस्ह़ाक़ अबरक़ोही (6).....शैख़ुल क़ुर्रा जमालुद्दीन अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम बिन दावूद (7).....ह़ाफ़िज़ अह़मद बिन मुह़म्मद इब्ने ज़ाहिरी (8).....इब्ने नह़ास (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)

आप ने 698 हिजरी में ह़ज की सआ़दत ह़ासिल की और इसी दौरान रफ़ीक़े ह़ज ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़र्रात़ ह़म्बली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی से किताब "اَلْفَرَجُ بَعْدَ الشِّدَّة" का समाअ़ किया। 100 से ज़ाइद अ़ज़ीमुश्शान और कसीरुल फ़वाइद कुतुबे यादगार छोड़ीं जिन में से बा'ज़ के नाम येह हैं :

(۱)دُوَلُ الْاِسْلَام (۲)اَلْمُشْتَبِه فِی الْاَسْمَاءِ وَالْاَنْسَاب (۳)اَلْكُنٰى وَالْاَلْقَاب (۴)اَلْعُبَابُ فِی التَّارِيْخ (۵)تَارِيْخُ الْاِسْلَامِ الْكَبِيْر (36 جلدیں) (۶)سِيَرُ اَعْلَامِ النُّبَلَاء (28 جلدیں) (۷)اَلْكَاشِفُ فِی تَرَاجِمِ رِجَالِ الْحَدِيْث (۸)اَلتِّبْيَانُ فِی مَنَاقِبِ عُثْمَان (۹)طَبَقَاتُ الْقُرَّاء (۱۰)اَلْاِمَامَةُ الْكُبْرٰى (۱۱)تَهْذِيْبُ تَهْذِيْبِ الْكَمَال (۱۲)مِيْزَانُ الْاِعْتِدَال فِی نَقْدِ الرِّجَال (۱۳)اَلْمُخْتَصَرُ الْمُحْتَاجُ اِلَيْهِ مِنْ تَارِيْخِ الدُّبَيْثِی (۱۴)مُعْجَمُ شُيُوْخِ الذَّهَبِی (۱۵)اَلْمُقْتَنٰى مِنَ الْكُنٰى (۱۶)اَلْاِعْلَامُ بِوَفِيَاتِ الْاَعْلَام (۱۷)اَلْكَبَائِر (۱۸)اَلْمُغْنِی فِی الضُّعَفَاء (۱۹)نِعَمُ السَّمَرِ فِی سِيْرَةِ عُمَر (۲۰)اَلطِّبُّ النَّبَوِی (۲۱)تَذْكِرَةُ الْحُفَّاظ (۲۲)تَحْرِيْمُ الْاَدْبَار۔

आप की किताबों को जो शोहरत ह़ासिल हुई इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी

www.dawateislami.net

قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "आप की किताबों में लोगों ने रग़बत की और इस के लिये उन्हों ने आप की त़रफ़ सफ़र किया और उन को पढ़ने लिखने और सुनने के लिये हाथों हाथ लिया।"

आप से बेशुमार उ़लमा व त़लबा ने इस्तिफ़ादा किया। चन्द मश्हूर तलामिज़ा के नाम येह हैं : (1).....क़ाज़ियुल कु़ज़्ज़ा ताजुद्दीन सुब्की (2).....अबुल मह़ासिन मुह़म्मद बिन अ़ली हुसैनी (3).....अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मुफ़्लिह़ (4).....सलाहुद्दीन ख़लील बिन ऐबक (5).....ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (6).....अबुल मआ़ली मुह़म्मद बिन राफ़ेअ़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)

इ़ल्मी शोहरत और मक़्बूलिय्यत के सबब आप बड़ी बड़ी दर्सगाहों के शैख़ुल ह़दीस रहे। जिन में दारुल ह़दीस उ़रविय्या, दारुल ह़दीस ज़ाहिरिय्या, दारुल ह़दीस नफ़ीसिय्या, दारुल ह़दीस फ़ाज़िलिय्या और दारुल कु़रआन वल ह़दीस तन्कज़िय्या शामिल हैं।

आप की एक साह़िबज़ादी और दो साह़िबज़ादे थे, सब आ़लिमे दीन हुवे। इतवार व पीर की दरमियानी शब 3 ज़ी क़ा'दा 748 हिजरी को मद्रसए उम्मे सालेह़ में अपनी रिहाइशगाह पर आप ने विसाल फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का जनाज़ा बरोज़े पीर बा'द नमाज़े ज़ोहर जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में हुवा और दिमश्क़ ही में "बाबुस्सग़ीर" क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया गया।[1]

1... ذیل طبقات الحفاظ للذھبی، الطبقۃ الثانیۃ والعشرون، ۵/ ۲۳۱
مقدمۃ الناشر من میزان الاعتدال، ۱/ ۱۹
تقدیم الکتاب من سیر اعلام النبلاء، الفصل الاول، ۱/ ۷۳
طبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ۹/ ۱۰۹

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें अपनी ज़ात, अपनी किताबों, रसूलों, फ़िरिश्तों और अपनी मुक़र्रर कर्दा तक़्दीर पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो हमारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप की आलो अस्ह़ाब पर ऐसी हमेशा वाली रह़मत जो हमें जन्नत में इन का पड़ोसी बना दे।

गुनाहे कबीरा की पहचान के बारे में इजमाली और तफ़्सीली त़ौर पर **किताबुल कबाइर** एक मुफ़ीद व नाफ़ेअ़ किताब है। बारगाहे इलाही में दुआ़ है कि वोह अपनी रह़मत से हमें कबीरा गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

कबीरा गुनाहों से बचने की बरकत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ نُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾

(پ۵، النساء:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कबीरा गुनाहों से बचने वाले शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाने का ज़िम्मा लिया है।

और फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

(پ۲۵، الشوریٰ: ۳۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो बड़े बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआ़फ़ कर देते हैं।

इसी त़रह़ फ़रमाता है :

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ

(پ۲۷، النجم: ۳۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह जो बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए। बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है।

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पांचों नमाज़ें और एक जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक दरमियान में होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक गुनाहे कबीरा का इर्तिकाब न किया जाए।(1)

गुनाहे कबीरा की ता'दाद

हम पर कबीरा गुनाहों से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करना लाज़िम है कि कबीरा गुनाह कौन कौन से हैं ? ताकि ब हैसिय्यते मुसलमान उन गुनाहों से बचा जा सके।

गुनाहे कबीरा की ता'दाद के बारे में उ़लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ का क़ौल है कि गुनाहे कबीरा सात हैं। इन ह़ज़रात ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से दलील ली है कि "सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो।"

(1)... مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الصلوات الخمس والجمعۃ...الخ، ص ۱۴۴، حدیث: ۲۳۳

www.dawateislami.net

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सात गुनाहों का ज़िक्र फ़रमाया : (1).....शिर्क करना (2).....जादू करना (3).....(नाहक़) किसी जान को क़त्ल करना (4).....यतीम का माल (ज़ुल्मन) खाना (5).....सूद खाना (6).....जंग के दौरान मैदान से भाग जाना (7).....पाक दामन औरत को ज़िना की तोहमत लगाना।[1]

येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मन्क़ूल है : सात के मुक़ाबले में येह गुनाह 70 के ज़ियादा क़रीब हैं।[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने सच फ़रमाया क्यूंकि मज़्कूरा हदीसे पाक में गुनाहे कबीरा की ता'दाद के बारे में कोई हस्र (या'नी हदबन्दी) नहीं है।

कबीरा गुनाह किसे कहते हैं ?

राजेह और मुदल्लल क़ौल येह है कि जो शख़्स गुनाहों में से किसी ऐसे गुनाह का इर्तिकाब करे जिस का बदला दुन्या में हद है मसलन क़त्ल, ज़िना या चोरी करे या ऐसा गुनाह करे जिस के मुतअ़ल्लिक़ आख़िरत में अ़ज़ाब या ग़ज़बे इलाही की वईद हो या उस गुनाह के मुर्तकिब पर हमारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान से ला'नत की गई हो तो वोह कबीरा गुनाह है।

इस बात को तस्लीम करने के बा वुजूद येह ज़रूर है कि बा'ज़ कबीरा गुनाह दूसरे बा'ज़ कबीरा गुनाहों के मुक़ाबले में ज़ियादा बड़े हैं। क्या आप ने मुलाहज़ा नहीं फ़रमाया कि नबिय्ये

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

2 ...تفسیر عبد الرزاق، پ۵، سورۃ النساء، تحت الآیۃ: ۳۱، ۱/ ۴۴۷، حدیث: ۵۵۵

www.dawateislami.net

पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करने को गुनाहे कबीरा में से शुमार फ़रमाया है हालांकि इस का मुर्तकिब हमेशा जहन्नम में रहेगा और उस की कभी बख़्शिश न होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ

(پ۵، النسآء: ۴۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।*

और फ़रमाता है :

اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ (پ۶، المائدۃ: ۷۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी।*

जब मुआ़मला ऐसा है तो इन मुख़्तलिफ़ अह़ादीस में तत़बीक़ देना ज़रूरी है।

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाहों के बारे में ख़बर न दूं ? येह बात आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार इरशाद फ़रमाई। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे फिर सीधे हो कर बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : "सुनो ! झूटी बात कहना (भी बड़ा गुनाह है)।" आप इस कलिमे की तकरार फ़रमाते रहे ह़त्ता कि हम ने (शफ़्क़त के बाइ़स दिल में) कहा : काश ! आप सुकूत

www.dawateislami.net

फ़रमाएं।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने झूटी बात और वालिदैन की ना फ़रमानी का सब से बड़े गुनाहों में से होना बयान फ़रमाया लेकिन सात हलाक करने वाले गुनाहों में इन का ज़िक्र नहीं है (तो मा'लूम हुवा कि गुज़श्ता ह़दीसे पाक में लफ़्ज़ सात का ज़िक्र ह़स्र व ह़दबन्दी के लिये नहीं है)।

गुनाहे कबीरा नम्बर 1

शिर्क करना[2]

शिर्क येह है कि तू किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हमसर क़रार दे ह़ालांकि उस ने तुझे पैदा किया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ तू उस के ग़ैर मसलन पथ्थर, इन्सान, चांद, सूरज, नबी, वली, जिन्न, सितारे या फ़िरिश्ते वग़ैरा की इबादत करे।

शिर्क की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ ۚ

(پ۵، النساء:۴۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।*

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۵۹، حدیث:۸۷

2 .....शिर्क के मा'ना ग़ैरे ख़ुदा को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़े इबादत जानना या'नी उलूहिय्यत में दूसरे को शरीक करना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 1/183)

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....

اِنَّهٗ مَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ الْجَنَّةَ وَ مَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ (پ۶، المائدۃ: ۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो अल्लाह ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है।

﴾3﴿.....

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۳﴾ (پ۲۱، لقمان: ۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

इस बारे में मुतअ़द्दिद आयाते मुबारका वारिद हैं। लिहाज़ा जिस शख़्स ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क किया फिर ब ह़ालते शिर्क ही मर गया तो वोह क़त्ई जहन्नमी है जैसा कि वोह शख़्स जन्नती है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया और ईमान की ह़ालत में दुन्या से रुख़्सत हुवा अगर्चे (किसी गुनाह के सबब) अ़ज़ाब दिया जाए।

शिर्क की मज़म्मत में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में न बताऊं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना सब से बड़ा गुनाह है।[1]

﴾2﴿.....''सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो।'' इन में एक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शिर्क को भी ज़िक्र फ़रमाया।[2]

और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपना दीन बदल डाला तुम उसे क़त्ल कर दो।[3]

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۵۹، حدیث: ۸۷

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

3 ...بخاری، کتاب استتابۃ المرتدین...الخ، باب حکم المرتد والمرتدۃ، ۴/ ۳۷۸، حدیث: ۶۹۲۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 2

क़त्ले नाहक़

क़त्ले नाहक़ की मज़म्मत में चार फ़रामीने बारी तआ़ला

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़त्ले नाहक़ की मज़म्मत में इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾.....

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

(پ۵، النساء:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब।

﴿2﴾.....

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

(پ۱۹، الفرقان:۶۸تا۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुर्मत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए।

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا (پ٦، المائدة: ٣٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया।

﴿4﴾.....

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُىِٕلَتْۙ(۸) بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْۚ(۹) (پ٣٠، التکویر: ٨، ٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए किस ख़ता पर मारी गई।[1]

क़त्ले नाहक़ की मज़म्मत में 15 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो। उन गुनाहों में से रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़त्ले नाहक़ को भी शुमार फ़रमाया।[2]

﴿2﴾.....दरयाफ़्त किया गया : सब से अ़ज़ीम गुनाह कौन सा है? रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तेरा किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हमसर क़रार देना हालांकि उस ने तुझे

1 ....या'नी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़्न की गई हो जैसा कि अ़रब का दस्तूर था कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे। येह सुवाल क़ातिल की तौबीख़ के लिये है ताकि वोह लड़की जवाब दे कि मैं बे गुनाह मारी गई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 30, सूरतुत्तक्वीर, तह्तुल आयत : 8, 9)

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص٦٠، حدیث: ٨٩

www.dawateislami.net

पैदा किया है। साइल ने अ़र्ज़ की : फिर कौन सा ? फ़रमाया : तेरा अपनी औलाद को इस ख़ौफ़ से मार डालना कि वोह तेरे साथ खाएगी। अ़र्ज़ की गई : फिर कौन सा ? फ़रमाया : तेरा अपने पड़ोसी की बीवी के साथ ज़िना करना।[1]

﴿3﴾.....जब दो मुसलमान अपनी तल्वारों के साथ बाहम टकराते हैं तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नमी हैं। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक तो क़ातिल है लेकिन मक़्तूल का क्या क़ुसूर है ? इरशाद फ़रमाया : वोह भी अपने मुक़ाबिल को क़त्ल करने पर ह़रीस होता है।[2]

﴿4﴾.....आदमी अपने दीन में कुशादगी व वुस्अ़त में रहता है जब तक वोह ख़ूने ह़राम से आलूदा न हो।[3]

﴿5﴾.....मेरे बा'द काफ़िर मत हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो[4]।[5]

﴿6﴾.....एक मोमिन का क़त्ल किया जाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक दुन्या के तबाह हो जाने से ज़ियादा बड़ा है।[6]

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۵۹، حدیث: ۸۶

2 ...بخاری، کتاب الایمان، باب: وان طائفتان من المؤمنین...الخ، ۱/۲۳، حدیث: ۳۱

3 ...بخاری، کتاب الدیات، باب قول اللّٰہ: ومن یقتل مؤمنا...الخ، ۴/۳۵۶، حدیث: ۶۸۶۲

4 ...بخاری، کتاب العلم، باب الانصات للعلماء، ۱/ ۶۳، حدیث: ۱۲۱

5 .....इस ह़दीसे पाक की मुख़्तलिफ़ तावीलें की गई हैं। अज़्हर क़ौल के मुत़ाबिक़ मा'ना येह है कि येह फ़े'ल या'नी एक दूसरे को क़त्ल करना कुफ़्फ़ार के अफ़्आ़ल की त़रह़ है।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب معنی قول النبی لاترجعوا بعدی کفارا...الخ، ۲/ ۵۵)

6 ...نسائی، کتاب تحریم الدم، باب تعظیم الدم، ص۶۵۲، حدیث: ۳۹۹۲

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....आदमी अपने दीन में कुशादगी व वुस्अ़त में रहता है जब तक ह़राम ख़ून को न पहुंचे (या'नी जब तक किसी को नाह़क़ क़त्ल न करे)।[1] येह बुख़ारी के अल्फ़ाज़ हैं।

﴾8﴿.....लोगों के दरमियान सब से पहले ख़ून के बारे में फ़ैसला किया जाएगा[2]।[3]

﴾9﴿.....बड़े गुनाहों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक करना, नाह़क़ क़त्ल करना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना है।[4]

﴾10﴿.....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मन्अ़ फ़रमा दिया (उस की तौबा क़बूल करने से) जिस ने किसी मुसलमान को क़त्ल किया हो। आप ने येह बात तीन बार इरशाद फ़रमाई[5]।[6]

---

1 ...بخاری، کتاب الدیات، باب قول اللہ: ومن یقتل مؤمنا...الخ، ۴/ ۳۵۶، حدیث: ۶۸۶۲

2 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 247 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी क़ियामत के दिन मुआ़मलात में सब से पहले ख़ूने नाह़क़ का फ़ैसला होगा बा'द में दूसरे फ़ैसले और इबादात में सब से पहले नमाज़ का ह़िसाब होगा बा'द में दूसरे ह़िसाबात होंगे लिहाज़ा येह ह़दीस इस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं कि क़ियामत के दिन पहले नमाज़ का ह़िसाब होगा।

3 ...بخاری، کتاب الدیات، باب قول اللہ: ومن یقتل مؤمنا...الخ، ۴/ ۳۵۷، حدیث: ۶۸۶۴

4 ...بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب الیمین الغموس، ۴/ ۲۹۵، حدیث: ۶۶۷۵

5 ...مسند احمد، مسند الشامیین، حدیث عقبة بن مالك، ۶/ ۵۱، حدیث: ۱۷۰۰۵

6 .....या'नी जिस ने जुल्मन किसी मुसलमान को क़त्ल किया हो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की तौबा क़बूल कर लेने का तीन मरतबा सुवाल किया, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस से मन्अ़ फ़रमा दिया। येह कलाम ब तौ़रे ज़ज्रो तौबीख़ है या इस से मुराद वोह शख़्स है जो मुसलमान के क़त्ले नाह़क़ को ह़लाल जाने। (فیض القدیر ۲/ ۲۵۱، تحت الحدیث: ۱۶۵۹)

www.dawateislami.net

﴾11﴿.....जो जान भी ज़ुल्मन क़त्ल की जाती है ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام के पहले बेटे (क़ाबील) पर उस के ख़ून में से ह़िस्सा है क्यूंकि वोह पहला शख़्स है जिस ने क़त्ल ईजाद किया।(1) येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾12﴿.....जो किसी अ़ह्दो पैमान वाले को(2) क़त्ल कर दे वोह जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूंघ सकेगा ह़ालांकि उस की ख़ुश्बू 40 साल की राह से मह़सूस की जाएगी।(3)

इसे इमाम बुख़ारी व इमाम नसाई عَلَیْہِمَاالرَّحْمَہ ने रिवायत किया है।

﴾13﴿.....सुनो ! जिस ने ऐसे अ़ह्दो पैमान वाले को क़त्ल किया जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा था तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे को ह़क़ीर समझा और ऐसा शख़्स जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा और बिलाशुबा उस की ख़ुश्बू 40 साल की मुसाफ़त से मह़सूस की जाएगी।(4)

इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़दीसे सह़ीह़ क़रार दिया है।

---

❶... بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب خلق آدم وذریتہ، ۲/ ۴۱۳، حدیث: ۳۳۳۵

❷.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 250 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : अ़ह्दो पैमान वाले काफ़िर से मुराद या ज़िम्मी कुफ़्फ़ार हैं, मुसलमानों की रिआ़या और मुस्तामिन जो कुछ मुद्दत के लिये अमान ले कर हमारे मुल्क में आईं और मुआ़हिद जिन से हमारी सुल्ह़ हो उन में से किसी को बिला वज्ह क़त्ल करना दुरुस्त नहीं, हां अगर वोह कोई ऐसी ह़रकत करें जिस से उन का क़त्ल दुरुस्त हो जाए तो क़त्ल किये जाएं।

❸... بخاری، کتاب الجزیۃ والموادعۃ، باب اثم من قتل معاھدا بغیر جرم، ۲/ ۳۶۵، حدیث: ۳۱۶۶

❹... ترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فیمن یقتل نفسا معاھدۃ، ۳/ ۱۰۲، حدیث: ۱۴۰۸

www.dawateislami.net

﴾14﴿.....जिस शख़्स ने आधे कलिमे[1] के ज़रीए भी किसी मुसलमान के क़त्ल पर मदद की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ालत में मिलेगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा कि येह शख़्स रह़मते इलाही से मायूस है।[2] इस ह़दीसे पाक को इमाम अह़मद और इमाम इब्ने माजा عَلَيْهِمَاالرَّحْمَه ने रिवायत किया है।

﴾15﴿.....उम्मीद है कि हर गुनाह को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्श देगा मगर वोह शख़्स जो कुफ़्र की मौत मरा हो या जिस शख़्स ने जान बूझ कर किसी मुसलमान को (नाह़क़) क़त्ल किया हो।[3][4]

इस ह़दीसे पाक को इमाम नसाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने रिवायत किया है।

1.....या'नी जिस शख़्स ने किसी से "اُقْتُلْ" (क़त्ल कर दो) अम्र का आधा कलिमा "اُقْ" भी कह दिया और क़ातिल ने उस मुसलमान को क़त्ल कर दिया तो मरते वक़्त या क़ब्र में या क़ियामत में उस की पेशानी पर लिखा होगा कि येह शख़्स **अल्लाह** की रह़मत से मायूस है, इस त़रह़ तमाम क़ियामत में बदनाम हो जाएगा, अगर उस शख़्स ने ह़लाल जान कर क़त्ल किया था तो येह लफ़्ज़ اٰيِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِ الله बिल्कुल ज़ाहिर है कि येह क़ातिल काफ़िर हो गया और काफ़िर रब तआ़ला की रह़मत से मायूस और अगर नफ़्सानी वज्ह से मारा था तो मायूस से मुराद उन्हें रह़मत से मायूस (मायूसी) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/266, मुल्तक़त़न)

2... ابن ماجه، كتاب الديات، باب التغليظ فى قتل مسلم ظلما، ٣/ ٢٦٢، حديث: ٢٦٢٠

3... نسائى، كتاب تحريم الدم، باب:١، ص ٦٥٢، حديث: ٣٩٩٠

4.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5 सफ़ह़ा 259 पर इरशाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस का मत़लब येह है कि जो कोई किसी मुसलमान को नाह़क़ क़त्ल करे क़त्ल को ह़लाल जान कर या इस लिये क़त्ल करे कि वोह मोमिन क्यूं हुवा ? वोह दोज़ख़ी दाइमी है, लाइक़े बख़्शिश नहीं कि अब येह क़ातिल काफ़िर हो गया और काफ़िर की बख़्शिश नहीं या येह फ़रमान डराने धमकाने के लिये है कि येह जुर्म इसी लाइक़ था कि इस का मुर्तकिब हमेशा दोज़ख़ में रहता है और इस का गुनाह बख़्शा न जाता।

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 3

जादू करना

जादू की मज़म्मत में दो फ़रामीने बारी तआ़ला

ऐन मुमकिन है कि जादूगर कुफ़्र में मुब्तला हो जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾1﴿.....

وَلٰکِنَّ الشَّیٰطِیْنَ کَفَرُوْا یُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ (پ۱، البقرۃ:۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां शैत़ान काफ़िर हुवे लोगों को जादू सिखाते हैं।

शैत़ान मर्दूद की इन्सानों को जादू सिखाने से ग़र्ज़ उन्हें शिर्क में मुब्तला करना है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हारूत व मारूत[1] के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है :

﴾2﴿.....

وَمَا یُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰی یَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَیَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا یُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَیْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّیْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़माइश हैं तू अपना ईमान न खो तो उन से सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औ़रत में और उस से ज़रर

1.....हारूत और मारूत दो फ़िरिश्ते हैं : जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ की आज़माइश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया कि जो जादू सीखना चाहे उसे नसीहत करें कि اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ हम तो आज़माइश ही के लिये मुक़र्रर हुवे हैं तू कुफ़्र न कर। और जो इन की बात न माने वोह अपने पाउं पर चल के ख़ुद जहन्नम में जाए, येह फ़िरिश्ते अगर उसे जादू सिखाते हैं तो वोह फ़रमां बरदारी कर रहे हैं न कि ना फ़रमानी कर रहे हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 26/397, मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ (پ۱، البقرۃ:۱۰۲)

नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ़ न देगा और बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।

आप बहुत सारे गुमराह लोगों को देखेंगे कि वोह जादू सीखते हैं और उसे फ़क़त हराम समझते हैं, इस के कुफ़्र[1] होने का उन्हें तसव्वुर नहीं लिहाज़ा वोह इल्मे सीमया[2] सीखने और इस पर अ़मल करने में लग जाते हैं हालांकि येह ख़ालिस जादू है। यूं ही मर्द को औ़रत के पास जाने से रोक देने का अ़मल भी जादू है। इसी त़रह़ जादू के कलिमात के ज़रीए़ मियां बीवी का एक दूसरे से महब्बत करने लगना या मियां बीवी का एक दूसरे से नफ़रत करना भी है। येह कलिमात ऐसे होते हैं जिन के मआ़नी मा'लूम नहीं होते और इन में अक्सर अ़मलिय्यात शिर्क और गुमराह कुन कलिमात पर मब्नी होते हैं।

जादूगर की सज़ा

जादूगर की सज़ा क़त्ल है क्यूंकि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र या कुफ़्र से मुशाबहत इख़्तियार की।

---

1 .....बा'ज़ जादू ख़ुद कुफ़्र हैं और बा'ज़ में कुफ़्रिय्या शर्तें हैं बा'ज़ कुफ़्र तो नहीं मगर हराम हैं। (तफ़्सीरे नईमी, 1/519)

2 .....आज कल इस लफ़्ज़ का इत़्लाक़ उस इल्मे सह़र पर होता है जिसे "सह़रे त़बीई़" कहते हैं। फ़लासफ़ा इसे شَعْوَذَہ और شُعْبَذَہ (शो'बदा) कहते हैं।
(उर्दू दाइरए मआ़रुफ़े इस्लामिय्या, 14/315)

www.dawateislami.net

जादू की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.....''सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो। इन में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जादू को भी ज़िक्र किया।(1)

लिहाज़ा बन्दे को अपने रब तआ़ला से डरना चाहिये और उस चीज़ में मश्ग़ूल नहीं होना चाहिये जिस में दुन्या व आख़िरत का ख़सारा है।

﴾2﴿.....जादूगर की सज़ा उसे तल्वार से मार देना है।

दुरुस्त येह है कि येह रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दुब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना बजाला बिन अ़ब्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे पास ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मक्तूब उन की शहादत से एक साल क़ब्ल आया जिस में येह तह़रीर था कि ''हर जादूगर और जादूगरनी को क़त्ल कर दो।''(3)

﴾3﴿.....तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) शराब का आ़दी (2) क़त्ए़ रेह़मी करने वाला और (3) जादू की तस्दीक़ करने वाला(4)।(5) इस ह़दीस को इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है।

---

1 ... بخاری کتاب الوصایا، باب قول اللہ: ان الذین یاکلون...الخ، ۲/ ۲۴۲، حدیث: ۲۷۶۶

2 ... ترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء فی حد الساحر، ۳/ ۱۳۹، حدیث: ۱۴۶۵

3 ... ابو داود، کتاب الخراج...الخ، باب فی اخذ الجزیۃ من المجوس، ۳/ ۲۲۶، حدیث: ۳۰۴۳

4 .....जादू की तस्दीक़ करने वाले से मुराद वोह शख़्स है जो जादू की ज़ाती तासीर रखने का क़ाइल हो। (مرقاۃ المفاتیح، ۷/ ۲۴۲، تحت الحدیث: ۳۶۵۶)

5 ... مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث ابی موسی الاشعری، ۷/ ۱۳۹، حدیث: ۱۹۵۸۶

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....दम[1], तमीमा और तौला[2] शिर्क है ।[3]

इसे इमाम अह़मद व इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا ने रिवायत किया है ।

तौला : जादू की एक क़िस्म है । इस में बीवी की मह़ब्बत, शोहर के दिल में डालने का अ़मल किया जाता है ।[4]

तमीमा : नज़रे बद दूर करने के ता'वीज़ को कहते हैं ।

1.....ऐसे ता'वीज़ात इस्ति'माल करना जाइज़ है जो आयाते क़ुरआनिया, अस्माए इलाहिया (अल्लाह तआ़ला के नामों) या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हों, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने बालिग़ (बड़े) बच्चों को सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाते : "بِسْمِ اللهِ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنَ" और उन में से जो ना बालिग़ (छोटे) होते और याद न कर पाते तो मज़कूरा कलिमात लिख कर उन का ता'वीज़ बच्चों के गले में डाल देते ।

(مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو، ۲/ ۶۰۰، حدیث: ۶۷۰۸)

गले में ता'वीज़ लटकाना जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ जाइज़ हो या'नी आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिया या अदइया (दुआ़ओं) से ता'वीज़ किया गया हो और बा'ज़ ह़दीसों में जो मुमानअ़त आई है उस से मुराद वोह ता'वीज़ हैं जो नाजाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों, जो ज़मानए जाहिलिय्यत में किये जाते थे, इसी त़रह़ ता'वीज़ात और आयात व अह़ादीस व अदइया रिकाबी में लिख कर मरीज़ को ब निय्यते शिफ़ा पिलाना भी जाइज़ है । जुनुब व ह़ाइज़ व नफ़्सा भी ता'वीज़ात को गले में पहन सकते हैं, बाज़ू पर बांध सकते हैं जब कि ता'वीज़ात ग़िलाफ़ में हों । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3 / 419)

(यहां) दम से मुराद वोह दम है जिस में मुश्रिकाना अल्फ़ाज़ और बुतों से तवस्सुल होता है । (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 204)

2.....तमीमा व तौला को शिर्क कहना इस वज्ह से है कि ज़मानए रिसालत में येह ज़मानए जाहिलिय्यत ही की त़रह़ शिर्किया अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल थे या इन्हें शिर्क कहने की वज्ह येह है कि जो इन के मुतअ़ल्लिक़ ज़ाती तासीर का ए'तिक़ाद रखेगा तो येह बात उसे शिर्क की त़रफ़ ले जाएगी । (فیض القدیر، ۲/ ۴۳۴)

3... ابو داود، کتاب الطب، باب فی تعلیق التمائم، ۴/ ۱۳، حدیث: ۳۸۸۳

4.....अगर आयाते क़ुरआनिया या मासूरा दुआ़ओं से बीवी की मह़ब्बत शोहर के दिल में डालने के लिये ता'वीज़ किया जाए तो बिल्कुल जाइज़ है । (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, 6/204)

www.dawateislami.net

जाहिल को समझाने का अह्सन त़रीक़ा

जान लीजिये कि इन में से अक्सर गुनाह बल्कि बा'ज़ गुनाहों को छोड़ कर उ़मूमन तमाम ही गुनाह ऐसे हैं जिन की हुरमत से उम्मत की एक बड़ी ता'दाद ना वाक़िफ़ व जाहिल है। इस बारे में ज़ज्रो तौबीख़ और वई़द का उन्हें इ़ल्म नहीं है। इस क़िस्म के लोगों के बारे में कुछ तफ़्सील है, आ़लिम को चाहिये कि जाहिल पर कोई हुक्म लगाने में जल्दी न करे बल्कि उस के साथ नर्मी से पेश आए और जो इ़ल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे सिखाया है उस में से उसे भी सिखाए बिल ख़ुसूस इस सूरत में जब कि उसे जाहिलिय्यत के माह़ोल को छोड़े थोड़ा अ़र्सा हुवा हो और वोह काफ़िरों के किसी दूर दराज़ मुल्क में पैदा हुवा हो फिर उसे क़ैद कर के इस्लाम की सरज़मीन तक लाया गया हो। ऐसा शख़्स तुर्की काफ़िर या कुर्जी मुशरिक भी हो सकता है जो अ़रबी न जानता हो और उसे किसी ऐसे तुर्की रईस ने ख़रीद लिया हो जिसे कुछ इ़ल्मो फ़ेह्म न हो तो ऐसे शख़्स को भरपूर कोशिश कर के कलिमए शहादत पढ़ाया जाए। पस अगर वोह काफ़िर कुछ दिनों की मेह्नत के बा'द अ़रबी समझ ले और कलिमए शहादत का मा'ना जान जाए तो येह बहुत ही अच्छा है। इस के बा'द कभी वोह नमाज़ पढ़ेगा कभी नहीं और ऐसे शख़्स को सूरए फ़ातिह़ा की तल्क़ीन भी ब तदरीज होगी फिर येह कि उस का उस्ताद कुछ दीनी समझ बूझ रखता हो वरना अगर उस का उस्ताद ख़ुद ही फ़ासिक़ो फ़ाजिर होगा तो उस मिस्कीन को इस्लामी शरीअ़त, गुनाहे कबीरा और इस से इजतिनाब, वाजिबात

www.dawateislami.net

और उन की अदाएगी की मा'रिफ़त कहां से हासिल होगी ? अलबत्ता अगर ऐसा शख़्स गुनाहे कबीरा की हलाकत ख़ेज़ियों को जान कर उन से डरे और फ़र्ज़ अरकान की मा'रिफ़त और उन का ए'तिक़ाद रखे तो वोह ख़ुश नसीब है लेकिन ऐसे शख़्स को इन उ़लूम की मा'रिफ़त होना एक नादिर अम्र है। लिहाज़ा बन्दे को आ़फ़िय्यत हासिल होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द बजा लाना चाहिये।

एक सुवाल और इस का जवाब

अगर येह कहा जाए कि येह तो उस की अपनी ज़ियादती है क्यूंकि जिन उमूर का सीखना उस पर वाजिब है उस शख़्स ने उस के बारे में अहले इल्म से सुवाल ही नहीं किया।

इस का जवाब येह है कि येह सुवालात तो उस के ज़ेहन में गर्दिश कर रहे थे लेकिन उस को येह मा'लूम न था कि इन सुवालात के जवाबात उ़लमा से हासिल करना उस पर वाजिब है। पस जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नूर न बनाए उस को कोई नूर हासिल नहीं हो सकता और बन्दा इल्म होने और हुज्जत के क़ाइम हो जाने के बा'द ही गुनाहगार होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर लुत्फ़ो करम फ़रमाने वाला है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें।

जाहिल कब तक मा'ज़ूर है ?

अकाबिर सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हबशा में मुक़ीम थे, इस दौरान रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अश्या के वुजूब और

www.dawateislami.net

हुरमत से मुतअ़ल्लिक़ वह्य नाज़िल होती रही, अश्याए मुह़र्रमा की इत्तिलाअ़ उन्हें चन्द माह के बा'द हुई थी पस वोह ह़ज़रात उन महीनों में इ़ल्म न होने की वज्ह से उस वक़्त तक मा'ज़ूर थे जब तक उन्हें नस्स न पहुंची थी। यूंही हर जाहिल उस वक़्त तक मा'ज़ूर समझा जाएगा जब तक वोह नस्स न सुन ले।[1] واللہ تعالیٰ اعلم

गुनाहे कबीरा नम्बर 4

नमाज़ छोड़ देना

तर्के नमाज़ की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

(پ۱۶، مریم: ۵۹، ۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे तो अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे मगर जो ताइब हुवे।

---

1 .....दारुल ह़र्ब में मुसलमान जो कि हिजरत कर के दारुल इस्लाम न आया हो उस की शरई मसाइल में जहालत उ़ज़्र है कि इस उ़ज़्र की बिना पर वहां उस के लिये लाज़िम न होंगे क्यूंकि येह उस की त़रफ़ से कोताही नहीं है। यूंही जब पहला ख़ित़ाब नाज़िल हुवा और दारुल इस्लाम में रहने वाले को न पहुंचा तो वोह भी मा'ज़ूर क़रार पाएगा लेकिन वोह ख़ित़ाब जब दारुल इस्लाम में फैल जाए और तब्लीग़ ताम हो जाए इस के बा'द जो जाहिल रहे तो येह उस की कोताही शुमार होगी तो वोह मा'ज़ूर न क़रार पाएगा जैसा कि कोई शख़्स आबादी में जहां पानी मौजूद है तो पानी त़लब या तलाश किये बिग़ैर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ न होगी। (फ़तावा रज़विय्या, 11/228)

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿۷﴾ (پ۳۰، الماعون: ۴تا۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं वोह जो दिखावा करते हैं और बरतने की चीज़ मांगे नहीं देते।

﴾3﴿.....

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴۳﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۙ﴿۴۴﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۙ﴿۴۵﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ﴿۴۶﴾ حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿۴۷﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿۴۸﴾

(پ۲۹، المدثر: ۴۲،۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई ? वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे और हम इन्साफ़ के दिन को झुटलाते रहे यहां तक कि हमें मौत आई तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी।

नमाज़ तर्क व क़ज़ा करने की मज़म्मत में रिवायात

﴾1﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हमारे और कुफ़्फ़ार के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ है तो जिस ने नमाज़ तर्क कर दी, बिलाशुबा उस ने कुफ़्र किया।(1)(2)

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیہا، باب ماجاء فیمن ترک الصلاۃ، ۱/۵۶۴، حدیث: ۱۰۷۹

2 .....हमारे अइम्मए ह़नफ़िय्या तारिके नमाज़ को सख़्त फ़ाजिर जानते हैं मगर दाइरए इस्लाम से ख़ारिज नहीं कहते (तारिके नमाज़ अगर) फ़र्ज़िय्यते नमाज़ का इन्कार करे या इसे हल्का और बे क़द्र जाने या इस का तर्क ह़लाल (जाइज़) समझे तो काफ़िर है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/105 ता 106 मुल्तक़तन)

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....जिस की नमाज़े अ़स्र फ़ौत हो गई, उस के अ़मल ज़ब्त़ हो गए ।[1]।[2]

﴾3﴿.....रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बन्दे और शिर्क के दरमियान (फ़र्क़) नमाज़ छोड़ देना है[3]।[4]

﴾4﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जिस ने जान बूझ कर नमाज़ को तर्क किया तो बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से बरी है[5]।[6]

इस रिवायत को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मक्हूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत किया जब कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन का ज़माना नहीं पाया ।

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने नमाज़ ज़ाएअ़ की उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं ।

1.....ज़ब्ती़ से मुराद उस काम की बरकत का ख़त्म होना है या येह मत़लब है कि जो अ़स्र छोड़ने का आ़दी हो जाए उस के लिये अन्देशा है कि वोह काफ़िर हो कर मरे जिस से आ'माल ज़ब्त़ हो जाएं इस का मत़लब येह नहीं कि अ़स्र छोड़ना कुफ़्र व इर्तिदाद है । (मिरआतुल मनाजीह़, 1 /359)

2...بخاری، کتاب مواقیت الصلوٰۃ، باب من ترک العصر، ۱/ ۲۰۳، حدیث: ۵۵۳

3.....इस ह़दीस का मत़लब येह है कि बे नमाज़ी क़रीबे कुफ़्र है या उस पर कुफ़्र पर मरने का अन्देशा है या तर्के नमाज़ से मुराद नमाज़ का इन्कार है या'नी नमाज़ का मुन्किर काफ़िर है । (मिरआतुल मनाजीह़, 1/342)

4...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر علی من ترك الصلاة، ص۵۷، حدیث: ۸۲

5.....या'नी बे नमाज़ी अल्लाह की अम्न (अमान) में नहीं रहता । नमाज़ की बरकत से इन्सान दुन्या में आफ़तों से, मरते वक़्त ख़राबिये ख़ातिमा से, क़ब्र के इम्तिह़ान) में फ़ेल होने से, ह़श्र में मुसीबतों से بفضلہٖ تعالٰی अम्न में रहता है ।
(मिरआतुल मनाजीह़, 1 /80)

6...معجم الکبیر، ۱۲/ ۱۹۵، حدیث: ۱۳۰۲۳

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : जिस ने नमाज़ को तर्क किया बिलाशुबा उस ने कुफ़्र किया ।

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तयानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से भी येही मन्क़ूल है ।

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आ'माल में से नमाज़ छोड़ने के इलावा किसी अ़मल को कुफ़्र ख़याल नहीं करते थे ।

﴾9﴿.....इब्ने ह़ज़्म का क़ौल है : शिर्क के बा'द नमाज़ को वक़्त पर न पढ़ने और किसी मोमिन को नाह़क़ क़त्ल करने से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं ।

आ'माल में सब से पहला सुवाल

﴾10﴿.....रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में सब से पहले नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा । अगर येह दुरुस्त हुई तो उस ने फ़लाह़ व कामयाबी पाई और इस में कमी हुई तो वोह ना मुराद हुवा और उस ने नुक़्सान उठाया ।"[1]

इस रिवायत को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ह़दीसे ह़सन क़रार दिया है ।

﴾11﴿.....सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूं यहां तक कि वोह येह गवाही दें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल

[1] ...ترمذی، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء ان اول مایحاسب بہ...الخ، ۱/ ۴۲۲، حدیث: ۴۱۳

www.dawateislami.net

हैं, नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें। जब येह कर लेंगे मुझ से अपने ख़ून व माल बचा लेंगे सिवाए इस्लामी ह़क़ के और उन का ह़िसाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे है[1]।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾12﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरिये ! रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तेरी हलाकत हो ! क्या मैं अहले ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सब से ज़ियादा डरने का ह़क़दार नहीं हूं ? ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं इस शख़्स की गर्दन न मार दूं ? येह सुन कर रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं कि हो सकता है येह नमाज़ पढ़ता हो।[3] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ ह़श्र

﴾13﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद अपनी "मुस्नद" में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो नमाज़ की ह़िफ़ाज़त नहीं करेगा तो नमाज़ उस के लिये क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात का बाइ़स नहीं होगी

---

1 .....या'नी अगर कोई ज़बानी कलिमा ज़ाहिरी नमाज़ व ज़कात अदा करे तो हम उस पर जिहाद न करेंगे अगर मुनाफ़क़त से येह काम करता है तो रब عَزَّوَجَلَّ उसे सज़ा देगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/43)

2 ... بخاری، کتاب الایمان، باب فان تابوا واقاموا الصلاۃ...الخ، ۱/ ۲۰، حدیث: ۲۵

3 ... بخاری، کتاب المغازی باب بعث علی ابن طالب...الخ، ۳/ ۱۲۳، حدیث: ۴۳۵۱

www.dawateislami.net

और वोह बरोज़े क़ियामत क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा[1]।[2]

जहन्नम की आग किस पर हराम है ?

﴿14﴾.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स येह गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम की आग को ह़राम कर देता है।

येह रिवायात तारिके नमाज़ के कुफ़्र की त़रफ़ इशारा कर रही हैं ह़ालांकि वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ने वाला और किसी भी एक नमाज़ को छोड़ने वाला शख़्स कबीरा का मुर्तकिब है और ज़िना करने और चोरी करने वाले की त़रह़ है क्यूंकि किसी भी एक नमाज़ को तर्क करना या इसे क़ज़ा करना कबीरा गुनाह है और जो येह फ़े'ल बार बार करे वोह अहले कबाइर में से है मगर येह कि वोह तौबा कर ले लिहाज़ा जो नमाज़ तर्क करने पर इसरार करे वोह नुक़्सान उठाने वाले बद बख़्त मुजरिमों में से है (काफ़िर नहीं)।

---

1 .....बा'ज़ उ़लमा फ़रमाते हैं : नमाज़ तर्क करने वाला इन चार (फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़) के साथ इस लिये उठाया जाएगा कि वोह अपने माल, हुक्मरानी, वज़ारत और तिजारत के बाइ़स नमाज़ को छोड़ेगा। अगर उस ने अपने माल में मसरूफ़ होने के सबब नमाज़ छोड़ी तो उस का ह़श्र क़ारून के साथ होगा, हुक्मरानी के सबब नमाज़ छोड़ी तो उस का ह़श्र फ़िरऔ़न के साथ होगा, वज़ारत के सबब नमाज़ छोड़ी तो उस का ह़श्र (फ़िरऔ़न के वज़ीर) हामान के साथ होगा और अगर तिजारत के सबब नमाज़ छोड़ी तो उस का ह़श्र मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة السابعة والسبعون: تعمد تاخير الصّلاة...الخ، ۱/ ۲۸۸)

2 ... مسند احمد، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۷۴، حدیث: ۶۵۸۷

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 5

ज़कात न देना

ज़कात न देने की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....Allah عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿۶﴾ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۷﴾ (پ۲۴، حم السجدۃ: ۶، ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़राबी है शिर्क वालों को वोह जो ज़कात नहीं देते और वोह आख़िरत के मुन्किर हैं।

﴾2﴿.....

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾

(پ۱۰، التوبۃ: ۳۴، ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे Allah की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दाग़ेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा उस जोड़ने का।

ज़कात न देने की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.....ऊंट, गाए और बकरियों का जो मालिक उन की ज़कात अदा नहीं करेगा उसे क़ियामत के दिन एक चटयल मैदान में लिटाया जाएगा जहां येह चोपाए उसे अपने सींगों से मारेंगे और अपने खुरों से रौंदेंगे जब उस पर उन में से आख़िरी जानवर

www.dawateislami.net

गुज़र जाएगा तो दोबारा पहले गुज़रने वाला जानवर आ जाएगा। येह उस दिन होता रहेगा जिस की मिक़्दार 50 हज़ार बरस है ह़त्ता कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाए तो येह अपना रास्ता जन्नत या दोज़ख़ की त़रफ़ देखे और जो ख़ज़ाने का मालिक अपने ख़ज़ाने की ज़कात अदा नहीं करेगा बरोज़े क़ियामत उस के लिये उस के ख़ज़ाने को गंजे सांप की सूरत में कर के उस पर मुसल्लत़ कर दिया जाएगा।[1]

बिलाशुबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मानेईने ज़कात से जिहाद किया और इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! अगर वोह लोग मुझ से बकरी के बच्चे को भी रोकेंगे जो वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अदा किया करते थे तो उस रोकने के सबब मैं उन से जिहाद करूंगा।[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا لَّهُمْؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْؕ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ وَ لِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ(۱۸۰)

(پ۴، اٰل عمرٰن: ۱۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** *ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का त़ौक़ होगा और* **अल्लाह** *ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और* **अल्लाह** *तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।*

---

1 ...مسلم، کتاب الزکوۃ، باب اثم مانع الزکاۃ، ص۴۹۴، حدیث: ۹۸۸

2 ...بخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، ۱/ ۴۷۳، حدیث: ۱۴۰۰

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....जिन्हों ने ज़कात को रोक लिया था रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों के हक़ में इरशाद फ़रमाया : जिस ने ज़कात को रोका हम उस से ज़कात भी लेंगे और उस के निस्फ़ ऊंट[1] भी और येह हमारे रब عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा उमूर में से एक वाजिब है ।[2]

इस हदीसे पाक को इमाम अबू दावूद व इमाम नसाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا ने हज़रते सय्यिदुना बहज़ बिन हकीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّحِیْم से इन के दादा के हवाले से रिवायत किया ।

﴾3﴿.....पहले तीन अश्ख़ास जो जहन्नम में दाख़िल होंगे वोह येह हैं : (1) (ज़बरदस्ती) मुसल्लत होने वाला अमीर (2) वोह मालदार शख़्स जो अपने माल के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हक़ अदा न करता हो और (3) मुतकब्बिर फ़क़ीर ।[3]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तुम्हें नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया गया है तो जो ज़कात अदा नहीं करता उस की कोई नमाज़ नहीं है ।[4]

---

1 .....इब्तिदाए इस्लाम में ज़कात न देने वाले से ज़कात भी ली जाती थी और बतौ़रे ता'ज़ीर निस्फ़ माल भी फिर निस्फ़ माल लेने का हुक्म मन्सूख़ हो गया । (عمدۃ القاری، ۷/ ۵۷۰، تحت الحدیث: ۱۸۶۷)

2 ... نسائی، کتاب الزکاۃ، باب سقوط الزکاۃ عن الابل... الخ، ص ۴۰۲، حدیث: ۲۴۴۶

3 ... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب فضل الجہاد، باب ماذکر فی فضل الجہاد... الخ، ۴/ ۵۶۶، حدیث: ۳۳

4 ... معجم الکبیر، ۱۰/ ۱۰۳، حدیث: ۱۰۰۹۵

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 6

वालिदैन की ना फ़रमानी करना

वालिदैन की ना फ़रमानी की मज़म्मत में दो फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾ وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا ﴿۲۴﴾

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۲۳، ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हूं (उफ़ तक) न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला।

﴾2﴿.....

وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ حُسْنًاؕ

(پ۲۰، العنکبوت: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की।

वालिदैन की ना फ़रमानी की मज़म्मत में 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें बड़े कबीरा गुनाहों के बारे में ख़बर न दूं ? फिर

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन गुनाहों में वालिदैन की ना फ़रमानी को भी ज़िक्र फ़रमाया ।(1)

﴿2﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वालिद की रिज़ा में है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वालिद की नाराज़ी में है ।(2) येह ह़दीस सह़ीह़ है ।

बाप जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है

﴿3﴾.....बाप जन्नत के दरवाज़ों में से दरमियानी दरवाज़ा है अगर तू चाहे तो उस की ह़िफ़ाज़त कर और अगर चाहे तो उसे ज़ाएअ़ कर ।(3)

इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने सह़ीह़ क़रार दिया है ।

﴿4﴾.....जन्नत माओं के क़दमों तले है ।(4)

﴿5﴾.....बारगाहे रिसालत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद करने के लिये आप से इजाज़त त़लब कर रहा था । रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! इरशाद फ़रमाया : उन दोनों की ख़िदमत की कोशिश कर ।(5)

﴿6﴾.....तेरे हुस्ने सुलूक की ज़ियादा मुस्तह़िक़ तेरी मां, तेरा बाप, तेरी बहन और तेरा भाई है फिर जो रिश्ते में जितना क़रीब हो उस का मर्तबा है ।(6)

---

1 ... مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرھا، ص۵۹، حدیث: ۸۷

2 ... ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب: ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین، ۳/ ۳۶۰، حدیث: ۱۹۰۷

3 ... ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب: ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین، ۳/ ۳۵۹، حدیث: ۱۹۰۶

4 ... مسند الشھاب، الجنۃ تحت اقدام الامھات، حدیث: ۱۱۹، ۱/ ۱۰۲

5 ... بخاری، کتاب الجھاد والسیر باب الجھاد باذن الابوین، ۲/ ۳۱۰، حدیث: ۳۰۰۴

6 ... نسائی، کتاب الزکاۃ، باب ایھما الید العلیا؟، ص۴۱۶، حدیث: ۲۵۲۹

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....वालिदैन का ना फ़रमान, एहसान जताने वाला, शराब का आ़दी[1] और जादू की तस्दीक़ करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा[2]।[3]

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : एक आ'राबी ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कौन सा है ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक करना । उस ने फिर अ़र्ज़ की : फिर कौन सा ? इरशाद फ़रमाया : वालिदैन की ना फ़रमानी करना । अ़र्ज़ की : फिर कौन सा गुनाह बड़ा है ? इरशाद फ़रमाया : झूटी क़सम खाना ।[4]

﴾9﴿.....वालिदैन का ना फ़रमान और तक़दीर को झुटलाने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा ।[5]

---

1 ... نسائی، کتاب الاشربۃ، الروایۃ فی المدمنین فی الخمر، ص۸۹۵، حدیث: ۵۶۸۳

2 .....कुफ़्रो शिर्क के मा सिवा जिन गुनाहों के मुर्तकिबीन के बारे में जन्नत में दाख़िल न होने की अहादीसे मुबारका में वईद आई है उस की मुख़्तलिफ़ तावीलें की गई हैं, अगर इस गुनाह की हुरमत क़तई हो तो इस सूरत में इन को हलाल जानने वाले के बारे में येह अहादीसे मुबारका अपने ज़ाहिर पर होंगी कि ऐसे लोग अस्लन कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे और अगर गुनाह का मुर्तकिब इसे हराम जानने के बा वुजूद करे तो इस सूरत में या तो मुराद येह है कि वोह इब्तिदाअन जन्नत में दाख़िल नहीं होगा बल्कि अपने गुनाहों की सज़ा भुगत कर या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमाने की सूरत में बे सज़ा जन्नत में दाख़िल होगा । एक तावील येह है कि वोह ख़ास उस जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे जो इन गुनाहों से एहतिराज़ बरतने वाले के लिये तय्यार की गई हैं । एक तावील येह है कि इन गुनाहों का इरतिकाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़बनाक करता है और इन गुनाहों की नुहूसत बुरे ख़ातिमे का सबब हो सकती है, जिस की पादाश में जन्नत का दाख़िला हमेशा के लिये हराम हो जाता है । [فیض القدیر، ۶/ ۵۸۰، تحت الحدیث: ۹۹۲۲]

3 ... مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/ ۳۰، حدیث: ۱۱۱۰۷

4 ... بخاری، کتاب استتابۃ المرتدین... الخ، باب اثم من اشرک باللہ... الخ، ۴/ ۳۷۷، حدیث: ۶۹۲۰

5 ... مسند احمد، ومن حدیث ابی الدرداء عویمر، ۱۰/ ۴۱۶، حدیث: ۲۷۵۵۴

www.dawateislami.net

﴾10﴿.....एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं, रमज़ान के रोज़े रखूं, ज़कात अदा करूं नीज़ बैतुल्लाह का ह़ज करूं तो मेरे लिये क्या जज़ा होगी ? इरशाद फ़रमाया : जो येह काम अन्जाम देगा वोह अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिह़ीन के साथ होगा मगर येह कि वोह वालिदैन का ना फ़रमान हो (तो वोह इस सआ़दत से मह़रूम रहेगा) ।[1]

वालिदैन की ना फ़रमानी की सज़ा जल्द मिलती है

﴾11﴿.....तमाम गुनाहों में से जिस गुनाह की सज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता है क़ियामत तक मुअख़्ख़र फ़रमा देता है सिवाए वालिदैन की ना फ़रमानी के, कि इस की सज़ा वोह जल्द देता है ।[2]

﴾12﴿.....बेटा अपने बाप का बदला नहीं चुका सकता मगर येह कि वोह अपने बाप को ममलूक (ग़ुलाम) पाए तो उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दे[3]।[4]

﴾13﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के ना फ़रमान पर ला'नत फ़रमाई है ।[5]

﴾14﴿.....ख़ाला मां के मर्तबे में है ।[6]

इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने सह़ीह़ क़रार दिया है ।

---

1 .. غاية المقصد فی زوائد المسند، کتاب الصوم، باب: ۳، ۳/ ۹۳، حدیث: ۲۸۲۲

2 .. شعب الایمان: باب فی بر الوالدین، فصل فی عقوق الوالدین... الخ، ۶/ ۱۹۷، حدیث: ۷۸۸۹

3 .....मत़लब येह है कि बेटा अपने बाप की कितनी ही ख़िदमत करे मगर उस का ह़क़ अदा नहीं कर सकता । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/216)

4 .. مسلم، کتاب العتق، باب فضل عتق الوالد، ص ۸۱۲، حدیث: ۱۵۱۰

5 .. مستدرک حاکم، کتاب البر والصلة، باب لعن اللہ العاق... الخ، ۵/ ۲۱۲، حدیث: ۷۳۳۶

6 ... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی بر الخالة، ۳/ ۳۶۱، حدیث: ۱۹۱۱

www.dawateislami.net

ना फ़रमानी के सबब उ़म्र में कमी

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! अपने वालिदैन की इ़ज़्ज़त कर, बिलाशुबा जो अपने वालिदैन की इ़ज़्ज़त करेगा मैं उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा कर दूंगा और उसे ऐसी औलाद दूंगा जो उस के साथ भलाई करेगी और जो अपने वालिदैन की ना फ़रमानी करेगा मैं उस की उ़म्र में कमी कर दूंगा और उसे ऐसी औलाद दूंगा जो उस की ना फ़रमानी करेगी।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को हलाक करने में जल्दी करता है जब कि वोह अपने वालिदैन का ना फ़रमान हो, वोह ज़रूर उसे जल्द अ़ज़ाब देता है और बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की उ़म्र में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है जब कि वोह अपने वालिदैन के साथ नेकी करने वाला हो, वोह ज़रूर उस की भलाई और ख़ैर में इज़ाफ़ा फ़रमाता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबू मरयम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने तौरात में पढ़ा कि जो शख़्स अपने बाप को मारता हो उस को क़त्ल कर दिया जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौरात में है कि जिस ने अपने वालिद को थप्पड़ मारा उसे रज्म किया जाएगा।(3)

1 ..الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثانية بعد ثلاثمائة عقوق الوالدين...الخ، ۲/۱۴۰

2 .. الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثانية بعد ثلاثمائة عقوق الوالدين...الخ، ۲/۱۴۰

3 ... الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثانية بعد ثلاثمائة عقوق الوالدين...الخ، ۲/۱۴۰

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 7

सूद

सूद की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ (پ۳، البقرۃ: ۲۷۸، ۲۷۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसलमान हो फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का।*

﴿2﴾.....

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾

(پ۳، البقرۃ: ۲۷۵)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और **अल्लाह** ने ह़लाल किया बैअ़ और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो अब ऐसी ह़रकत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे।*

www.dawateislami.net

हमेशा जहन्नम में रहने की येह सख़्त वईद उस शख़्स के लिये है जो नसीहत आ जाने के बा'द दोबारा सूद की तरफ़ लौटे (لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم)

सूद की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन से गुनाह हैं ? इरशाद फ़रमाया : (1) शिर्क करना (2) जादू करना (3) (नाहक़) किसी जान को क़त्ल करना (4) यतीम का माल (ज़ुल्मन) खाना (5) सूद खाना (6) मैदाने जिहाद से भाग जाना (7) पाक दामन औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाना।[1]

﴿2﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूद लेने और देने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।[2]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम व तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا ने रिवायत किया है।

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : "सूद के गवाहों और सूद की तह़रीर लिखने वाले पर भी ला'नत फ़रमाई है।"[3] इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

2 ...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب لعن اکل الربا ومؤکلہ، ص۸۶۲، حدیث: ۱۵۹۷

3 ...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب لعن اکل الربا ومؤکلہ، ص۸۶۲، حدیث: ۱۵۹۸

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....सूद लेने वाला, देने वाला, सूद की तह़रीर लिखने वाला जब कि सूद जान कर येह काम करते हों क़ियामत तक हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान पर उन्हें मलऊ़न कहा गया है।(1) इसे इमाम नसाई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى ने रिवायत किया है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 8

ज़ुल्मन यतीम का माल खाना

ज़ुल्मन यतीम का माल खाने की मज़म्मत में दो फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۰﴾

(پ۴، النساء: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जाएंगे।

﴾2﴿.....

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ (پ۸، الانعام: ۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे त़रीक़े से।(2)

1...نسائی، کتاب الزینۃ، باب الموتشمات وذکر الاختلاف...الخ، ص۸۱۵، حدیث: ۵۱۱۲

2...या'नी यतीमों के माल के पास इस त़रीक़े से जाओ जिस से उस का फ़ाइदा हो और जब वोह अपनी जवानी की उ़म्र को पहुंच जाए उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। (सिरात़ुल जिनान, पारह 8, सूरतुल अन्आ़म, तह़्तुल आयत : 152, 3 /241) यतीमों के माल से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सील के लिये "सिरात़ुल जिनान, जिल्द 1, सफ़ह़ा 348 और जिल्द 2, सफ़ह़ा 142" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो ।" इन में एक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यतीम के माल को खाना भी ज़िक्र किया ।[1]

यतीम का वली (सरपरस्त) फ़क़ीर हो तो उस के लिये ब क़दरे मा'रूफ़ (ह़स्बे दस्तूर) यतीम का माल खाने में ह़रज नहीं अलबत्ता ब क़दरे मा'रूफ़ से ज़ियादा खाना शदीद ह़राम है । ब क़दरे मा'रूफ़ की मिक्दार जानने के लिये उन मुसलमानों के उ़र्फ़ को देखा जाएगा जो बुरे मक़ासिद न रखते हों ।

गुनाहे कबीरा नम्बर 9

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना

(उ़लमा की एक जमाअ़त के नज़्दीक) रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना कुफ़्र है और येह अ़मल बन्दे को ख़ारिज अज़् इस्लाम कर देता है । बिलाशुबा ह़राम को ह़लाल और ह़लाल को ह़राम क़रार देने के मुआ़मले में क़स्दन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना ख़ालिस कुफ़्र है ।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

www.dawateislami.net

बिलाशुबा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधने का मुआ़मला दूसरे पर झूट बांधने की त़रह़ नहीं ख़ुद रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

﴿1﴾.....मुझ पर झूट बांधना, मेरे ग़ैर पर झूट बांधने की त़रह़ नहीं है जो जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधे उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ।[1]

﴿2﴾.....जो शख़्स मुझ पर झूट बांधेगा उस के लिये जहन्नम में घर बनाया जाएगा ।[2] येह ह़दीसे पाक सह़ीह़ है ।

﴿3﴾.....जो मेरे ह़वाले से ऐसी बात करे जो मैं ने नहीं कही उसे चाहिये कि वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ।[3]

﴿4﴾.....झूट और ख़ियानत के इ़लावा मोमिन की त़बीअ़त में हर बात हो सकती है ।[4]

﴿5﴾.....जिस ने मेरे ह़वाले से कोई ह़दीस रिवायत की ह़ालांकि उस का झूटा होना उसे मा'लूम हो तो वोह झूटों में से एक झूटा है ।[5]

पस आप पर इन अह़ादीस के ज़रीए ज़ाहिर हो गया कि मौज़ूअ़ ह़दीस[6] को रिवायत करना जाइज़ नहीं है ।

---

1 ...مسلم، المقدمة، باب تغليظ الكذب على رسول الله صلى الله عليه وسلم، ص۷، حديث: ۴

2 ...مسند احمد، مسند عبد الله بن عمر، ۲/۲۴۷، حديث: ۴۷۴۲

3 ...ابن ماجه، المقدمة، باب تغليظ فی تعمد الكذب على رسول الله صلى الله عليه وسلم، ص۲۸، حديث: ۳۵

4 ...مسند احمد، تتمة مسند الانصار، حديث ابی امامة... الخ، ۸/۲۷۶، حديث: ۲۲۲۳۲

5 ...مسلم، المقدمة، باب وجوب الرواية عن الثقات... الخ، ص۷

6 ...जो झूटी बात घड़ कर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बत़ौरे ह़दीस मन्सूब कर दी गई हो उसे मौज़ूअ़ ह़दीस कहते हैं । (निसाबे उसूले ह़दीस, स. 65)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 10

रमज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्र छोड़ देना

तारिके रोज़ा की मज़म्मत में पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....जिस ने बिग़ैर किसी उ़ज़्र और रुख़्सत के रमज़ान का रोज़ा छोड़ दिया तो सारी ज़िन्दगी के रोज़े भी उस के बराबर नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले।[1]

﴿2﴾.....पांचों नमाज़ें, एक जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक दरमियान में होने वाले तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जब कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।[2]

इस्लाम के सुतून

﴿3﴾.....इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : (1) इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं (2) नमाज़ क़ाइम करना (3) ज़कात देना (4) रमज़ान के रोज़े रखना और (5) ह़ज करना।[3] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

मुफ़स्सिरे कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : इस्लाम की बुन्याद और इस के सुतून तीन हैं : (1) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही देना (2) नमाज़

1...ابوداود، کتاب الصوم، باب فی التغلیظ فیمن افطر عمداً، ۲/ ۳۶۱، حدیث: ۲۳۹۶

2...مسلم، کتاب الطهارة، باب الصلوات الخمس والجمعة الی الجمعة...الخ، ص ۱۱۴، حدیث: ۲۳۳

3...بخاری، کتاب الایمان، باب قول النبی: بنی الاسلام...الخ، ۱/ ۱۴، حدیث: ۸

www.dawateislami.net

पढ़ना और (3) रमज़ान के रोज़े रखना। जो इन में से किसी एक को तर्क करे तो वोह काफ़िर है।[1] (फिर सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया :) तुम बहुत से लोग ऐसे पाओगे जो कसीर माल होने के बा वुजूद ह़ज करते हैं न ज़कात देते हैं लेकिन उन लोगों को (काफ़िर क़रार दे कर) क़त्ल करना जाइज़ नहीं।[2]

मुसलमानों के नज़दीक येह बात साबित है कि जो शख़्स बिग़ैर किसी मरज़ और उ़ज़्र के रमज़ान के रोज़े को तर्क कर दे वोह ज़िनाकार, भत्ताख़ोर और आ़दी शराबी से भी बदतर है बल्कि मुसलमान ऐसे शख़्स के इस्लाम में शक करते हैं और उसे ज़िन्दीक़ (बे दीन) व मुर्तद ख़याल करते हैं।

﴿4﴾.....जो झूट बोलना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के खाने और पीने को तर्क करने की कुछ परवा नहीं फ़रमाता।[3] येह ह़दीस सह़ीह़ है।

﴿5﴾.....उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस ने रमज़ान का महीना पाया फिर उस की बख़्शिश न हुई।[4]

1.....येह फ़रमान या तो ज़ज्र (डांट डपट) पर मब्नी है या उस शख़्स पर महमूल है जो बिला उ़ज़्रे शरई इन के तर्क को ह़लाल जानता हो।

(فیض القدیر، ۴/۴۱۰، تحت الحدیث: ۵۴۱۴)

2...مسند ابی یعلی، مسند ابن عباس، ۲/۳۷۸، حدیث: ۲۳۴۵

3...بخاری، کتاب الادب، باب قول اللہ تعالٰی: واجتنبوا قول الزور، ۴/۱۱۵، حدیث: ۶۰۵۷

4...ترمذی، کتاب الدعوات، باب قول رسول اللہ: رغم انف رجل، ۵/۳۲۰، حدیث: ۳۵۵۶

مسند البزار، مسند عمار بن یاسر، ۴/۲۴۰، حدیث: ۱۴۰۵

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 11

मैदाने जिहाद से भाग जाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾ (پ۹، الانفال: ۱۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह है पलटने की।*

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो।" इन में से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मैदाने जिहाद से भाग जाने को भी ज़िक्र किया।[1]

गुनाहे कबीरा नम्बर 12

ज़िना करना

(बा'ज़ अफ़्आ़ले ज़िना का गुनाह, बा'ज़ के मुक़ाबले में ज़ियादा बड़ा है)

ज़िना की मज़म्मत में चार फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िना की मज़म्मत करते हुवे इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत ही बुरी राह।

[1] ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

www.dawateislami.net

﴿2﴾.....

وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَ لَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لَا یَزْنُوْنَ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ یَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾

(پ۱۹، الفرقان: ۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की अल्लाह ने हुरमत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा।

﴿3﴾.....

اَلزَّانِیَةُ وَ الزَّانِیْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّ لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِیْ دِیْنِ اللّٰهِ (پ۱۸، النور: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सौ कोड़े लगाओ और तुम्हें उन पर तरस न आए अल्लाह के दीन में।

﴿4﴾.....

اَلزَّانِیْ لَا یَنْكِحُ اِلَّا زَانِیَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۪ وَّ الزَّانِیَةُ لَا یَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳﴾

(پ۱۸، النور: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बदकार मर्द निकाह़ न करे मगर बदकार औ़रत या शिर्क वाली से और बदकार औ़रत से निकाह़ न करे मगर बदकार मर्द या मुशरिक और येह काम ईमान वालों पर ह़राम है।[1]

ज़िना की मज़म्मत में 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴿1﴾.....रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया : कौन सा गुनाह सब से बड़ा है? इरशाद फ़रमाया : तू किसी को

---

1 ...इब्तिदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह़ करना ह़राम था बा'द में आयत "اَلزَّانِیْ لَا یَنْكِحُ اِلَّا زَانِیَةً اَوْ مُشْرِكَةً" से मन्सूख़ हो गया।
(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 18, सूरतुन्नूर, तह़्तुल आयत : 3)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हमसर क़रार दे हालांकि उस ने तुझे पैदा किया है। अ़र्ज़ की गई : फिर कौन सा ? इरशाद फ़रमाया : तेरा अपनी औलाद को इस ख़ौफ़ से क़त्ल कर देना कि वोह तेरे साथ खाएगी। अ़र्ज़ की गई : फिर कौन सा ? इरशाद फ़रमाया : तेरा अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना।[1]

﴿2﴾.....ज़ानी जिस वक़्त ज़िना करता है मोमिन नहीं होता और चोर जिस वक़्त चोरी करता है मोमिन नहीं होता और शराबी जिस वक़्त शराब पीता है मोमिन नहीं होता[2]।[3]

﴿3﴾.....जब बन्दा ज़िना करता है तो ईमान उस से निकल जाता है पस वोह (उस के सर पर) साइबान की त़रह़ होता है फिर जब बन्दा ज़िना से फ़ारिग़ होता है तो ईमान उस की त़रफ़ लौट आता है।[4]

येह ह़दीस शरीफ़ इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

﴿4﴾.....जो शख़्स ज़िना करता या शराब पीता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से ईमान[5] यूं निकालता है जैसे इन्सान अपने सर से क़मीस उतारे।[6] इस ह़दीसे पाक की सनद जय्यिद है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الشرک اقبح الذنوب...الخ، ص۵۹، حدیث: ۸۶

2 .....इन तमाम मक़ामात में या तो कमाले ईमान मुराद है या नूरे ईमान, या'नी इन गुनाहों के वक़्त मुजरिम से नूरे ईमान निकल जाता है वरना येह गुनाह कुफ़्र नहीं न इन का मुर्तकिब मुर्तद, अगर इसी ह़ालत में मारा जाए तो वोह काफ़िर न मरेगा। (मिरआतुल मनाजीह, 1/75)

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی...الخ، ص۴۸، حدیث: ۵۷

4 ...ابو داود، کتاب السنة، باب الدلیل علی زیادة الایمان ونقصانه، ۴/ ۲۹۳، حدیث: ۴۶۹۰

5 .....यहां ईमान से मुराद कमाले ईमान है। (فیض القدیر، ۶/ ۱۸۴، تحت الحدیث: ۸۷۲۲)

6 ...مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب اذا زنی العبد خرج منه الایمان، ۱/ ۱۷۵، حدیث: ۶۴

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....तीन लोगों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत कलाम फ़रमाएगा न उन्हें पाक करेगा और न ही उन की तरफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा बादशाह और (3) मुतकब्बिर फ़क़ीर ।[1]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

﴾6﴿.....मुजाहिदीने इस्लाम की औ़रतों की ह़ुरमत जंग में शरीक न होने वाले लोगों पर अपनी माओं की ह़ुरमत की त़रह़ है तो जो इन की बीवियों के बारे में ख़ियानत करेगा तो उस ख़ाइन को उस मुजाहिद के लिये खड़ा किया जाएगा और वोह उस की नेकियों में से जो चाहेगा ले लेगा तो तुम्हारा क्या ख़याल है ?[2]

इसे इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है ।[3]

﴾7﴿.....चार त़रह़ के लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मबग़ूज़ रखता है (1) ब कसरत क़समें खाने वाला ताजिर (2) मुतकब्बिर फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम ह़ुक्मरान ।[4] इस ह़दीसे पाक को इमाम नसाई عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने रिवायत किया है और इस की सनद सह़ीह़ है ।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار...الخ، ص۶۸، حدیث:۱۰۷

2 ...مسلم کتاب الامارۃ، باب حرمۃ النساء المجاھدین...الخ، ص۱۰۵۱، حدیث:۱۸۹۷

3 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 465 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ख़ुद ख़याल कर लो कि मुजाहिद ऐसे ख़ाइन की कोई नेकी छोड़ेगा हरगिज़ नहीं । नेकी छीन लेने के येह मा'ना हैं कि उस ख़ाइन को नेकी का सवाब न मिले बल्कि जो उसे सवाब व दरजा मिलता वोह उस ग़ाज़ी को दे दिया जाए या येह मत़लब है कि सोचो कि रब तआ़ला के हां मुजाहिद की क्या इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत है ।

4 ...نسائی، کتاب الزکوۃ، باب الفقیر المختال، ص۴۲۳، حدیث:۲۵۷۳

www.dawateislami.net

﴾8﴿.....सब से बद तरीन ज़िना अपनी मां, बहन, बाप की बीवी और महारिम के साथ ज़िना करना है।

﴾9﴿.....जो शख़्स मह़रम से बदकारी करे उस को क़त्ल कर डालो।[1] इमाम ह़ाकिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने इस ह़दीस को सह़ीह़ क़रार दिया है[2] और इस की ज़िम्मेदारी उन्ही पर है।

और इसी ह़वाले से दीगर अह़ादीस भी हैं जिन में से येह ह़दीसे बरा भी है कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मामूं को एक शख़्स के पास भेजा जिस ने अपने बाप की बीवी से शादी कर ली थी कि उसे क़त्ल कर दो और उस के माल का ख़ुम्स (या'नी पांचवां ह़िस्सा) ले लो।[3]

गुनाहे कबीरा नम्बर 13

ह़ाकिम का अपनी रिआ़या को धोका देना और उन पर ज़ुल्मो जब्र करना

क़ुरआन में ह़ाकिम के ज़ुल्मो जब्र की मज़म्मत

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا السَّبِیْلُ عَلَى الَّذِیْنَ یَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾

(پ۲۵، الشوریٰ: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुवाख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाह़क़ सर्कशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

1... ترمذی، کتاب الحدود، باب ما جاء فیمن یقول لآخر یا مخنث!، ۳/ ۱۴۱، حدیث: ۱۴۶۷

2... مستدرک حاکم، کتاب الحدود، باب من وقع علی ذات محرم فاقتلوہ، ۵/ ۵۰۹، حدیث: ۸۱۱۹

3... ابوداود، کتاب الحدود، باب فی الرجل یزنی بحریمہ، ۴/ ۲۰۹، حدیث: ۴۴۵۷

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾

(پ٦، المائدة: ٧٩)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

हाकिम के ज़ुल्मो जब्र के मुतअ़ल्लिक़ 32 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....तुम में से हर एक निगरान है और उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा।(1)

﴾2﴿.....जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं है।(2)

﴾3﴿.....ज़ुल्म क़ियामत के रोज़ अंधेरा होगा।(3)

﴾4﴿.....जिस निगरान (ह़ाकिम) ने अपनी रिआ़या को धोका दिया वोह जहन्नम में जाएगा।(4)

﴾5﴿.....जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी रिआ़या का निगरान बनाया फिर उस ने उन के साथ ख़ैरख़्वाही नहीं की मगर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत को ह़राम फ़रमा देगा।(5)

एक रिवायत में है :

---

1 ...مسلم، کتاب الامارة، باب فضیلة الامام العادل...الخ، ص١٠١٦، حدیث:١٨٢٩

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی: من غشنا فلیس منا، ص٦٥، حدیث:١٠١

3 ...مسند احمد، مسند البصریین، حدیث معقل بن یسار، ٧/ ٢٨٤، حدیث:٢٠٣١١

4 ...مسلم، کتاب البر والصلة والاداب، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٤، حدیث:٢٥٧٩

5 ...بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیة فلم ینصح، ٤/ ٤٥٦، حدیث:٧١٥١

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....जिस दिन वोह मरेगा वोह अपनी रिआ़या के साथ धोका करने वाले शख़्स की मौत मरेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत को ह़राम फ़रमा देगा।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

एक रिवायत में येह भी है :

﴾7﴿.....वोह शख़्स जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा।[2]

﴾8﴿.....जो दस आदमियों पर भी अमीर होगा उसे बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गर्दन के साथ बन्धा होगा, उस का अ़द्ल उसे छुड़ा लेगा या उस का ज़ुल्म उसे हलाक कर देगा।[3]

﴾9﴿.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो इस उम्मत के किसी मुआ़मले का ज़िम्मेदार हो फिर वोह उन पर नर्मी करे तो तू भी उस के साथ नर्मी फ़रमा और जो उन पर सख़्ती करे तो तू भी उस पर सख़्ती फ़रमा।[4]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हौज़े कौसर से महरूमी

﴾10﴿.....अ़न क़रीब फ़ासिक़ो ज़ालिम हुक्मरान होंगे तो जो उन के झूट की तस्दीक़ करेगा और उन के ज़ुल्म पर उन की मदद

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب استحقاق الوالی الغاش لرعیتہ النار، ص۸۵، حدیث: ۱۴۲

2 ...بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیۃ فلم ینصح، ۴/ ۴۵۶، حدیث: ۷۱۵۰

3 ...معجم الاوسط، ۴/ ۳۵۵، حدیث: ۶۲۲۵

4 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامام العادل...الخ، ص، حدیث: ۱۸۲۸

www.dawateislami.net

करेगा तो न वोह मुझ से है और न मैं उस से हूं और वोह हरगिज़ मेरे हौज़ पर नहीं आएगा।[1]

﴿11﴾.....जिस क़ौम में गुनाह किये जाते हों और गुनहगारों के मुक़ाबिल दीगर लोग ब कसरत और बा इज़्ज़त हों फिर वोह उन गुनाहों को न बदलें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर आम अ़ज़ाब भेजेगा।[2]

﴿12﴾.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म और बुराई से मन्अ़ करते रहना और ज़रूर गुनहगार का हाथ पकड़े रहना और ज़रूर उसे हक़ की त़रफ़ फेर देना वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल एक जैसे कर देगा फिर तुम पर इस त़रह़ ला'नत फ़रमाएगा जैसे उस ने ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते ईसा (علیہما السلام) की ज़बान से बनी इस्राईल पर ला'नत की।[3]

﴿13﴾.....मेरी उम्मत के दो क़िस्म के लोगों को मेरी शफ़ाअ़त न पहुंचेगी : (1) ज़ालिम व धोकेबाज़ बादशाह और (2) दीन में ह़द से बढ़ने वाला।[4] आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के ख़िलाफ़ शहादत दी और उन से बेज़ारी ज़ाहिर फ़रमाई।[5]

---

1 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمر، ۶/ ۳۲۴، حدیث: ۱۸۱۴۹

2 ...ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، ۴/ ۳۶۲، حدیث: ۴۰۰۹
شعب الایمان، باب فی الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، ۶/ ۸۰، حدیث: ۷۵۴۵

3 ...ابو داود، کتاب الملاحم، باب الامر والنہی، ۴/، حدیث: ۴۳۳۷۔ ۴۳۳۶ بتغیر قلیل

4 .....दीन में ह़द से बढ़ने से मुराद उमूरे दीनिया में ह़द से तजावुज़ करना और पेचीदा अश्या से मुतअ़ल्लिक़ बह़स करना नीज़ उन पेचीदा उमूर की इ़ल्लतों को ज़ाहिर करने की कोशिश करना है। (فیض القدیر، ۳/ ۱۶۲، تحت الحدیث: ۲۹۰۹)

5 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب: ۹۳، ص ۹۶، حدیث: ۴۳۲

www.dawateislami.net

(इस ह़दीस की सनद में) अग़लब नामी रावी ज़ईफ़ है । इसी ह़दीस की मिस्ल इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी रिवायत किया । आप ने फ़रमाया : हम से ह़ज़रते मनीअ़ ने रिवायत बयान की और उन से ह़ज़रते मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया । मनीअ़ नामी साह़िब कौन हैं येह मा'लूम नहीं हो सका ।

सब से सख़्त अ़ज़ाब

﴿14﴾.....बरोज़े क़ियामत सब से सख़्त अ़ज़ाब ज़ालिम हुक्मरान को होगा ।(1)

﴿15﴾.....ऐ लोगो ! नेकी का हुक्म करो और बुराई से रोको इस से पहले कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करो तो वोह तुम्हारी दुआ़ क़बूल न फ़रमाए और इस से पहले कि तुम बख़्शिश त़लब करो तो तुम्हें मुआ़फ़ी न दी जाए । बेशक यहूद के उ़लमा और ईसाई पादरियों ने जब नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने को छोड़ दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत फ़रमाई फिर उन्हें आ़म अ़ज़ाब ने घेर लिया ।(2)

﴿16﴾.....مَنْ اَحْدَثَ فِیْ اَمْرِنَا هٰذَا مَا لَیْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ या'नी जो हमारे दीन में ऐसी बात ईजाद करे जो उस से न हो तो वोह मर्दूद है ।(3)(4)

---

1 ...مسند ابی یعلی، مسند ابی سعید الخدری، ۱/ ۴۶۴، حدیث: ۱۰۸۳

2 ...معجم الاوسط، ۱/ ۳۷۴، حدیث: ۱۳۶۷

3 ...مسلم، کتاب الاقضیۃ، باب نقض الاحکام الباطلۃ ورد محدثات الامور، ص ۹۴۶، حدیث: ۱۷۱۸

4 .....या'नी वोह ईजाद करने वाला मर्दूद है या उस की येह ईजाद मर्दूद है । ख़याल रहे कि अम्र से मुराद दीने इस्लाम है और मा से मुराद अ़क़ाइद, या'नी जो शख़्स इस्लाम में ख़िलाफ़े इस्लाम अ़क़ीदे ईजाद करे वोह शख़्स भी मर्दूद और वोह अ़क़ाइद भी बात़िल या अम्र से मुराद दीन है और मा से मुराद आ'माल हैं...

www.dawateislami.net

बिदअ़ती मलऊ़न है

﴾17﴿.....जिस ने कोई नया काम[1] (शरई उसूल के ख़िलाफ़) ईजाद किया या किसी बिदअ़ती को पनाह दी उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।[2]

....और لَيْسَ مِنْهُ से मुराद क़ुरआनो ह़दीस के मुख़ालिफ़, या'नी जो कोई दीन में ऐसे अ़मल ईजाद करे जो दीन, या'नी किताब व सुन्नत के मुख़ालिफ़ हों जिस से सुन्नत उठ जाती हो वोह ईजाद करने वाला भी मर्दूद, ऐसे अ़मल भी बातिल जैसे उर्दू में ख़ुत़बा व नमाज़ पढ़ना, फ़ारसी में अज़ान देना वग़ैरा। हमारी इस तफ़्सीर की बिना पर येह ह़दीस अपने उ़मूम पर है इस में कोई क़ैद लगाने की ज़रूरत नहीं। (साहिबे) मिर्क़ात ने फ़रमाया لَيْسَ مِنْهُ से मा'लूम हुवा कि दीन में ऐसे काम की ईजाद जो किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ न हो बुरी नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 139 मुल्तक़त़न)

1.....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 1109** पर फ़रमाते हैं : "ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह बिदअ़ते सय्यिआ या'नी बुरी बिदअ़त है जब कि दीन में ऐसी नई बात जो सुन्नत पर अ़मल करने में मदद करने वाली हो और जिस की अस्ल दीन से साबित हो वोह बिदअ़ते ह़सना या'नी अच्छी बिदअ़त है। (नीज़) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ह़दीसे पाक "وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ" के तह़्त फ़रमाते हैं : जो बिदअ़त कि उसूल और क़वाइदे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को बिदअ़ते ह़सना कहते हैं और जो उस के ख़िलाफ़ है वोह बिदअ़ते ज़लालत या'नी गुमराही वाली बिदअ़त कहलाती है।" (اشعۃ اللمعات، ۱/ ۱۳۵)

नोट : मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 1104 ता 1113 का मुत़ालआ़ कीजिये !

2...مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینۃ ودعاء النبی فیھا بالبرکۃ...الخ، ص ۷۱۱، حدیث: ۱۳۷۰

www.dawateislami.net

﴾18﴿.....जो रह़्म नहीं करता उस पर रह़्म नहीं किया जाता।[1]

﴾19﴿.....जो लोगों पर रह़्म नहीं करता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म नहीं करता।[2]

﴾20﴿.....जो भी अमीर मुसलमानों के कामों का निगरान बने फिर वोह उन के लिये कोशिश न करे और न उन के लिये ख़ैर ख़्वाही करे तो वोह उन के साथ जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।[3]

﴾21﴿.....जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के किसी काम का निगरान बनाए फिर वोह उन की ह़ाजात, मुफ़्लिसी और फ़क़्र के दरमियान ह़िजाब कर दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की ह़ाजत, मुफ़्लिसी और फ़क़्र के सामने आड़ क़ाइम फ़रमा देगा[4]।[5]

इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद व इमाम तिरमिज़ी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) ने रिवायत किया है।

---

1 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمته الصبیان والعیال...الخ، ص۱۲۶۷، حدیث: ۲۳۱۸

2 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمته الصبیان والعیال...الخ، ص۱۲۶۸، حدیث: ۲۳۱۸

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب استحقاق الوالی الغاش لرعیته النار، ص۸۵، حدیث: ۱۴۲

4 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 419 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि न मज़्लूमों, ह़ाजत मन्दों को अपने तक पहुंचने दे, अपने दरवाज़े पर सख़्त पहरा बिठा दे, न उन की ज़रूरिय्यात की परवाह करे, उन से ग़ाफ़िल रहे, उन की ह़ाजत रवाई का कोई इन्तिज़ाम न करे, अपनी हुकूमत संभालने अपने ऐशो आराम में मुन्हमिक रहे। इस से अल्लाह तआ़ला अपने उन मजबूर बन्दों का बदला लेगा कि उस की ह़ाजतें ज़रूरतें पूरी न फ़रमाएगा, उस की दुआ़एं क़बूल न करेगा। इस सज़ा का ज़ुहूर कुछ दुन्या में भी होगा और पूरा पूरा ज़ुहूर आख़िरत में होगा।

5 ...ابو داود، کتاب الخراج...الخ، باب فیما یلزم الامام من امر الرعیة، ۳/ ۱۸۹، حدیث: ۲۹۴۸

www.dawateislami.net

﴾22﴿.....आ़दिल हुक्मरान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाएगा ।(1)

﴾23﴿.....जो इन्साफ़ करने वाले हैं वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे । येह वोह लोग होंगे जो अपने फ़ैसलों में, अपने घरवालों के बारे में और जिन पर निगरान थे उन के बारे में अ़द्ल से काम लेते थे ।(2)

बद तरीन हुक्मरान

﴾24﴿.....तुम्हारे बद तरीन हुक्मरान वोह हैं जिन से तुम बुग़्ज़ रखो और वोह तुम से बुग़्ज़ रखें । तुम उन पर ला'नत करो वोह तुम पर ला'नत करें ।(3) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हम उन्हें फेंक न दें ।(4) इरशाद फ़रमाया : नहीं जब तक कि वोह तुम में नमाज़ क़ाइम रखें (5)।(6)

(मज़कूरे बाला) दोनों अह़ादीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया ।

---

1 ...مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل اخفاء الصدقۃ، ص۵۱۴، حدیث: ۱۰۳۱

2 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامام العادل...الخ، ص۱۰۱۶، حدیث: ۱۸۲۷

3 .....या'नी ज़ालिम हों, मुतकब्बिर हों, अपने ऐ़शो त़रब में रहें, मुल्क व रिआ़या से ला परवाह रहें, फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार हों, ऐसे हुक्काम ख़ुदा का अ़ज़ाब हैं । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/387)

4 .....क्या हम उन को हुकूमत से निकाल बाहर न कर दें, और उन से की हुई बैअ़त तोड़ कर उन से जंग न करें ? (मिरआतुल मनाजीह़, 5/387)

5 .....या'नी जब तक सलातीन व हुक्काम मुसलमानों में जुमुआ़ व ईदैन क़ाइम करें, मस्जिदों का इन्तिज़ाम करें, नमाज़ों का एहतिमाम करें, तब तुम उन को अ़लाहिदा न करो, उन की बैअ़त न तोड़ो क्यूंकि नमाज़ें क़ाइम करना मोमिन होने की अ़लामत है । इस में नमाज़ की अहम्मिय्यत का इज़हार है । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/387)

6 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب خیار الائمۃ وشرارھم، ص۱۰۳۲، حدیث: ۱۸۵۵

www.dawateislami.net

﴿25﴾.....बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को मोहलत अ़ता फ़रमाता है ह़त्ता कि जब उसे पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता फिर रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ (پ۱۲، هود: ۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं (सख़्त) है।[1]

﴿26﴾.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को यमन भेजते वक़्त (ज़कात व उ़श्र के सिलसिले में) आप से इरशाद फ़रमाया : लोगों के उ़म्दा माल लेने से एह़तिराज़ बरतना और मज़लूम की बद दुआ़ से बचना कि उस के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता।[2] येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿27﴾.....बिलाशुबा बदतरीन हुक्मरान रिआ़या पर ज़ुल्म करने वाले हैं।[3]

﴿28﴾.....तीन शख़्सों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कलाम नहीं फ़रमाएगा। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन में झूटे बादशाह का ज़िक्र भी फ़रमाया।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والاداب، باب تحریم الظلم، ص ۱۳۹۵، حدیث: ۲۵۸۳

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الدعاء الی الشھادتین وشرائع الاسلام، ص ۳۱، حدیث: ۱۹

3 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامام العادل...الخ، ص ۱۰۱۸، حدیث: ۱۸۳۰

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار، ص ۶۸، حدیث: ۱۰۷

www.dawateislami.net

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾

(پ۲۰، القصص: ۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़गारों ही की है।

﴾29﴿.....बेशक तुम हुक्मरान बनने की ह़िर्स रखते हो और येह बात अ़न क़रीब तुम्हारे लिये बरोज़े क़ियामत शर्मिन्दगी का बाइ़स होगी।(1) इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

﴾30﴿.....ख़ुदा की क़सम ! हम इस काम पर उस को निगरान नहीं बनाएंगे जो इस का सुवाल करे या इस की ह़िर्स रखे।(2) येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾31﴿.....रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : ऐ का'ब ! तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन कम अ़क़्लों की हुकूमत से बचाए जो मेरे बा'द हुक्मरान बनेंगे। वोह न मेरे त़रीक़े पर चलेंगे और न मेरी सुन्नत पर अ़मल पैरा होंगे।(3) इस ह़दीसे पाक को इमाम ह़ाकिम ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

मक़्बूल दुआ़ वाले अफ़राद

﴾32﴿.....तीन त़रह़ के लोगों की दुआ़ क़बूल होने में कोई शक नहीं : (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ और (3) वालिद की दुआ़ अपनी औलाद के ह़क़ में।(4)

इस ह़दीसे पाक की सनद क़वी है।

---

❶...بخاری، کتاب الاحکام، باب مایکرہ من الحرص علی الامارۃ، ۴/ ۴۵۶، حدیث: ۷۱۴۸

❷... بخاری، کتاب الاحکام، باب مایکرہ من الحرص علی الامارۃ، ۴/ ۴۵۶، حدیث: ۷۱۴۹

❸...مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب من دخل علی امراء فصدقھم...الخ، ۱/ ۲۶۲، حدیث: ۲۷۳

❹... الادب المفرد، باب دعوۃ الایمان، ص ۳۲، حدیث: ۳۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 14

शराब पीना

शराब की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ

(پ۲، البقرۃ:۲۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है।

﴿2﴾.....

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ (پ۷، المائدۃ:۹۰،۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इन से बचते रहना।

शिर्क के बराबर

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से येह बात साबित है कि आप ने इरशाद फ़रमाया : जब शराब की हुरमत की आयत नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان एक दूसरे के पास चल कर जाते और कहते : शराब को ह़राम क़रार दिया गया है और उसे शिर्क के बराबर क़रार दिया गया है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का मौक़िफ़ येह है कि शराब पीना सब से बड़ा कबीरा गुनाह है।

1 ...معجم الکبیر، ۱۲/ ۳۷، حدیث: ۱۲۳۹۹

www.dawateislami.net

बिलाशुबा शराब सब बुराइयों की जड़ है और कई अहादीस में शराबी पर ला'नत आई है।

शराब की मज़म्मत में पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.....जो शख़्स शराब पिये उस को कोड़े मारो फिर अगर दोबारा पिये तो उस को कोड़े लगाओ फिर दोबारा पिये तो कोड़े लगाओ फिर अगर चौथी बार शराब पिये तो उस को क़त्ल[1] कर डालो।[2][3] येह हदीस सहीह है।

﴾2﴿.....जो नशे के सबब एक मरतबा नमाज़ तर्क करेगा तो गोया उस की मिल्क में दुन्या और उस में मौजूद तमाम अश्या थीं, वोह सब उस से सल्ब कर ली गईं और जो नशे की वज्ह से चार बार नमाज़ को तर्क करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे है कि वोह उसे तीनतुल ख़बाल से पिलाए। अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तीनतुल ख़बाल क्या है? इरशाद फ़रमाया : जहन्नमियों के ज़ख़्मों का निचोड़।[4]

इस हदीसे पाक की सनद सहीह है।

---

1 .....शराबी को क़त्ल करने से मुराद उस की सख़्त पिटाई लगाना है या येह अम्र बतौरे वईद है। मुतक़द्दिमीन व मुतअख़्ख़रीन में से किसी आलिम का येह मज़हब नहीं कि शराबी को क़त्ल किया जाएगा। कहा गया है येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ हो गया। (مرقاة المفاتيح، ۷/ ۲۰۹، تحت الحديث: ۳۶۱۷)

2 ...ترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء من شرب الخمر...الخ، ۳/ ۱۲۹، حدیث: ۱۴۴۹

3 .....**अहनाफ़ के नज़दीक :** आज़ाद शख़्स के लिये शराब पीने की सज़ा अस्सी कोड़े हैं जो उस के बदन के मुतफ़र्रिक़ जगहों पर मारे जाएंगे।

(المختصر القدوری، کتاب الحدود، باب حد الشرب، ص ۳۳۷ مکتبہ ضیائیہ راولپنڈی)

4 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۹۳، حدیث: ۶۶۷۱

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे अ़हद है कि जो नशा आवर चीज़ पियेगा वोह उसे त़ीनतुल ख़बाल से पिलाएगा। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! त़ीनतुल ख़बाल क्या है ? इरशाद फ़रमाया : जहन्नमियों का पसीना (रावी को शक है) या इरशाद फ़रमाया : जहन्नमियों के ज़ख़्मों का निचोड़।[1] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया।

﴿4﴾.....जो दुन्या में शराब पियेगा तो आख़िरत में उस पर शराबे त़हूर ह़राम कर दी जाएगी।[2][3]

﴿5﴾.....आ़दी शराबी अगर बिग़ैर तौबा किये मर जाए तो बुत परस्त शख़्स की त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा[4]।[5] इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है।

---

1 ... مسلم، کتاب الاشربة، باب بیان ان کل مسکر...الخ، ص۱۱۰۹، حدیث: ۲۰۰۲

2 ... مسلم، کتاب الاشربة، باب عقوبة من شرب الخمر...الخ، ص۱۱۰۹، حدیث: ۲۰۰۲

3 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 5, सफ़ह़ा 371 पर इस के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : या'नी अगर ह़लाल जान कर पीता रहा तो काफ़िर हुवा, काफ़िर जन्नत से महरूम है और अगर ह़राम जान कर पीता रहा तो अगर्चे जन्नत में पहुंच जाए और वहां की तमाम ने'मतें बरते मगर शराब कभी न पाएगा। बा'ज़ शारेह़ीन ने फ़रमाया है कि जिस मुद्दत तक शराब पीता रहा है उस मुद्दत तक न पाएगा या ज़ियादा मिक़्दार में न पाएगा बहुत थोड़ी मिलेगी, बा'ज़ ने फ़रमाया कि इस का मत़लब येह है कि अव्वल (इब्तिदा ही) से शराबे त़हूर न मिलेगी।

4 .....मुराद येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ज़बनाक होगा जैसा कि बुत परस्त पर ग़ज़बनाक होता है और येह इन्तिहाई सख़्त वईद है और वज्हे तम्बीह येह हो सकती है कि जिस त़रह़ बुत परस्त अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर अ़मल करता और ह़ुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करता है येही ह़ाल आ़दी शराबी का होता है। (مرقاة المفاتیح، ۷/ ۲۴۲، تحت الحدیث: ۳۶۵۷)

5 ... مسند احمد، مسند عبد الله بن عباس بن عبد المطلب، ۱/ ۵۸۳، حدیث: ۲۴۵۳

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 15

तकब्बुर करना, फ़ख़्र करना, शेख़ी मारना और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना

गुरूर व तकब्बुर की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ قَالَ مُوْسٰۤى اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا یُؤْمِنُ بِیَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۲۷﴾ (پ۲۴، المؤمن:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा ने कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता।

﴿2﴾.....

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۱۴، النحل:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

﴿3﴾.....

اِنَّ الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ (پ۲۴، المؤمن:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो उन के दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हवस जिसे न पहुंचेंगे तो तुम अल्लाह की पनाह मांगों।

www.dawateislami.net

गुरूर व तकब्बुर और उ़ज्ब की मज़म्मत में 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴾1﴿.....हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा[1]।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾2﴿.....एक मर्द अपनी दो चादरों में फ़ख़्र व गुरूर से अकड़ता हुवा चला जा रहा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया पस वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता रहेगा।[3]

﴾3﴿.....ज़ुल्म करने वालों और तकब्बुर करने वालों को बरोज़े क़ियामत च्यूंटियों की मिस्ल उठाया जाएगा लोग उन्हें रौंदते होंगे[4]।[5]

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : पहला गुनाह जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की गई वोह तकब्बुर है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

---

1 .....या'नी अव्वलन जन्नत में जाने वालों के साथ दाख़िल न हो सकेगा क्यूंकि तकब्बुर कुफ़्र नहीं है और इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं। ह़दीस का मा'ना येह है कि मुतकब्बिर तकब्बुर के साथ जन्नत में दाख़िल नहीं होगा या तो उसे अ़ज़ाब दे कर तकब्बुर और दीगर तमाम मज़मूम अख़्लाक़ से पाक कर के जन्नत में दाख़िल किया जाएगा या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से अ़फ़्वो दरगुज़र फ़रमा कर उसे दाख़िले जन्नत फ़रमा देगा। (مرقاۃ المفاتیح، ۸/ ۸۲۸، تحت الحدیث: ۵۱۰۷)

2 ... مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر... الخ، ص ۶۰، حدیث: ۹۱

3 ... مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم التبختر فی المشی... الخ، ص ۱۱۵۶، حدیث: ۲۰۸۸

4 .....तकब्बुर करने वाले अपने चेहरे और क़दो क़ामत के ए'तिबार से छोटे और ह़क़ीर होने में च्यूंटियों की त़रह़ होंगे। (مرقاۃ المفاتیح: ۸/ ۸۳۳، تحت الحدیث: ۵۱۱۲)

5 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب التواضع والخمول، ۳/ ۵۷۸، حدیث: ۲۲۴

www.dawateislami.net

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ﱪ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ۝۳۴

(پ۱، البقرۃ: ۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (याद करो) जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए इब्लीस के कि मुन्किर हुवा और गुरूर किया और काफ़िर हो गया।

पस जिस ने भी इब्लीस की त़रह़ ह़क़ के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उसे उस के ईमान ने नफ़्अ़ न दिया।

﴾4﴿.....तकब्बुर ह़क़ को झुटलाने और लोगों को ह़क़ीर समझने का नाम है।(1)

"मुस्लिम" की ह़दीस में येह अल्फ़ाज़ हैं :

﴾5﴿.....तकब्बुर सच्ची बात को झुटलाने और लोगों को ह़क़ीर समझने का नाम है।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍۚ۝۱۸

(پ۲۱، لقمان: ۱۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता।*

﴾6﴿.....रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : अ़ज़मत मेरा तहबन्द है और किब्रियाई मेरी चादर है तो जो इन दो के बारे में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे आग

---

❶... الادب المفرد، باب الكبر، ص۱۵۲، حديث: ۵۵۸

❷... مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانہ، ص۲۰، حديث: ۹۱

www.dawateislami.net

में डाल दूंगा।"[(1)(2)] इसे इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है। ह़दीस में मज़्कूर लफ़्ज़ "مُنَازَعہ" ब मा'ना छीनना है।

﴾7﴿.....जन्नत और जहन्नम ने बाहम झगड़ा किया, जन्नत ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मुझे क्या हुवा कि मुझ में ज़ईफ़ और ऐसे लोग दाख़िल होंगे जिन्हें कोई नहीं पूछता। जहन्नम ने कहा : मुझे जाबिर और मुतकब्बिर लोगों से भर दिया गया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत से फ़रमाया : तू मेरी रह़मत है अपने बन्दों में से जिस पर चाहूंगा तेरे ज़रीए़ उस पर रह़म करूंगा और जहन्नम से फ़रमाया : तू मेरा अ़ज़ाब है अपने बन्दों में से जिस पर चाहूंगा तेरे ज़रीए़ अ़ज़ाब करूंगा।[(3)]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ (پ۲۰، القصص:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।

और इरशाद फ़रमाता है :

1... مسلم، کتاب البر والصلة...الخ، باب تحریم الکبر، ص۱۴۱۲، حدیث:۲۶۲۰
مصنف ابن ابی شیبة، کتاب، باب ماذکر فی الکبر، ۶/ ۲۴۹، حدیث:۲

2.....या'नी मेरे येह औसाफ़ ऐसे हैं जैसा कि तुम्हारे लिये तहबन्द और चादर पस जो इन दो वस्फ़ों में मेरे साथ झगड़ेगा यूं कि वोह अपनी ज़ात के ए'तिबार से तकब्बुर करे या अपनी सिफ़ात के ए'तिबार से मुअ़ज़्ज़म बने और मेरे साथ मेरी ज़ातो सिफ़ात में किसी त़रह़ की शिर्कत करने की कोशिश करे तो मैं उसे आग का अ़ज़ाब दूंगा और वोह मेरे दीदार से मह़रूम रहेगा। (مرقاة المفاتیح، ۸/۸۳۱، تحت الحدیث:۵۱۱۰)

3...مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها...الخ، باب النار یدخلها الجبارون...الخ، ص۱۵۲۴، حدیث:۲۸۴۶

www.dawateislami.net

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿۱۸﴾

(پ۲۱،لقمان:۱۸)

*तर्जमए कन्जुल ईमान : और किसी से बात करने में अपना रुख़्सार कज न कर और ज़मीन में इतराता न चल बेशक **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता ।*

इस आयत का मा'ना येह है कि लोगों से ए'राज़ बरतते और तकब्बुर करते हुवे अपने चेहरे को टेढ़ा मत करो । आयत में मज़्कूर लफ़्ज़ مَرَحًا का मा'ना इतराना है ।

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि बारगाहे रिसालत में एक शख़्स बैठा बाएं हाथ से खाना खा रहा था । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने सीधे हाथ से खा । उस ने कहा : मैं इस की ताक़त नहीं रखता । उस ने येह बात तकब्बुर के तौर पर कही थी, येह सुन कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुझे इस की इस्तिताअ़त न हो । फिर इस के बा'द वोह अपना सीधा हाथ अपने मुंह तक बुलन्द न कर सका ।(1)

इस हदीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है ।

﴾9﴿.....रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में ख़बर न दूं ? हर नाहक़ झगड़ा करने वाला, अकड़ कर चलने वाला और तकब्बुर करने वाला जहन्नमी है ।(2) येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

1... مسلم، کتاب الاشربة، باب اٰداب الطعام والشراب واحکامها، ص۱۱۱۸، حدیث:۲۰۲۱

2... مسلم، کتاب الجنة...الخ، باب النار یدخلها الجبارون...الخ، ص۱۵۲۷، حدیث:۲۸۵۳

www.dawateislami.net

﴾10﴿.....हज़रते सय्यिदुना इकरिमा बिन ख़ालिद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि उन की मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से हुई तो उन्हों ने बयान किया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जो शख़्स भी अपनी चाल में अकड़ता होगा और अपने दिल में खुद को बड़ा जानता होगा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़बनाक होगा।[1] येह ह़दीस इमाम मुस्लिम की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

﴾11﴿.....सब से पहले तीन लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे : (1) (ज़ुल्म व ज़ोर के साथ) ज़बरदस्ती ह़ाकिम बनने वाला (2) वोह मालदार जो ज़कात अदा न करता हो और (3) मुतकब्बिर फ़क़ीर।[2]

बदतरीन मुतकब्बिर

मैं कहता हूं : बदतरीन मुतकब्बिर वोह है जो अपने इ़ल्म के सबब लोगों पर तकब्बुर करे और इ़ल्मी फ़ज़ीलत के सबब अपने आप को दिल में बड़ा जाने। बिलाशुबा ऐसे शख़्स को उस का इ़ल्म नफ़्अ़ नहीं देता और जो शख़्स आख़िरत के लिये इ़ल्म ह़ासिल करता है तो उस का इ़ल्म उस की नफ़्सकुशी करता है, उस के दिल को ख़ाशेअ़ (इन्किसारी करने वाला) और नफ़्स को आ़जिज़ी करने वाला बना देता है। ऐसा शख़्स हर वक़्त अपने नफ़्स की ताक में रहता है, नफ़्स से धोका नहीं खाता बल्कि हर आन नफ़्स का मुह़ासबा करता और उस को उ़यूब से पाक करने में लगा रहता है और अगर बन्दा नफ़्स की चालों से ग़ाफ़िल हो जाए तो येह नफ़्स उसे सिराते़ मुस्तक़ीम से हटा देगा और हलाकत में मुब्तला कर देगा।

1...الادب المفرد، باب الکبر، ص۱۵۷، حدیث:۵۲۰

2...مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/ ۵۲۲، حدیث:۱۰۲۰۹

www.dawateislami.net

जो शख़्स इज़हारे फ़ख़्र और लोगों पर बड़ाई जताने के लिये इल्म सीखे नीज़ इल्मी फ़ज़ीलत की वज्ह से दीगर मुसलमानों को ब नज़रे हक़ारत देखे और उन से अहमक़ाना सुलूक करे और उन्हें अदना तसव्वुर करे तो ऐसा शख़्स अज़ीम तरीन तकब्बुर का शिकार है और जिस शख़्स के दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

गुनाहे कबीरा नम्बर 16

झूटी गवाही देना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ (پ۱۹، الفرقان: ۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो झूटी गवाही नहीं देते।

रिवायात में है कि झूटी गवाही देना शिर्क के बराबर है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَ اجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ۝۳۰ (پ۱۷، الحج: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो दूर हो बुतों की गन्दगी से और बचो झूटी बात से।

(रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से) साबित एक ह़दीसे पाक में है : क़ियामत के दिन झूटी गवाही देने वाले के क़दम अपनी जगह से हट भी न पाएंगे कि उस के लिये जहन्नम वाजिब हो जाएगी।[2]

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الاحکام، باب شھادۃ الزور، ۳/ ۱۲۳، حدیث: ۲۳۷۲

2 ...ابن ماجہ، کتاب الاحکام، باب شھادۃ الزور، ۳/ ۱۲۳، حدیث: ۲۳۷۳

www.dawateislami.net

झूटी गवाही के सबब चार गुनाहों का इर्तिकाब

मैं कहता हूं : झूटी गवाही देने वाला कई बड़े गुनाहों का इर्तिकाब करता है।

पहला गुनाह : झूट और बोहतान है जिस की मज़म्मत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۸﴾ (پ۲۴، المؤمن:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो।

ह़दीसे पाक में है : मोमिन की फ़ित़रत में ख़ियानत और झूट के सिवा हर ख़स्लत हो सकती है।(1)

दूसरा गुनाह : येह है कि झूटी गवाही देने वाला जिस के ख़िलाफ़ गवाही देता उस पर ज़ुल्म करता है ह़त्ता कि उस की झूटी गवाही की वज्ह से उस का माल, इ़ज़्ज़त और जान सब कुछ चला जाता है।

तीसरा गुनाह : जिस के ह़क़ में झूटी गवाही देता है उस पर भी ज़ुल्म करता है कि उस गवाही के ज़रीए़ उस तक माले ह़राम पहुंचता है और वोह उस गवाही के ज़रीए़ उसे लेता है तो उस के लिये जहन्नम वाजिब हो जाता है।

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के लिये मैं उस के भाई के माल में से कुछ फ़ैसला कर दूं ह़ालांकि वोह ह़क़ पर न हो तो उस को चाहिये कि उस को न ले क्यूंकि उस के लिये आग का एक टुकड़ा काटा गया है।(2)

चौथा गुनाह : झूटे गवाह ने उस माल, ख़ून और इ़ज़्ज़त को जाइज़ ठहरा लिया जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ुरमत व इ़स्मत अ़त़ा की थी।

---

1 ... مسند احمد، تتمة مسند الانصار، حدیث ابی امامة الباهلی...الخ، ۸/۲۷۶، حدیث: ۲۲۲۳۲

2 ... مسلم، کتاب الاقضیة، باب الحکم بالظاهر...الخ، ص۹۴۲، حدیث: ۱۷۱۳

www.dawateislami.net

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का माल, ख़ून और इ़ज़्ज़त ह़राम है।(1)

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाहों के बारे में ख़बर न दूं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना। सुनो ! झूटी बात और झूटी गवाही देना (भी बड़ा गुनाह है)। आप इस कलिमे की तकरार फ़रमाते रहे ह़त्ता कि हम ने (शफ़्क़त के बाइ़स दिल में) कहा : काश ! आप सुकूत फ़रमाएं।(2) येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 17

लिवात़त

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में कई मक़ामात पर ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम का क़िस्सा हमारे लिये बयान फ़रमाया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उन के नापाक फ़े'ल के सबब हलाक फ़रमा दिया। मुसलमानों और दीगर तमाम मिल्लतों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि मर्दों के साथ बद फ़े'ली करना बहुत बुरा फ़े'ल है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۵﴾ وَ تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾

(پ۱۹، الشعراء: ۱۶۵، ۱۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने जोरूएं (बीवियां) बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो।

❶...مسلم، کتاب البر والصلة...الخ، باب تحریم ظلم المسلم...الخ، ص۱۳۸۶، حدیث: ۲۵۶۴

❷...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۵۹، حدیث: ۸۷

www.dawateislami.net

लिवात़त ज़िना से कहीं ज़ियादा बढ़ कर बे ह़याई और बुराई का काम है।

लिवात़त की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....बद फ़े'ली करने और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दो।[1] इस ह़दीसे पाक की सनद ह़सन है।

﴿2﴾.....जो क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है।[2]

इस ह़दीसे पाक की सनद भी ह़सन है।

लिवात़त की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : लिवात़त की सज़ा येह है कि ऐसे शख़्स को शहर की सब से बुलन्द इ़मारत से गिरा कर फिर उस पर पथ्थर बरसाए जाएं[3]।[4]

---

1 ...ابو داود، کتاب الحدود، باب فیمن عمل عمل قوم لوط، ۴/ ۲۱۱، حدیث: ۴۴۶۲

2 ...ترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء فی حد اللوطی، ۳/ ۱۳۷، حدیث: ۱۴۶۱

3 .....अह़नाफ़ के नज़दीक : इग़लाम या'नी पीछे के मक़ाम में वत़ी की तो उस की सज़ा येह है कि उस के ऊपर दीवार गिरा दें या ऊंची जगह से उसे औंधा गिराएं और उस पर पथ्थर बरसाएं या उसे क़ैद में रखें यहां तक कि वोह मर जाए या तौबा करे या चन्द बार ऐसा किया हो तो बादशाहे इस्लाम उसे क़त्ल कर डाले। अल ग़रज़ येह फ़े'ल निहायत ख़बीस है बल्कि ज़िना से भी बदतर है, इसी वज्ह से इस में ह़द नहीं कि बा'ज़ों के नज़दीक ह़द क़ाइम करने से इस गुनाह से पाक हो जाता है और येह इतना बुरा है कि जब तक तौबए ख़ालिसा न हो इस में पाकी न होगी और इग़लाम को ह़लाल जानने वाला काफ़िर है, येही मज़हब जमहूर है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 380-381)

4 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الحدود، باب فی اللوطی حد کحد الزنا، ۶/ ۴۹۴، حدیث: ۱

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....औरतों का आपस में शर्मगाहें मिलाना उन का बाहमी ज़िना है।[1] इस ह़दीसे पाक की सनद ज़ईफ़ है।

इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى का मज़हब येह है कि ज़िना और लिवात़त दोनों की ह़द यक्सां है। उम्मते मुस्लिमा का इस पर इजमाअ़ है कि जो शख़्स अपने गुलाम के साथ येह फ़े'ले बद करे वोह लूत़ी और सख़्त गुनहगार है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 18

पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना

तोहमते ज़िना की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَرۡمُوۡنَ الۡمُحۡصَنٰتِ الۡغٰفِلٰتِ الۡمُؤۡمِنٰتِ لُعِنُوۡا فِی الدُّنۡیَا وَ الۡاٰخِرَةِ ۪ وَ لَهُمۡ عَذَابٌ عَظِیۡمٌ ﴿ۙ۲۳﴾ (پ۱۸، النور:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ऐ़ब लगाते हैं अन्जान पारसा ईमान वालियों को उन पर ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

﴾2﴿.....

وَ الَّذِیۡنَ یَرۡمُوۡنَ الۡمُحۡصَنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَاۡتُوۡا بِاَرۡبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجۡلِدُوۡهُمۡ ثَمٰنِیۡنَ جَلۡدَةً (پ۱۸، النور:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो पारसा औ़रतों को ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़इने के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ।

1... مسند ابی یعلی، حدیث واثلة بن الاسقع، ۲/ ۲۸۸، حدیث: ۷۴۵۳

www.dawateislami.net

तोहमते ज़िना की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो। येह कह कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन में भोली भाली पाक दामन मुसलमान औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाने का भी ज़िक्र फ़रमाया।[1]

﴿2﴾.....मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें[2]।[3]

﴿3﴾.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : तेरी मां तुझ पर रोए बे फ़ाइदा व फ़ुज़ूल गुफ़्तगू ही लोगों को (जहन्नम में) औंधे मुंह गिराएगी।[4]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

---

1 ... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص۶۰، حدیث: ۸۹

2 .....मुसलमान से मुराद कामिल मुसलमान है। या'नी वोह शख़्स जो अरकाने इस्लाम पूरी त़रह़ अदा करे और मुसलमान उस के शर से महफ़ूज़ रहें, यूं कि वोह मुसलमानों के हुरमत वाले अमवाल और उन की इ़ज़्ज़तों के दरपे न हो। ज़बान को हाथ पर मुक़द्दम किया कि ज़बान के ज़रीए तक्लीफ़ व ईज़ा पहुंचाना ब कसरत होता है और बहुत तेज़ी से होता है। (فیض القدیر، ۱/ ۳۵۰، ۳۵۱، تحت الحدیث: ۹۲۰۶)

3 ... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تفاضل الاسلام... الخ، ص۴۱، حدیث: ۴۱

4 ... ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمة الصلوة، ۴/ ۲۸۰، حدیث: ۲۶۲۵

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....जिस ने अपने ममलूक (गुलाम या लौंडी) पर ज़िना की तोहमत लगाई अगर वोह ह़क़ीक़त में ऐसा न हो जैसा उस ने कहा तो बरोज़े क़ियामत उसे ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी[1]।[2]

जो बदबख़्त उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की आसमान से बराअत नाज़िल हो जाने के बा'द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर (مَعَاذَاللّٰہ) तोहमते ज़िना लगाए वोह पक्का काफ़िर और क़ुरआन को झुटलाने वाला है। ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जाएगा।

पहली सफ़

❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** लोग अगर जानते कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है तो बिग़ैर क़ुरआ डाले न पाते, लिहाज़ा इस के लिये क़ुरआ अन्दाज़ी करते।

(مسلم، کتاب الصلوۃ، باب تسویۃ الصفوف واقامتھا.....الخ، ص۲۳۱، حدیث: ۴۳۷)

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب التغلیظ علی من قذف مملوکہ بالزنا، ص۹۰۵، حدیث: ۱۶۶۰

2 .....अल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : ह़द्दे क़ज़्फ़ दुन्या में नहीं लगेगी कि ह़द्दे क़ज़्फ़ के लिये शर्त़ है कि जिस पर तोहमत लगाई गई हो वोह मोह़सिन हो और एह़सान के तह़क़्क़ुक़ की एक शर्त़ आज़ाद होना भी है। आख़िरत में मालिक को ह़द इस लिये लगाई जाएगी कि अब उस मालिक की मजाज़ी मिल्कियत भी ख़त्म हो चुकी अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की ह़ुकूमत होगी, कोई आक़ा और ग़ुलाम न होगा, बस अहले तक़्वा ही को फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी। (فیض القدیر، ۶/۲۵۴، تحت الحدیث: ۸۹۲۰)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 19

माले ग़नीमत[1], बैतुल माल और ज़कात के माल में ख़ियानत करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ

(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि वोह कुछ छुपा रखे और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा।

ख़ियानत की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्द क़बीले के एक शख़्स जिसे इब्ने लुतबिया कहा जाता था सदक़ात वुसूल करने पर मुक़र्रर किया। पस जब सदक़ात की वुसूल याबी के बा'द वोह वापस आया तो उस ने कहा : येह आप के लिये है और येह मुझे तोह्फ़ा मिला है। येह सुन कर आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : मैं तुम में से किसी शख़्स को किसी काम पर मुक़र्रर करता हूं तो वोह कहता है कि येह तुम्हारे लिये है और येह मुझे तोह्फ़े में मिला है। अगर वोह सच्चा है तो अपने वालिदैन के घर ही क्यूं बैठा न रहा ह़त्ता कि उस का तोह्फ़ा उसे पहुंच जाता। ख़ुदा की क़सम ! तुम में से कोई शख़्स

1 .....ग़नीमत उस को कहते हैं जो लड़ाई में काफ़िरों से बत़ौरे क़ह्र व ग़लबे के लिया जाए। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 9, 2/434)

www.dawateislami.net

कोई शै नाहक़ नहीं लेता मगर येह कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बरोज़े क़ियामत इस हाल में मिलेगा कि वोह शख़्स उस चीज़ को उठाए हुवे होगा। पस मैं तुम में से किसी की ऐसी हालत न पहचानूं कि वोह बिलबिलाता हुवा ऊंट या डकराती गाए या मिनमिनाती हुई बकरी उठाए हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करे। फिर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों हाथों को बुलन्द कर के अर्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरा फ़रमान पहुंचा दिया है।[1]

माले ग़नीमत में ख़ियानत का अन्जाम

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : हम ग़ज़वए ख़ैबर में शिर्कत के लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ निकले। (हमें फ़त्ह नसीब हुई) बत़ौरे ग़नीमत हमें सोना चांदी नहीं बल्कि सामान, खाना और कपड़े मिले। फिर हम एक वादी की त़रफ़ चले। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह आप का एक ग़ुलाम भी था जो कि बनू जुज़ाम क़बीले के एक फ़र्द ने बत़ौरे तोह़फ़ा आप को पेश किया था। जब हम लोग वादी में उतर गए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह ग़ुलाम खड़े हो कर कजावा खोलने लगा, इसी दौरान उसे एक तीर लगा और वोह इन्तिक़ाल कर गया। हम ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस शख़्स को शहादत मुबारक हो। येह सुन कर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हरगिज़ नहीं ! बिलाशुबा वोह चादर जो ग़ज़वए ख़ैबर के दिन माले ग़नीमत तक़्सीम होने से पहले ही उस ने रख ली थी वोह आग की सूरत में उस पर शो'लाज़न है। रावी फ़रमाते हैं : येह सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان घबरा गए। एक शख़्स एक या दो तस्मे ले

[1] ... مسلم، کتاب الامارۃ، باب تحریم ھدایا العمال، ص۱۰۱۹، حدیث: ۱۸۳۲

www.dawateislami.net

कर आया। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह आग का है या (फ़रमाया) येह दोनों आग के तस्मे हैं।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

माले ग़नीमत में ख़ियानत करने वाले की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने माले ग़नीमत में ख़ियानत करने वाले के माल को जला दिया और ख़ाइन की पिटाई भी लगाई।[2][3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामान व अस्बाब पर एक शख़्स मुक़र्रर था जिसे किरकिरा कहा जाता था उस का इन्तिक़ाल हुवा तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم الغلول...الخ، ص۷۲، حدیث: ۱۱۵

2 .....इस ह़दीस की बिना पर ख़्वाजा ह़सन बसरी वग़ैरहुम फ़ुक़हा (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی) ने फ़रमाया कि सिवा जानवर, ग़ुलाम, क़ुरआने मजीद के बाक़ी सामाने मग़्सूबा जला दिया जाए। इमाम अह़मद व इस्ह़ाक़ (رَحِمَهُمَا اللهُ) ने फ़रमाया कि येह माले मग़्सूबा न जलाया जाए कि येह तो मुजाहिदीन का ह़क़ है। ग़ासिब का ख़ुद अपना वोह माल जला दिया जाए जिसे ले कर वोह मैदाने जिहाद में गया था। इमामे आ'ज़म व शाफ़ेई व मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि : येह अ़मले शरीफ़ ज़ज्र था। अब उस का कोई माल जलाया न जाएगा बल्कि उसे ता'ज़ीर व सज़ा दी जाएगी। चुनान्चे, बा'ज़ अह़ादीस में है कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ग़ाली (ख़ाइन) को सज़ा दी मगर उस का माल जलाया नहीं नीज़ इस ह़दीस से येह भी मा'लूम होता है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, उ़स्माने ग़नी, अ़ली मुर्तज़ा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने भी जलाया नहीं लिहाज़ा येह अ़मल फ़क़त ज़ज्रो तौबीख़ के लिये था। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 623, 624)

3 ...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی عقوبة الغال، ۳/ ۹۳، حدیث: ۲۷۱۵

www.dawateislami.net

फ़रमाया : वोह आग में है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जा कर उस के सामान को देखा तो उस में उन्हों ने एक कम्बल पाया जिसे उस ने ख़ियानत से ले लिया था।[1]

इस बारे में अहादीसे मुबारका बहुत हैं जिन में से कुछ ज़ुल्म के बाब में आएंगी।

ज़ुल्म की अक़्साम

ज़ुल्म की तीन क़िस्में हैं : (1) बातिल तरीक़े से लोगों का माल खा लेना। (2) लोगों को क़त्ल, मार पीट, हड्डियां तोड़ कर और ज़ख़्मी कर के उन पर ज़ुल्म करना और (3) लोगों को गालियां दे कर, ला'न ता'न, बुरा भला कह कर और ज़िना की तोहमत लगा कर उन पर ज़ुल्म ढाना।

रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिना में खुतबा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : बिलाशुबा तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी इज़्ज़तें तुम (में एक दूसरे) पर ऐसे हराम हैं जैसे आज के दिन की तुम्हारे इस महीने और तुम्हारे इस शहर की हुरमत है।[2] येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾3﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर तहारत के नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता और ख़ियानत के माल से सदक़ा क़बूल नहीं करता।[3]

﴾4﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : एक शख़्स ने ग़ज़वए ख़ैबर में ख़ियानत की थी, हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा नहीं

---

❶...بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب القلیل من الغلول، ۲/ ۳۳۲، حدیث: ۳۰۷۴

❷...بخاری، کتاب المغازی، باب حجة الوداع، ۳/ ۱۴۱، حدیث: ۴۴۰۶

❸...مسلم، کتاب الطهارة، باب وجوب الطهارة للصلاة، ص ۱۴۰، حدیث: ۲۲۴

www.dawateislami.net

पढ़ी और फ़रमाया : "तुम्हारे साथी ने राहे ख़ुदा में ख़ियानत की है।" येह ख़बर सुन कर हम ने उस के सामान की तलाशी ली तो उस में एक मोती पाया जिस की क़ीमत दो दिरहम के बराबर थी।[1]

इस ह़दीस को इमाम अबू दावूद और इमाम नसाई (رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰی) ने रिवायत किया है।

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : हम नहीं जानते कि ख़ाइन और ख़ुदकुशी करने वाले[2] के इ़लावा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना तर्क की हो।[3]

---

1 ...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی تحریم الغلول...الخ، ۳/ ۹۱، حدیث: ۲۷۱۰

2 .....जिस ने ख़ुदकुशी कर ली इन्दल अह़नाफ़ मुफ़्ता बेह क़ौल के मुत़ाबिक़ उसे ग़ुस्ल भी दिया जाएगा और उस का जनाज़ा भी पढ़ा जाएगा। रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना येह लोगों को इस फ़े'ल से बाज़ रखने के लिये बत़ौरे ज़ज्रो तौबीख़ था। (الدر المختار و رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز، ۳/ ۱۲۷)

उ़लमा व फ़ुज़ला अगर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुवे ब ग़र्ज़े ज़ज्र ऐसे शख़्स की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें तो ह़रज नहीं।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, 5 / 108)

3 .....किन लोगों की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी : (1) बाग़ी जो इमामे बर ह़क़ पर नाह़क़ ख़ुरूज करे और बग़ावत की ह़ालत में मारा जाए। (2) डाकू जब कि डाका डालने की ह़ालत में मारा जाए। (3) जो लोग नाह़क़ पासदारी में लड़ें और इसी ह़ालत में मारे जाएं। (4) जो लोग नाह़क़ पासदारी में लड़ने वाले का तमाशा देख रहे हों और उन को पथ्थर या तीर या गोली वग़ैरा लगी और मर गए। (5) जो किसी मुसलमान का गला घोंट कर मार डाले उस गला घोंटने वाले की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी और जो गला घोंटने से मरा है उस की नमाज़े जनाज़ा है। (6) जो लोग रात में हथयार ले कर लूट मार करें और इसी ह़ालत में मारे जाएं। (7) जिस ने अपने बाप या मां को मार डाला हो उस बद नसीब की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी। (8) जो किसी मुसलमान का माल छीन रहा था और उसी ह़ालत में मारा गया।

(ह़ाशिया फ़तावा अमजदिय्या, बाबुज्जनाइज़, 1 / 307)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 20

नाजाइज़ व बातिल त़रीके़ से लोगों का माल ले कर ज़ुल्म करना

ज़ुल्मन लोगों के माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِیْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۠﴿۱۸۸﴾ (پ۲، البقرة:۱۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजाइज़ त़ौर पर खा लो जान बूझ कर ।(1)

﴾2﴿.....

اِنَّمَا السَّبِیْلُ عَلَى الَّذِیْنَ یَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ﴿۴۲﴾ (پ۲۵، الشورٰی:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुवाख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सर्कशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है ।

1.....इस आयत में बातिल त़ौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया है। इस की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं : किसी का माल ग़सब कर लेना, किसी का माल लूट लेना, लह्वो लइ़ब के नतीजे में दूसरे का माल ले लेना, जैसे जूए के ज़रीए माल ह़ासिल करना, या गाने वाली का गाना बजा कर उस की उजरत लेना, रिश्वत लेना, दूसरे के माल में ख़ियानत करना, येह आयत इन तमाम अक़्साम के कामों को शामिल है । (تفسیر البغوی،پ۲،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۱۸۸، ۱/ ۱۱۴)

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝۸ (پ۲۵، الشورٰی:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार।

ज़ुल्मन लोगों के माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....ज़ुल्म क़ियामत के दिन अन्धेरियों की सूरत में होगा।[(1)]

﴾2﴿.....जो ज़ुल्मन किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन ले लेगा उसे बरोज़े क़ियामत सात ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाएगा।[(2)]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ (پ۵، النساء:۴۰)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता।*

﴾3﴿.....एक दफ़्तर ऐसा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में से कुछ भी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाएगा और वोह दफ़्तर लोगों पर ज़ुल्म करने के मुआ़मलात पर मुश्तमिल है।[(3)]

﴾4﴿.....मालदार शख़्स का (हुक़ूक़ की अदाएगी में) टाल मटोल से काम लेना ज़ुल्म है।[(4)]

सब से बड़ा ज़ुल्म

सब से बड़ा ज़ुल्म दूसरों का माल लेने के लिये झूटी क़सम खाना है।

❶...مسلم، کتاب البر والصلۃ والاداب، باب تحریم الظلم، ص۱۳۹۴، حدیث:۲۵۷۹
❷...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب تحریم الظلم وغصب الارض وغیرھا، ص۸۷۰، حدیث:۱۶۱۲
❸...مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، ۱۰/ ۸۲، حدیث:۲۶۰۹
❹...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب تحریم مطل الغنی، ص۸۴۵، حدیث:۱۵۶۴

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने क़सम की वज्ह से किसी मुसलमान शख़्स का हक़ मार लिया तो बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये जहन्नम को वाजिब कर दिया। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह मा'मूली चीज़ हो ? इरशाद फ़रमाया : अगर्चे वोह पीलू की मिस्वाक ही हो।[1]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾6﴿.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे हम ने किसी काम पर मुक़र्रर किया फिर उस ने हम से सूई या उस से बढ़ कर कोई चीज़ छुपाई तो येह ख़ियानत है, वोह उस चीज़ को बरोज़े क़ियामत ले कर आएगा।[2] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

﴾7﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : (ग़ज़वए ख़ैबर की ग़नीमत में से) एक चादर जो गुलाम ने बत़ौरे ख़ियानत दबा ली थी वोह (मरने के बा'द) उस पर आग बन कर शो'लाज़न है। येह फ़रमाने इ़ब्रत निशान सुन कर एक शख़्स खड़ा हो कर गया और एक तस्मा ले आया जिसे उस ने माले ग़नीमत की तक़्सीम से पहले ले लिया था (उस को देख कर) नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह आग का तस्मा है।[3]

1 ... مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم...الخ، ص ۸۳، حدیث: ۱۳۷

2 ... مسلم، کتاب الامارۃ، باب تحریم ھدایا العمال، ص ۱۰۲۰، حدیث: ۱۸۳۳

3 ... مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم الغلول...الخ، ص ۷۲، حدیث: ۱۱۵

www.dawateislami.net

क़र्ज़ मुआफ़ न होगा

﴾8﴿.....एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं सब्र करते हुवे सवाब की उम्मीद से पीछे हटते नहीं बल्कि आगे बढ़ते हुवे मारा जाऊं तो क्या येह अ़मल मेरी ख़त़ाओं को मिटा देगा ? इरशाद फ़रमाया : हां क़र्ज़ के सिवा ।[1] इसे इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया ।

﴾9﴿.....बिलाशुबा कुछ लोग नाहक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल में दस्त दराज़ी करते हैं बरोज़े क़ियामत उन के लिये आग होगी[2]।[3]

इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

ह़राम से पलने वाला जिस्म जहन्नमी है

﴾10﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से इरशाद फ़रमाया : जो गोश्त ह़राम से नश्वो नुमा पाएगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, आग उस की ज़ियादा ह़क़दार है ।[4]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) की शर्त़ पर सह़ीह़ है ।

---

1 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل فی سبیل اللہ کفرت خطایاہ...الخ، ص ۱۰۴۶، حدیث: ۱۸۸۵

2 .....बा'ज़ लोग ज़कात, ग़नीमत, फ़ै वग़ैरा पर नाजाइज़ क़ब्ज़ा व तसर्रुफ़ करते हैं । अगर येह ह़लाल समझ कर करते हैं तो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे अगर ह़राम समझ कर करते हैं तो फ़ासिक़ हैं, दोज़ख़ में सज़ा के लिये जाएंगे ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 612)

3 ...بخاری، کتاب فرض الخمس، باب قول اللہ تعالی: فان للہ خمسہ، ۲/ ۳۴۶، حدیث: ۳۱۱۸

4 ...مستدرک حاکم، کتاب الاطعمۃ، باب لا یدخل الجنۃ لحم نبت من سحت، ۵/ ۱۷۵، حدیث: ۷۲۴۵

www.dawateislami.net

﴾11﴿...हराम से पलने वाला जिस्म जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।[1]

इस ह़दीसे पाक की वईद के तह़्त नाजाइज़ टेक्स वुसूल करने वाला, डाकू, चोर, मस्ख़रा (Comedian), ख़ाइन, जा'लसाज़ और उधार चीज़ ले कर इन्कार कर देने वाला, नाप तोल में कमी करने वाला, लुक़्त़ा उठा कर हड़प कर लेने वाला, ऐबज़्दा चीज़ को ऐब छुपा कर बेचने वाला, जुवा खेलने वाला और ऐसा दल्लाल (कमीशन ऐजन्ट) जो ख़रीदार को ज़ाइद रक़म बताए और शै बेच कर ज़ाइद रक़म ख़ुद खा जाए, येह सब के सब दाख़िल हैं। وَاللّٰہُ اَعْلَم

गुनाहे कबीरा नम्बर 21

चोरी करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَیْدِیَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۳۸﴾

(پ۶، المائدۃ:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो मर्द या औ़रत चोर हो तो उन का हाथ काटो उन के किये का बदला अल्लाह की त़रफ़ से सज़ा और अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।[2]

---

1 ... مسند ابی یعلی، مسند ابی بکر الصدیق، ۱/ ۵۷، حدیث: ۷۹

2 .....(जो मर्द या औ़रत चोर हो) और उस की चोरी दो मरतबा के इक़रार या दो मर्दों की शहादत से ह़ाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है वोह दस दिरहम से कम का न हो। (तो उन का हाथ काटो) या'नी दाह़ना इस लिये कि ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की क़िराअत में "ایمانھما" आया है।

मस्अला : पहली मरतबा की चोरी में दाह़ना हाथ काटा जाएगा फिर दोबारा अगर करे तो बायां पाउं। इस के बा'द भी अगर चोरी करे तो क़ैद किया जाए यहां तक कि तौबा करे। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 5, सूरतुल माइदह, तह़्तुल आयह : 38)

www.dawateislami.net

चोरी की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चोर पर ला'नत फ़रमाए जो रस्सी चुराता है तो उस का हाथ काट दिया जाता है (1)।(2)

﴾2﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बेटी फ़ाति़मा चोरी करती तो मैं ज़रूर उस का भी हाथ काट देता।(3)

﴾3﴿.....ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता और चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं होता लेकिन इन अफ़्आ़ल के बा वुजूद तौबा की गुन्जाइश बाक़ी रहती है।(4) येह ह़दीस सह़ीह़ है।

﴾4﴿.....आगाह हो जाओ बिलाशुबा (कबीरा गुनाह) चार हैं : (1) तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराओ (2) जिस जान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया है उसे नाह़क़ क़त्ल न करो (3) ज़िना मत करो और (4) चोरी मत करो।(5)

मैं कहता हूं कि चोर की तौबा उसी वक़्त मुफ़ीद है जब कि वोह चुराया हुवा माल मालिक को लौटा दे और अगर चोर मुफ़्लिस हो तो मुआ़फ़ी तलाफ़ी करा ले।

1.....ह़दीस में अन्डा और रस्सी चुराने का अन्जाम बताया गया है कि इस त़रह़ येह मा'मूली चोरियां करते करते बन्दा चोरी के निसाब की मिक़्दार माल चुरा लेता है और बिल आख़िर उस का हाथ काट दिया जाता है वरना फ़क़त़ अन्डा या रस्सी चुराने पर हाथ नहीं काटा जाता कि उन की मालिय्यत चोरी के निसाब को नहीं पहुंचती। (فیض القدیر،۵/۳۴۴،تحت الحدیث:۷۲۶۰)

2...مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق...الخ، ص۹۲۶، حدیث:۱۶۸۷

3...مسلم، کتاب الحدود، باب قطع السارق...الخ، ص۹۲۷، حدیث:۱۶۸۸

4...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی، ص۴۸، حدیث:۵۷

5...مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث رفاعۃ بن الزرقی، ۷/۱۸، حدیث:۱۹۰۱۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 22

डाका डालना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ یُّقَتَّلُوْۤا اَوْ یُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ اَیْدِیْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ یُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْیٌ فِی الدُّنْیَا وَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ۟ۙ

(پ۶، المائدة: ۳۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह कि अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं येह दुन्या में उन की रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब ।

जब मुसाफ़िरों को फ़क़त ख़ौफ़ज़दा करने वाला भी शरीअ़त की नज़र में कबीरा गुनाह का मुर्तकिब है तो जब वोह लोगों का माल भी छीन ले तो कैसा सख़्त मुआ़मला होगा ! और अगर वोह लोगों को ज़ख़्मी कर दे या क़त्ल कर दे तो कैसा संगीन मुआ़मला होगा ! और वोह मुतअ़द्दिद गुनाहों का मुर्तकिब क़रार पाएगा । इस फ़े'ल के करने के साथ साथ उन लोगों का नमाज़ों को छोड़ देने और डाके के माल को शराब नोशी और ज़िनाकारी में ख़र्च करने वग़ैरा का आदी होने का गुनाह मज़ीद बरआं है ।

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 23

झूटी क़सम खाना

नाजाइज़ क़समों की मज़म्मत में सात फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कबीरा गुनाह येह हैं : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (3) (नाहक़) किसी जान को क़त्ल करना और (4) झूटी क़सम खाना।[1]

इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

यमीने ग़मूस उस क़सम को कहते हैं जिस में बन्दा अ़मदन झूट बोलता है। इस क़सम को ग़मूस इस लिये कहते हैं कि इस त़रह़ की क़सम खाने वाला शख़्स गुनाह में डूब जाता है।

﴿2﴾.....एक शख़्स ने कहा : खुदा की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फुलां शख़्स की मग़फ़िरत नहीं फ़रमाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : येह कौन है जो मुझ पर क़सम खा रहा है कि मैं फुलां की मग़फ़िरत नहीं करूंगा। बेशक मैं ने उस की मग़फ़िरत कर दी और इस के अ़मल को अकारत कर दिया है।[2]

﴿3﴾.....तीन लोगों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन कलाम फ़रमाएगा न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : (1) (तकब्बुर से) अपना तहबन्द लटकाने वाला (2) एह़सान जताने वाला और (3) झूटी क़सम खा कर सौदा बेचने वाला।[3]

---

1 ... بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب الیمین الغموس، ۴/ ۲۹۵، حدیث: ۶۶۷۵

2 ... مسلم، کتاب البر والصلۃ والاداب، باب النھی عن تقنیط الانسان... الخ، ص ۱۴۱۲، حدیث: ۲۶۲۱

3 ... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار... الخ، ص ۶۷، حدیث: ۱۰۶

www.dawateislami.net

ग़ैरुल्लाह की क़सम

﴾4﴿.....जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी की क़सम खाई बिलाशुबा उस ने कुफ़्र किया।(1)

एक रिवायत में है : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक उस ने शिर्क किया(2)।(3) इस ह़दीस की सनद इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

﴾5﴿.....जिस ने इस लिये क़सम खाई कि इस के ज़रीए़ किसी मुसलमान का माल ह़ासिल कर ले वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ज़बनाक होगा। अ़र्ज़ की गई : अगर्चे वोह मा'मूली चीज़ हो ? इरशाद फ़रमाया : अगर्चे वोह पीलू की मिस्वाक हो।(4)

अ़स्र के बा'द झूटी क़सम खाने और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर शरीफ़ के पास झूटी क़सम खाने का गुनाह ज़ियादा सख़्त है। येह बात ब त़रीक़े सह़ीह़ मन्क़ूल है।(5)

---

1 ...ترمذی، کتاب النذور والایمان، باب ماجاء فی کراھیۃ الحلف بغیر اللہ، ۳/ ۱۸۵، ص ۱۸۵

2 .....इस से मुराद येह है कि जो मुशरिकों की त़रह़ कि जिस ए'तिक़ाद से वोह मुशरिकीन बुतों की क़समें खाते थे ग़ैरे ख़ुदा की क़सम खाए। शारेह़ीन ने इस ह़दीस की शर्ह़ बयान करते हुवे इस का येह मत़लब बयान फ़रमाया है कि जो ग़ैरे ख़ुदा की ता'ज़ीम के ए'तिक़ाद से उस की क़सम खाए तो शिर्क होगा।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा मुस्त़फ़विय्या, स. 522)

3 ...ابوداود، کتاب الایمان والنذور، باب فی کراھیۃ الحلف بالآباء، ۳/ ۳۰۱، حدیث: ۳۲۵۳

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب وعید من اقتطع حق مسلم بیمین...الخ، ص ۸۳، حدیث: ۱۳۷

5 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار...الخ، ص ۶۸، حدیث: ۱۰۸

سنن کبری للنسائی، کتاب القضاء، باب الیمین علی المنبر، ۳/ ۴۹۲، حدیث: ۶۰۱۹

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....जिस ने क़सम खाई और अपनी क़सम में कहा : "लात और उ़ज़्ज़ा की क़सम !" तो वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह ले[1]।[2] येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

बा'ज़ नए नए इस्लाम क़बूल करने वाले सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़सम खाते वक़्त सबक़ते लिसानी की वज्ह से लातो उ़ज़्ज़ा नामी बुतों की क़सम खा लेते और याद आने पर फ़ौरन لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़ लिया करते थे।

﴾7﴿.....कोई बन्दा इस मिम्बरे रसूल के पास झूटी क़सम नहीं खाएगा अगर्चे तर मिस्वाक ह़ासिल करने के लिये हो मगर येह कि उस पर जहन्नम वाजिब हो जाएगा।[3]

इस ह़दीसे पाक को इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है।

गुस्सा ईमान को ख़राब करता है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : गुस्सा ईमान को इस त़रह़ ख़राब करता है जिस त़रह़ ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है।

(شعب الایمان للبیہقی، ۶/ ۳۱۱، حدیث: ۸۲۹۴)

---

1 ... بخاری، کتاب الایمان، باب لا یحلف باللات والعزی...الخ، ۴/ ۲۸۸، حدیث: ۶۶۵۰

2 ....."वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे" इस फ़रमान के दो मा'ना हैं : पहला मा'ना येह है कि जो शख़्स नया नया मुसलमान हुवा हो ह़स्बे आ़दत उस के मुंह से येह बात सह्वन निकल जाए तो वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह ले या'नी इन कलिमात को अदा करने के कफ़्फ़ारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ले कि नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं तो गोया येह ग़फ़्लत बरतने से तौबा होगी और दूसरा मा'ना येह है कि जो शख़्स लात व उ़ज़्ज़ा की ता'ज़ीम के इरादे से उन की क़सम खाए तो वोह तजदीदे ईमान करने के लिये لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहे और इस सूरत में येह गुनाह से तौबा की सूरत होगी। (مرقاۃ المفاتیح، ۶/ ۵۸۰، ۵۸۱، تحت الحدیث: ۳۴۰۹)

3 ... مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/ ۶۰۲، حدیث: ۱۰۷۱۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 24

झूट बोलना(1)

❶.....**झूट की ता'रीफ़ :** किसी के बारे में ख़िलाफ़े हक़ीक़त ख़बर देना। क़ाइल गुनहगार उस वक़्त होगा जब कि (बिला ज़रूरत) जान बूझ कर झूट बोले।

(الحدیقۃ الندیۃ، القسم الثانی، المبحث الاول، ۲/۱۰)

कहां झूट बोलना जाइज़ है? तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह नहीं **: एक** जंग की सूरत में कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, इसी त़रह़ जब ज़ालिम ज़ुल्म करना चाहता हो उस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी जाइज़ है। **दूसरी** सूरत येह है कि दो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह इन दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है मसलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए। **तीसरी** सूरत येह है कि बीबी को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह शख़्स झूटा नहीं है जो लोगों के दरमियान में इस्लाह़ करता है, अच्छी बात कहता है और अच्छी बात पहुंचाता है।"

तिरमिज़ी ने अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : झूट कहीं ठीक नहीं मगर तीन जगहों में, मर्द अपनी औ़रत को राज़ी करने के लिये बात करे और लड़ाई में झूट बोलना और लोगों के दरमियान में सुल्ह़ कराने के लिये झूट बोलना। जिस अच्छे मक़्सद को सच बोल कर भी ह़ासिल किया जा सकता हो और झूट बोल कर भी ह़ासिल कर सकता हो, उस के ह़ासिल करने के लिये झूट बोलना ह़राम है और अगर झूट से ह़ासिल कर सकता हो, सच बोलने में ह़ासिल न हो सकता हो तो बा'ज़ सूरतों में किञ्चि भी मुबाह़ है बल्कि बा'ज़ सूरतों में वाजिब है जैसे किसी बे गुनाह को ज़ालिम शख़्स क़त्ल करना चाहता है या ईज़ा देना चाहता है वोह डर से छुपा हुवा है, ज़ालिम ने किसी से दरयाफ़्त किया कि वोह कहां है? येह कह सकता है मुझे मा'लूम नहीं अगर्चे जानता हो या किसी की अमानत उस के पास है कोई उसे छीनना चाहता है पूछता है कि अमानत कहां है? येह इन्कार कर सकता है, कह सकता है कि मेरे पास उस की अमानत नहीं। अगर सच बोलने में फ़साद पैदा होता हो तो इस सूरत में भी झूट बोलना जाइज़ है और अगर झूट बोलने में फ़साद होता हो तो ह़राम है और अगर शक हो मा'लूम नहीं कि सच बोलने में फ़साद होगा या झूट बोलने में, जब भी झूट बोलना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा.16, 3/517, 518 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

झूट के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۸﴾ (پ۲۴، المؤمن:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो ह़द से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो।

﴿2﴾.....

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿۱۰﴾ (پ۲۶، الذّٰریٰت:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मारे जाएं दिल से तराशने वाले।

﴿3﴾.....

ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِیْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۳، اٰل عمرٰن:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की ला'नत डालें।

झूट की मज़म्मत में 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....बेशक झूट फ़िस्क़ो फ़ुजूर की त़रफ़ ले जाता है और बेशक फ़िस्क़ो फ़ुजूर जहन्नम तक ले जाता है और एक शख़्स झूट बोलता रहता है ह़त्ता कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक कज़्ज़ाब (बहुत बड़ा झूटा) लिख दिया जाता है।[1]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

1...مسلم، کتاب البر والصلة والاداب، باب قبح الکذب...الخ، ص۱۴۰۵، حدیث:۲۶۰۷

www.dawateislami.net

मुनाफ़िक़ की निशानियां

﴾2﴿.....मुनाफ़िक़[1] की तीन निशानियां हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो पूरा न करे और (3) जब उस के पास अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करे ।[2]

﴾3﴿.....जिस में चार ख़स्लतें हों वोह पक्का मुनाफ़िक़ है और जिस में इन में से एक ख़स्लत हो उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत है ह़त्ता कि वोह इसे छोड़ दे : (1) जब उस के पास अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करे (2) जब बात करे तो झूट बोले (3) जब वा'दा करे तो पूरा न करे और (4) जब झगड़े तो गाली दे ।[3]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

झूटा ख़्वाब बयान करने पर वईद

﴾4﴿.....जिस ने वोह ख़्वाब बयान किया जो देखा नहीं था तो उसे बरोज़े क़ियामत, इस बात की तक्लीफ़ दी जाएगी कि वोह जव के दो दानों के दरमियान गिरह लगाए और वोह हरगिज़ ऐसा न कर सकेगा ।[4] इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

---

1 .....निफ़ाक़ का लुग़वी मा'ना बातिन का ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होना है । अगर ए'तिक़ाद और ईमान के बारे में येह ह़ालत हो तो इसे निफ़ाक़े कुफ़्र कहते हैं और अगर आ'माल के बारे में हो तो उसे निफ़ाक़े अ़मली कहते हैं और यहां ह़दीस में येही मुराद है । (فیض القدیر، ۱/ ۵۹۳، تحت الحدیث: ۹۱۶)

2 ... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، ص ۵۰، حدیث: ۵۹

3 ... بخاری، کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ص ۲۵، حدیث: ۳۴

4 ... بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ۴/ ۴۲۲، حدیث: ۷۰۴۲

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....बिलाशुबा बदतरीन झूट येह है कि आदमी अपनी आंखों को वोह दिखलाए जो उन्हों ने नहीं देखा।[1] इस ह़दीस को भी इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़्वाब के सिलसिले में एक त़वील ह़दीसे पाक मरवी है जिस में उस मर्द का ज़िक्र है जिसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस ह़ालत में देखा था कि उस की बाछों को गुद्दी तक और गुद्दी को बाछों तक चीरा जा रहा था। (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर बताया गया :) येह वोह शख़्स था जो अपने घर से सुब्ह़ निकलता तो एक ऐसा झूट बोलता जो दुन्या के किनारों तक पहुंच जाता[2]।[3]

﴾6﴿.....झूट और ख़ियानत के इलावा मोमिन की त़बीअ़त में हर बात हो सकती है।[4]

येह रिवायत दो ज़ईफ़ असनाद के साथ मरवी है।

---

1 ...بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ۴/ ۴۲۳، حدیث: ۷۰۴۳

2 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 244 पर इस ह़दीस के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : या'नी झूट का मूजिद झूट घड़ने वाला और लोगों में झूट फैलाने वाला जिस से और लोग भी झूट बोलें, उस में दुन्यावी झूटे भी दाख़िल हैं और दीनी झूटे भी, जो बे दीनी का मूजिद झूटा दीन घड़ कर लोगों में शाएअ़ करे लोग उस झूट की तस्दीक़ करें वोह भी इसी जुमरे में है, मसलन मिर्ज़ा ने कहा मैं नबी हूं येह झूट घड़ा फिर उस के मुत्तबेईन ने कहा : हां वाक़ेई वोह नबी है येह हुई उस झूट की इशाअ़त। ग़र्ज़ कि ग़लत़ बात, ग़लत़ मस्अला, ग़लत़ अ़क़ीदा ईजाद करने वालों का येह अन्जाम है।

3 ...بخاری، کتاب التعبیر، باب تعبیر الرؤیۃ بعد صلاۃ الصبح، ۴/ ۴۲۵، حدیث: ۷۰۴۷

4 ...مسند احمد، تتمۃ مسند الانصار، حدیث ابی امامۃ...الخ، ۸/ ۲۷۶، حدیث: ۲۲۲۳۲

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....तोरिया[1] के सबब झूट की ह़ाजत नहीं रहती ।[2]

﴾8﴿.....आदमी के गुनहगार होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात को बयान कर दे ।[3] इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

﴾9﴿.....न दी हुई चीज़ का ज़ाहिर करने वाला दो झूटे कपड़े पहनने वाले की त़रह़ है ।[4][5] इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

सब से बड़ी झूटी बात

﴾10﴿.....तुम बद गुमानी से बचो क्यूंकि बिलाशुबा येह सब से बड़ी झूटी बात है[6]।[7]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

---

1 .....तोरिया या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर उस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं, ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है । तोरिया की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है : मैं ने खाना खा लिया । इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि उस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3/518)

2 ...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الادب، باب من كره المعاريض...الخ، ٦/ ١٨٥، حديث: ٣

3 ...مسلم، المقدمة، باب النهي عن الحديث بكل ما سمع، ص ٨، حديث: ٥

4 ...مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب النهي عن التزوير في اللباس...الخ، ص ١١٧٧، حديث: ٢١٣٠

5 .....या'नी कोई शख़्स अमानत या आ़रियत के आ'ला कपड़े पहन कर फिरे लोग समझें कि इस के अपने कपड़े हैं फिर बा'द में ह़ाल खुलने में बदनामी भी हो गुनाह भी, ऐसे येह भी है या जैसे कोई फ़ासिक़ो फ़ाजिर मुत्तक़ी का लिबास पहन कर सूफ़ी बना फिरे फिर ह़ाल खुलने पर रुस्वा हो ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/114)

6 .....बिग़ैर किसी दलील के दिल में पैदा होने वाली तोहमत को बद गुमानी कहते हैं । (فيض القدير، ٣/ ١٥٧، حديث: ٢٩٠١)

7 ...مسلم، كتاب البر والصلة والاداب، باب تحريم الظن والتجسس...الخ، ص ١٣٨٦، حديث: ٢٥٦٣

www.dawateislami.net

﴿11﴾.....(बरोज़े क़ियामत) तीन शख़्सों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कलाम नहीं फ़रमाएगा। उन में एक झूटा बादशाह भी है।[1] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया।

गुनाहे कबीरा नम्बर 25

ख़ुदकुशी करना

ख़ुदकुशी के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًاؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآىٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ نُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾ (پ۵، النساء: ۲۹تا۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अ़न क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह अल्लाह को आसान है अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

﴿2﴾.....

وَ الَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَ لَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ (پ۱۹، الفرقان: ۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की अल्लाह ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار...الخ، ص ۶۸، حدیث: ۱۰۷

www.dawateislami.net

ख़ुदकुशी की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴾1﴿.....तुम से पहले लोगों में एक शख़्स था जो ज़ख़्मी हो गया और वोह उस ज़ख़्म से घबरा गया, उस ने छुरी ले कर उस से अपना हाथ काट डाला मगर उस का ख़ून न थमा हत्ता कि उस ने दम तोड़ दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे बन्दे ने अपनी जान के साथ मुझ पर जल्दी की, मैं ने इस पर जन्नत को ह़राम कर दिया है।"(1)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....जो ख़ुद को किसी लोहे (के हथयार) से क़त्ल करे तो वोह उस के हाथ में होगा वोह जहन्नम की आग में उसे अपने पेट में घोंपता रहेगा और हमेशा जहन्नम में रहेगा। जिस ने ज़ह्र पी कर ख़ुद को मार डाला तो उस का ज़ह्र उस के हाथ में होगा, वोह जहन्नम की आग में उसे पीता रहेगा और हमेशा जहन्नम में रहेगा। जिस ने अपने आप को पहाड़ से गिरा कर हलाक कर लिया, वोह जहन्नम की आग में (बुलन्दी से) गिरता रहेगा और वोह जहन्नम में हमेशा रहेगा(2)।(3) येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص۷۱، حدیث:۱۱۳

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص۶۹، حدیث:۱۰۹

3 .....ख़ुलूद (हमेशा) के मा'ने हैं, बहुत दराज़ ठहरना या इस से वोह शख़्स मुराद है जो येह काम ह़लाल समझ कर करे कि अब वोह काफ़िर हो गया या येह मत़लब है कि इस त़रह़ ख़ुदकुशी करने वाला उस हमेशगी अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ है अगर्चे अल्लाह तआ़ला उसे ईमान की बरकत से रह़म फ़रमा कर दोज़ख़ से निकाल देगा लिहाज़ा येह ह़दीस उन आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन से मा'लूम होता है कि मोमिन कितना ही गुनहगार हो आख़िरे कार जन्नत में पहुंचेगा। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 250 मुल्तक़त़न)

www.dawateislami.net

सह़ीह़ ह़दीस में है :

﴿3﴾.....एक शख़्स को उस के ज़ख़्म ने सख़्त तक्लीफ़ में मुब्तला कर रखा था। उस ने मौत की त़रफ़ जल्दी की और अपनी तल्वार की तेज़ धार से अपने आप को क़त्ल कर डाला तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह शख़्स जहन्नमी है।"(1)

﴿4﴾.....मोमिन को ला'नत करना उस को क़त्ल करने की त़रह़ है और जो जिस चीज़ के ज़रीए़ ख़ुदकुशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे उसी चीज़ के ज़रीए़ अ़ज़ाब देगा(2)। येह ह़दीस सह़ीह़ है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 26

क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना

बुरे क़ाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ (پ۶، المائدۃ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे वोही लोग ज़ालिम हैं।

﴿2﴾.....

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ (پ۶، المائدۃ:۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं?

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص۷۰، حدیث:۱۱۲

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص۶۹، حدیث:۱۱۰

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَیِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓىٕكَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

(پ۲، البقرۃ:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बा'द इस के कि लोगों के लिये हम इस किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर **अल्लाह** *की ला'नत है और ला'नत करने वालों की ला'नत*

बुरे क़ाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ह़ाकिम की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उतारे हुवे के ख़िलाफ़ फ़ैसला करे।[1] इसे इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "मुस्तदरक" में ऐसी सनद के साथ रिवायत किया है जिस की सिह़्ह़त से मैं मुत्तफ़िक़ नहीं।

तीन त़रह़ के क़ाज़ी

﴿2﴾.....एक क़ाज़ी जन्नती और दो जहन्नमी हैं। जो क़ाज़ी ह़क़ को पहचाने और इस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करे तो वोह जन्नती है और जो क़ाज़ी ह़क़ को पहचाने फिर जान बूझ कर ज़ुल्म करे तो वोह जहन्नमी है और जो क़ाज़ी बिग़ैर इल्म के फ़ैसला करे तो वोह भी जहन्नमी है।[2]

इस ह़दीसे पाक को भी इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सह़ीह़ क़रार दिया है और इसे सह़ीह़ क़रार देने की ज़िम्मेदारी इन्ही पर है।

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، باب لایقبل اللہ صلاۃ...الخ، ۵/ ۱۲۱، حدیث: ۷۰۹۱

2 ...مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار...الخ، ۵/ ۱۲۲، حدیث: ۷۰۹۶

www.dawateislami.net

मैं कहता हूं : जो शख़्स बिग़ैर इल्म और क़ुरआनो ह़दीस से हट कर फ़ैसला करे वोह भी इस वईद में दाख़िल है। ﴾3﴿.....दो क़ाज़ी जहन्नमी और एक क़ाज़ी जन्नती है। (आगे वोही साबिक़ा ह़दीस है फिर) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जाहिल का गुनाह क्या है ? इरशाद फ़रमाया : उस का गुनाह बिग़ैर इल्म के क़ाज़ी बनना है।[1]

इस ह़दीस की सनद क़वी है और इस से ज़ियादा क़वी ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी दर्जे ज़ैल ह़दीस है :

﴾4﴿.....जो शख़्स भी इस उम्मत के किसी काम पर मुक़र्रर हो फिर वोह उन में इन्साफ़ से काम न ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा।[2]

﴾5﴿.....जिसे लोगों के दरमियान फ़ैसला करने पर मुक़र्रर किया गया गोया उस को बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ किया गया।[3]

अगर ह़ाकिम इजतिहाद करे और किसी बात की सिह़्ह़त पर क़ाइम दलील के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे और उस ने येह फ़ैसला किसी फ़क़ीह के इजतिहाद के मुत़ाबिक़ न किया हो फिर इस क़ौल का ज़ईफ़ होना उस पर ज़ाहिर हो तब भी वोह सवाब का ह़क़दार होगा कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار...الخ، ۵/ ۱۲۲، حدیث: ۷۰۹۶

2 ...مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، باب قاضیان فی النار...الخ، ۵/ ۱۲۳، حدیث: ۷۰۹۷

3 ...ابو داود، کتاب الاقضیۃ، باب فی طلب القضاء، ۳/ ۴۱۷، حدیث: ۳۵۷۲

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....जब ह़ाकिम इजतिहाद करे और दुरुस्ती को पहुंच जाए तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर इजतिहाद करे और इस में उसे ख़त़ा हो जाए तो उस के लिये एक अज्र है।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

फ़ैसले में इजतिहाद कर के दुरुस्ती को पहुंचने वाले के लिये नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो अज्र मिलने को बयान फ़रमाया है और अगर ह़ाकिम मुक़ल्लिद हो कि अपने फ़ैसले अपने इमाम की तक़्लीद करते हुवे करे तो वोह इस बिशारत में दाख़िल नहीं।

क़ाज़ी के लिये ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला करना ह़राम है बिल ख़ुसूस जब कि बात मुख़ालिफ़ से हो और जब क़ाज़ी कम इल्म, बद निय्यत, बद अख़्लाक़ और तक़्वा व परहेज़गारी की कमी से मुत्तसिफ़ हो तो समझ लीजिये उस का नुक़्सान इन्तिहा को पहुंच गया है और ऐसे शख़्स का ख़ुद मा'ज़ूल होने और जहन्नम से छुटकारा पाने में जल्दी करना लाज़िम है।

﴾7﴿.....रिश्वत लेने और देने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है।[2] इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

आज "क्या क्या" किया ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ाना अपना एह़तिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता ! आज तू ने "क्या क्या" किया है ? (احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، المرابطۃ الرابعۃ فی معاقبۃ النفس علی تقصیرھا، ۵/۱۴۱)

---

1 ... بخاری، کتاب الاعتصام...الخ، باب اجر الحاکم اذا اجتھد...الخ، ۴/۵۲۱، حدیث: ۷۳۵۲

2 ... ترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء فی الراشی والمرتشی فی الحکم، ۳/ ۲۵، حدیث: ۱۳۴۱

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 27

दय्यूसी[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۱۸، النور: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बदकार औ़रत से निकाह़ न करे मगर बदकार मर्द या मुशरिक और येह काम ईमान वालों पर ह़राम है।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) वालिदैन का ना फ़रमान (2) दय्यूस और (3) मर्दाना वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत।[3]

इस ह़दीस की सनद सह़ीह़ है। बा'ज़ ह़ज़रात ने इस की सनद ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न बयान की है।

जिस शख़्स को अपनी बीवी के फ़ह़ाशी में मुब्तला होने का (ग़ालिब) गुमान हो फिर भी वोह अपनी मह़ब्बत की वज्ह से उस से ग़फ़्लत बरते तो ऐसा शख़्स अगर्चे गुनहगार है लेकिन इस का गुनाह उस शख़्स से कम है जो ख़ुद अपनी बीवी को फ़ह़ाशी के लिये पेश करता हो। जिस में ग़ैरत नहीं उस में कुछ भलाई नहीं।

---

1 .....जो लोग बा वुजूदे कुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "दय्यूस" हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65) मज़ीद तफ़्सील के लिये मज़कूरा मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये !

2 .....इब्तिदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह़ ह़राम था बा'द में आयत : وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ (پ۱۸، النور: ۳۲) से मन्सूख़ हो गया।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 18, सूरतुन्नूर, तह़्तुल आयत : 3)

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب ثلاثۃ لایدخلون الجنۃ...الخ، ۱/ ۲۵۲، حدیث: ۲۵۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 28

मर्दों का ज़नानी और औरतों का मर्दानी वज़्अ़ अपनाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ (پ۲۵، الشورٰی: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं।

ला'नत के मुस्तहिक़ मर्द व औरत

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़नानी वज़्अ़ बनाने वाले मर्दों और मर्दानी वज़्अ़ इख़्तियार करने वाली औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।(1) येह ह़दीस सह़ीह़ है।

﴾2﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मर्दानी वज़्अ़ इख़्तियार करने वाली औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।(2) इस ह़दीसे पाक की सनद ह़सन है।

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस मर्द पर जो औरतों का लिबास पहने और उस औरत पर जो मर्दों का लिबास पहने ला'नत फ़रमाई है।(3) इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है और इसे इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने रिवायत किया है।

(1)...بخاری، کتاب اللباس، باب اخراج المتشبھین بالنساء من البیوت، ۴/ ۷۴، حدیث: ۵۸۸۶

(2)...ابوداود، کتاب اللباس، باب لباس، النساء، ۴/ ۸۴، حدیث: ۴۰۹۹

(3)...ابوداود، کتاب اللباس، باب لباس النساء، ۴/ ۸۳، حدیث: ۴۰۹۸

www.dawateislami.net

दो क़िस्म के जहन्नमी

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जहन्नमियों की दो क़िस्में ऐसी हैं जिन्हें मैं ने नहीं देखा : (1) वोह लोग जिन के पास गाए की दुमों की मिस्ल कोड़े होंगे जिन से वोह लोगों को मारेंगे।[1] (2) वोह औ़रतें जो लिबास पहनने के बा वुजूद नंगी होंगी[2], दूसरों की त़रफ़ माइल होंगी और उन को अपनी त़रफ़ माइल करेंगी।[3] उन के सर बुख़्ती ऊंट के कोहान की त़रह़ एक त़रफ़ झुके होंगे।[4] वोह जन्नत में

---

1 .....ह़दीस का मत़लब येह है कि वोह ज़ालिम हुक्काम या उन के कारिन्दे कोड़े साथ लिये फिरेंगे बात बात पर लोगों को इस से मारा करेंगे किसी ने उन्हें सलाम न किया या उन की ता'ज़ीम के लिये न उठा या उन के ज़ुल्म की ताईद न की उसे बे तह़ाशा पीट दिया। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 290)

2 .....या'नी जिस्म का कुछ ह़िस्सा लिबास से ढकेंगी और कुछ ह़िस्सा नंगा रखेंगी या इतना बारीक कपड़ा पहनेंगी जिस से जिस्म वैसे ही नज़र आएगा येह दोनों उ़यूब आज देखे जा रहे हैं या अल्लाह की ने'मतों से ढकी होंगी शुक्र से नंगी या'नी ख़ाली होंगी या ज़ेवरों से आरास्ता, तक़्वा से नंगी होगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 290)

3 .....या'नी लोगों के दिलों को अपनी त़रफ़ माइल करेंगी और ख़ुद उन की त़रफ़ माइल होंगी या दूपट्टा अपने सर से बुर्क़आ अपने मुंह से हटा देंगी या अपनी बातों या गाने से लोगों को अपनी त़रफ़ माइल करेंगी, ख़ुद उन की त़रफ़ माइल होंगी, येह सब बातें आज देखने में आ रही हैं, क़ुरबान उन निगाहों के जो क़ियामत तक के वाक़िआ़त देख रही हैं, नीची नज़रें कल की ख़बरें।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 291)

4 .....इस जुम्लए मुबारका की बहुत तफ़्सीरें हैं बेहतर तफ़्सीर येह है कि वोह औ़रतें राह चलते शर्म से सर नीचा न करेंगी बल्कि बे ह़याई से ऊंची गर्दन सर उठाए हर त़रफ़ देखती लोगों को घूरती चलेंगी जैसे ऊंट के तमाम जिस्म में कोहान ऊंची होती है ऐसे ही उन के सर ऊंचे रहा करेंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 291)

www.dawateislami.net

नहीं जाएंगी और न उस की ख़ुश्बू सूंघेंगी ह़ालांकि उस की ख़ुश्बू इतनी इतनी मसाफ़त से महसूस की जाएगी[1]।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है।

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : सुनो ! जब मर्दों ने औ़रतों की इत़ाअ़त की तो वोह हलाक हो गए।[3]

औ़रत पर ला'नत के अस्बाब

बा'ज़ वोह अफ़्आ़ल जिन के सबब औ़रत पर ला'नत भेजी जाती है वोह येह हैं : औ़रत का अपनी ज़ेबो ज़ीनत, सोने, चांदी, नीज़ मोती के ज़ेवरात को निक़ाब के नीचे से ज़ाहिर करना, मुश्को अ़म्बर वग़ैरा के इत्रिय्यात लगाना, (ना मह़रमों को माइल करने के लिये) रंगे हुवे कपड़े और रेशमी लिबास पहनना और इसी त़रह़ की दीगर बुराइयों का इरतिकाब करना।

क़ियामत से पहले हिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! अपने आ'माल का इस से पहले मुह़ासबा कर लो कि क़ियामत आ जाए और इन का ह़िसाब लिया जाए। (احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ القسم الاول من المربطۃ والمشارطۃ، ۵/۱۲۸)

---

1 .....इतनी इतनी से मुराद बहुत दराज़ मसाफ़त है मसलन सौ साल की राह या इस से भी ज़ियादा। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 291)

2 ...مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب النساء الکاسیات العاریات...الخ، ص۱۱۷۷، حدیث: ۲۱۲۸

3 ...مسند احمد، مسند البصریین، ۷/ ۳۲۳، حدیث: ۲۰۴۴۷

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 29

ह़लाला करना

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी ह़दीसे सह़ीह़ में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़लाला करने वाले और जिस के लिये ह़लाला किया जाए उस पर ला'नत फ़रमाई है(1)।(2) इस ह़दीस को इमाम नसाई और इमाम तिरमिज़ी (عَلَیْہِمَا الرَّحْمَہ) ने उ़म्दा सनद के साथ रिवायत किया है।

---

1 .....نکاح بِشَرْطِ التَّحْلِیْل (ह़लाले की शर्त़ के साथ निकाह़) जिस के बारे में ह़दीस में ला'नत आई वोह येह है कि अ़क़्दे निकाह़ या'नी ईजाबो क़बूल में ह़लाले की शर्त़ लगाई जाए और येह निकाह़ मकरूहे तह़रीमी है ज़ौजे अव्वल व सानी (पहले शोहर जिस ने त़लाक़ दी और दूसरा जिस से निकाह़ किया) और औ़रत तीनों गुनाहगार होंगे मगर औ़रत इस निकाह़ से भी ब शराइत़े ह़लाला शोहरे अव्वल के लिये ह़लाल हो जाएगी। और शर्त़ बात़िल है। और शोहरे सानी त़लाक़ देने पर मजबूर नहीं। और अगर अ़क़्द में शर्त़ न हो अगर्चे निय्यत में हो तो कराहत अस्लन नहीं बल्कि अगर निय्यत ख़ैर हो तो मुस्तह़िक़े अज्र है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 8, 2 / 180)

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़्कूरा मक़ाम का सफ़ह़ा 177 ता 182 का मुत़ालआ़ कीजिये !

अ़क़्दे निकाह़ से पहले ही दूसरे शोहर को समझा दिया जाए कि औ़रत अपने पहले शोहर के पास जाना चाहती है और उस के हां पहले शोहर से कुछ औलाद भी है जिन की तरबिय्यत ब ख़ैरो ख़ूबी पहले शोहर और इस के ज़रीए़ ही हो सकेगी और पहले शोहर के निकाह़ में जाने और बच्चों की सह़ीह़ तरबिय्यत करने का ज़रीआ़ शोहरे सानी से निकाह़ और हमबिस्तरी के सिवा कुछ नहीं है, तो अगर इन ह़ालात में शोहरे सानी इन दोनों (शोहरे अव्वल और उस औ़रत) की परेशानी को ह़ल करने की निय्यत से उस औ़रत से निकाह़ कर ले और येह निकाह़ ह़लाले की शर्त़ पर न किया जाए (या'नी ईजाबो क़बूल के वक़्त ह़लाले की शर्त़ न लगाई जाए बल्कि नॉर्मल अल्फ़ाज़ में ईजाबो क़बूल हों अगर्चे दिल में इरादा ह़लाले का हो) और न ही इस पर शोहरे अव्वल से उजरत ली जाए और फिर बा'दे निकाह़, हमबिस्तरी कर के इस को त़लाक़ दे ताकि वोह औ़रत इ़द्दत गुज़ार कर अपने पहले शोहर से निकाह़ कर ले और बच्चों की सह़ीह़ त़ौर पर परवरिश कर सके तो येह शोहरे सानी इस त़रह़ कर के इन दोनों (शोहरे अव्वल और औ़रत) की ख़ैरो भलाई चाहने की वज्ह से सवाब का मुस्तह़िक़ क़रार पाएगा।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, 25 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1433 हिजरी, 13 अक्तूबर 2012 ईसवी)

2 ...ترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء فی المحلل والمحلل لہ، ۳/ ۳۶۴، حدیث: ۱۱۲۲

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से भी साबिक़ा रिवायत की मिस्ल मरवी है जिसे इमाम अबू दावूद, इमाम तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ) ने रिवायत किया है।[1]

इस क़ाबिले कराहत काम को करने वाला अगर किसी मुजतहिद इमाम का मुक़ल्लिद हो और वोह मज़ाहिब के रुख़्सत देने की बिना पर इस पर अ़मल कर ले और उस को मुमानअ़त की ख़बर न हो तो उम्मीद की जा सकती है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को मा'ज़ूर रखेगा और उस से दर गुज़र फ़रमाएगा।

गुनाहे कबीरा नम्बर 30

मुर्दार, ख़ून और सूअर का गोश्त खाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِیْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّكُوْنَ مَیْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِیْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ (پ۸، الانعام: ۱۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं नहीं पाता उस में जो मेरी त़रफ़ वह्य हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना ह़राम मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून या बद जानवर का गोश्त वोह नजासत है।

जो शख़्स बिला ज़रूरते शरई जान बूझ कर ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाए वोह ज़रूर मुजरिम है और मुझे येह गुमान नहीं कि कोई मुसलमान जान बूझ कर ख़िन्ज़ीर का गोश्त खा सकता है। बसा औक़ात येह फ़े'ल जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले बे

[1] ...ابو داود، کتاب النکاح، باب فی التحلیل، ۲/۳۳۰، حدیث: ۲۰۷۶

www.dawateislami.net

दीन करते हैं जो दीने इस्लाम से ख़ारिज हैं। मुसलमानों के दिलों में येह बात जा गुज़ीं है कि ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने का गुनाह, शराब पीने से भी बड़ा है।

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ब त़रीक़े सह़ीह़ मन्क़ूल है, जो गोश्त ह़राम से नश्वो नुमा पाएगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, आग उस की ज़ियादा ह़क़दार है।[1]

मुसलमानों का इस बात पर इजमाअ़ है कि नर्द (चौसर) खेलना ह़राम है। क़ाइलीने हुरमत की येह एक दलील तुम्हें काफ़ी है कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने नर्द खेला तो गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में रंग लिया।[2]

यक़ीनन मुसलमान का ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में हाथ आलूदा करना नर्द खेलने से कहीं बड़ा गुनाह है तो ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने इस का ख़ून पीने की हुरमत के बारे में क्या ख़याल है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें इस से बचाए रखे।

जहन्नम से आज़ादी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जो मस्जिद में बा जमाअ़त 40 रातें नमाज़े इ़शा इस त़रह़ पढ़े कि पहली रक्अ़त फ़ौत न हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है। (ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعۃ، باب صلاۃ الفجر فی جماعۃ، ۱/۴۳۷، حدیث: ۷۹۸)

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الاطعمۃ، باب لا یدخل الجنۃ لحم نبت من سحت، ۵/۱۷۵، حدیث: ۷۲۴۵

2 ...مسلم، کتاب الشعر، باب تحریم اللعب بالنردشیر، ص ۱۲۴۰، حدیث: ۲۲۶۰

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 31

पेशाब से न बचना

पेशाब से न बचना येह ईसाइयों की निशानी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ (پ۲۹، المدثر:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने कपड़े पाक रखो।

पेशाब से न बचने के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा, तो इरशाद फ़रमाया :

اِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيْرٍ اَمَّا اَحَدُهُمَا فَكَانَ لَا يَسْتَنْزِهُ مِنْ بَوْلِهٖ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَكَانَ يَمْشِيْ بِالنَّمِيْمَةِ

"या'नी येह दोनों अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में अ़ज़ाब नहीं दिये जा रहे। इन में से एक अपने पेशाब से नहीं बचा करता था और दूसरा चुग़ली खाता था।(1)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।"

बुख़ारी व मुस्लिम की अक्सर रिवायात में येह अल्फ़ाज़ हैं : فَكَانَ لَا يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهٖ "या'नी वोह पेशाब से नहीं बचा करता था।"

﴾2﴿.....पेशाब से बचो, आ़म तौर पर अ़ज़ाबे क़ब्र इस के सबब होता है।(2)

इस ह़दीसे पाक को इमाम दारे क़ुत़्नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने रिवायत किया है।

जो शख़्स अपने बदन और कपड़ों को पेशाब से नहीं बचाता उस की नमाज़ क़बूल नहीं होती।

❶... بخاری، کتاب الوضوء، باب من الکبائر... الخ، ۱/ ۹۵، حدیث: ۲۱۶

❷... دارقطنی، کتاب الطهارة، باب نجاسة البول... الخ، ۱/ ۲۳۱، حدیث: ۴۵۹

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 32

नाजाइज़ टेक्स वुसूल करना

नाजाइज़ टेक्स वुसूल करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के तह्त दाखि़ल है :

اِنَّمَا السَّبِیۡلُ عَلَی الَّذِیۡنَ یَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ وَ یَبۡغُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ بِغَیۡرِ الۡحَقِّ ؕ اُولٰٓئِکَ لَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿۴۲﴾

(پ۲۵، الشوریٰ: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुवाख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सर्कशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ज़ानिया के बारे में जिस ने अपने आप को रज्म करवा कर पाक किया था, फ़रमाया : "बेशक उस ने ऐसी तौबा की है कि अगर नाजाइज़ टेक्स वुसूल करने वाला भी इस त़रह़ की तौबा कर ले तो उस की भी मग़्फ़िरत हो जाए और उस की तौबा भी क़बूल कर ली जाए।[1]

नाजाइज़ टेक्स वुसूल करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ डाकू होने का शुबा है लिहाज़ा येह चोर से भी बदतर है। जो शख़्स लोगों पर ज़ुल्म करे और उन पर नित नए टेक्स ज़ुल्मन लगाए तो वोह उस से बढ़ कर ज़ालिमो जाबिर है जो ज़ियादा टेक्स न लेता हो और अपनी रिआ़या पर नर्मी करता हो।

ज़ुल्मन टेक्स वुसूल करने वाला सिपाही, उसे लिखने वाला मुन्शी और घर में बैठा उसे जम्अ़ करने वाला, येह सब गुनाह में बराबर के शरीक और ह़राम खाने वाले हैं। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के फ़ज़्लो करम के सबब दुन्या व आख़िरत में आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

---

(1)...مسلم، کتاب الحدود، باب من اعترف علی نفسہ بالزنا، ص۹۳۲، حدیث: ۱۶۹۵

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 33

रियाकारी[1]

रियाकारी का तअ़ल्लुक़ निफ़ाक़ से है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाता है :

يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۴۲﴾ (پ۵، النساء: ۱۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा।

और फ़रमाता है :

كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ (پ۳، البقرة: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे।

रियाकारी के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴿1﴾.....बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से पहले फ़ैसला एक ऐसे शख़्स के बारे में होगा जो शहीद हुवा होगा उसे लाया जाएगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा और वोह उन ने'मतों का इक़रार करेगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : इन ने'मतों के बदले में तू ने क्या अ़मल किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने तेरी राह में जिहाद किया ह़त्ता कि मुझे शहीद कर दिया गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू झूटा है तू ने जिहाद इस लिये किया कि तुझे बहादुर कहा जाए और वोह कह लिया गया। फिर उस के बारे में हुक्म दिया जाएगा तो उसे

1 .....''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना'' गोया इबादत से येह ग़र्ज़ हो कि लोग उस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें। (नेकी की दा'वत, स. 66)

www.dawateislami.net

चेहरे के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा और दूसरा वोह शख़्स होगा जिस ने इ़ल्म सीखा और सिखाया होगा नीज़ कु़रआन पढ़ा होगा उसे लाया जाएगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा। वोह उन ने'मतों का इक़्रार करेगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : इन ने'मतों के बदले में तू ने क्या अ़मल किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने इ़ल्म सीखा और सिखाया और तेरी रिज़ा के लिये कु़रआन पढ़ा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तू झूटा है बल्कि तू ने इ़ल्म इस लिये सीखा कि तुझे आ़लिम कहा जाए और तू ने कु़रआन इस लिये पढ़ा कि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह कह लिया गया। फिर उस के बारे में हुक्म दिया जाएगा तो उसे चेहरे के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। तीसरा शख़्स वोह होगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बहुत वुस्अ़त और कसीर माल अ़ता फ़रमाया होगा उसे लाया जाएगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा और वोह उन ने'मतों का इक़्रार करेगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : इन ने'मतों के बदले में तू ने क्या किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : मैं ने ऐसा कोई मौक़अ़ नहीं छोड़ा जिस में ख़र्च करना तुझे पसन्द हो और मैं ने तेरी रिज़ा के लिये ख़र्च न किया हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तू झूटा है और तू ने येह काम इस लिये किया ताकि तुझे सख़ी कहा जाए और वोह कह लिया गया, फिर उस के बारे में हुक्म दिया जाएगा तो उसे भी चेहरे के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।(1)

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है।

---

(1)...مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل للریاء والسمعۃ استحق النار، ص ۱۰۵۲، حدیث: ۱۹۰۵

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि कुछ लोगों ने आप से अ़र्ज़ की : हम हाकिमों के पास जाते हैं और उन के सामने ऐसी बातें करते हैं जो उन के पास से वापस होने के बा'द की जाने वाली बातों के बर ख़िलाफ़ होती हैं । येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : ज़मानए रिसालत में हम इसे निफ़ाक़ में शुमार करते थे ।(1)

﴾2﴿.....जो शोहरत चाहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को उस का बदला देगा और जो रियाकारी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की रियाकारी का उसे बदला देगा ।(2)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

﴾3﴿.....थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है ।(3)

इस ह़दीसे पाक को इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सह़ीह़ क़रार दिया है ।

अगर जन्नत दरकार हो तो.....!

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमते बा अ़ज़मत में लोगों ने अ़र्ज़ की : कोई ऐसा अ़मल बताइये कि जिस से जन्नत मिले । इरशाद फ़रमाया : कभी बोलो मत । अ़र्ज़ की : येह तो नहीं हो सकता । इरशाद फ़रमाया : अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो । (احیاء العلوم، ۳/۱۳۶)

(1)... بخاری، کتاب الاحکام، باب مایکرہ من ثناء السلطان...الخ، ص۶۲۶، حدیث:۷۱۷۸

(2)... بخاری، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعة، ۴/ ۲۴۷، حدیث:۶۴۹۹

(3)... مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب صفة اولیاء اللہ...الخ، ۱/۱۴۸، حدیث:۴

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 34

ख़ियानत करना[1]

ख़ियानत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ وَ تَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (۲۷) (پ۹، الانفال:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह व रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत।

﴾2﴿.....

وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ (۵۲) (پ۱۲، یوسف:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता।

﴾3﴿.....

وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ (۵۸) (پ۱۰، الانفال:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा का अन्देशा करो तो उन का अ़ह्द उन की त़रफ़ फैंक दो बराबरी पर बेशक दग़ा (अ़ह्द शिकनी) वाले अल्लाह को पसन्द नहीं।

1.....ख़ियानत, अमानत की ज़िद है ख़ुफ़्यतन किसी का ह़क़ मारना ख़ियानत कहलाता है। ख़्वाह अपना ह़क़ मारे या अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) का या इस्लाम का या किसी बन्दे का। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 82)

www.dawateislami.net

ख़ियानत के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴾1﴿.....जिस को अमानत का पास नहीं उस का कोई ईमान नहीं और जिसे अ़ह्द का लिह़ाज़ नहीं उस का कोई दीन नहीं।(1)

﴾2﴿.....मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो पूरा न करे और (3) जब उस के पास अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करे।(2)

ख़ियानत जिस शै के बारे में भी की जाए बुरी है और बा'ज़ ख़ियानतें बा'ज़ के मुक़ाबले में ज़ियादा बुरी होती हैं। जो शख़्स रूपे पैसे के मुआ़मले में ख़ियानत करे वोह उस शख़्स की त़रह़ नहीं जो किसी के अहलो इ़याल के बारे में ख़ियानत और कई बड़े गुनाहों का इरतिकाब करे।

गुनाहे कबीरा नम्बर 35

दुन्या के लिये इ़ल्म सीखना और इ़ल्म छुपाना

इ़ल्म व उ़लमा की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُاؕ (پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

---

❶... ابن حبان، کتاب الایمان، باب فرض الایمان، ۱/۲۰۸، حدیث: ۱۹۴

❷... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، ص۵۰، حدیث: ۵۹

www.dawateislami.net

इल्म छुपाने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَیِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الْكِتٰبِۙ اُولٰٓىٕكَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَۙ(۱۵۹)

(پ۲، البقرۃ:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर अल्लाह की ला'नत और ला'नत करने वालों की ला'नत।

﴿2﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ (پ۲، البقرۃ:۱۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो छुपाते हैं अल्लाह की उतारी किताब।

﴿3﴾.....

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ

(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब अल्लाह ने अ़ह्द लिया उन से जिन्हें किताब अ़त़ा हुई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फैंक दिया।

हुसूले इल्म के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِّمَّا یُبْتَغٰی بِهٖ وَجْهُ اللّٰهِ لَا یَتَعَلَّمُهٗ اِلَّا لِیُصِیْبَ بِهٖ عَرَضًا مِّنَ الدُّنْیَا لَمْ یَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ

www.dawateislami.net

"या'नी जिस शख़्स ने रिज़ाए इलाही के लिये त़लब किया जाने वाला इ़ल्म फ़क़त़ दुन्यावी सामान ह़ासिल करने के लिये सीखा वोह बरोज़े क़ियामत जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूंघ पाएगा।"(1)

ह़दीसे पाक में मज़कूर लफ़्ज़ "عَرْف" का मा'ना ख़ुश्बू है। इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ब सनदे सह़ीह़ रिवायत किया है।

मा क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की रिवायत गुज़र चुकी है जिस में तीन शख़्सों का ज़िक्र था जिन्हें जहन्नम की त़रफ़ चेहरे के बल घसीटते हुवे ले जाया जाएगा, उन में से एक से कहा जाएगा :

﴿2﴾.....तू ने इ़ल्म इस लिये सीखा था कि तुझे आ़लिम कहा जाए और वोह कह लिया गया।(2)

﴿3﴾.....इ़ल्म इस लिये मत सीखो कि इस के ज़रीए़ तुम उ़लमा पर फ़ख़्र जताओ या जाहिलों से झगड़ो और न इस लिये इ़ल्म सीखो कि इस के ज़रीए़ मजलिसों में मक़ामो मर्तबा ह़ासिल करो और जो इस निय्यत से इ़ल्म ह़ासिल करेगा तो उस के लिये जहन्नम की आग है।(3)

इस ह़दीसे पाक को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने वह्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने इमाम इब्ने जरीर से मुर्सलन रिवायत किया है।

﴿4﴾.....जिस ने इ़ल्म इस लिये ह़ासिल किया ताकि इस के ज़रीए़ उ़लमा पर फ़ख़्र जताए या जाहिलों से झगड़ा करे या लोगों के दिल अपनी त़रफ़ माइल करे तो उस का ठिकाना जहन्नम है।(4)

---

1 ...ابوداود، کتاب العلم، باب فی طلب العلم لغیر اللہ، ۳/ ۴۵۱، حدیث: ۳۶۶۴

2 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل للریاء والسمعۃ استحق النار، ص ۱۰۵۵، حدیث: ۱۹۰۵

3 ...ابن ماجہ، المقدمۃ، باب الانتفاع بالعلم والعمل، ۱/ ۱۶۵، حدیث: ۲۵۴

4 ...مستدرک حاکم، کتاب العلم، باب لاتعلموا العلم لتباھوا بہ العلماء، ۱/ ۲۷۳، حدیث: ۳۰۰

www.dawateislami.net

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा ।[1]

इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है जिस की सनद में इस्ह़ाक़ बिन यह़्या बिन त़ल्ह़ा रावी वेह्मी है ।

आग की लगाम

﴾5﴿.....जिस से इल्म की कोई बात पूछी गई फिर उस ने उसे छुपाया तो बरोज़े क़ियामत उसे आग की लगाम डाली जाएगी ।[2]

﴾6﴿.....जो इल्म छुपाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे आग की लगाम डालेगा ।[3]

इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : येह ह़दीसे पाक इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम عَلَيْهِمَا الرَّحْمَه की शर्त़ पर है और इस में किसी इ़ल्लत के होने का मुझे इ़ल्म नहीं है ।

﴾7﴿.....रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ऐसे इल्म से तेरी पनाह मांगता हूं जो मुफ़ीद न हो[4]।[5]

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب فی من یطلب بعلمہ الدنیا، ۴/۲۹۷، حدیث:۲۶۶۳

2 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی کتمان العلم، ۴/۲۹۵، حدیث:۲۶۵۸

3 ...مستدرک حاکم، کتاب العلم، باب من سئل عن علم فکتمہ...الخ، ۱/۲۹۷، حدیث:۲۵۲

4 .....इस से मुराद वोह इल्म है जिस के सीखने की शरअ़न इजाज़त नहीं या इस से मुराद ऐसा इल्म है जिस पर अ़मल न हो या इस से मुराद वोह इल्म है जो बात़िनी अख़्लाक़ को न संवारता हो कि अख़्लाक़े बात़िनी का संवरना अफ़आ़ले ज़ाहिरा के दुरुस्त होने का बाइ़स है और यूं बन्दा उख़रवी कामयाबी का मुस्तह़िक़ होता है । (فیض القدیر، ۲/۱۳۰، تحت الحدیث:۱۴۵۳)

5 ...مسلم، کتاب الذکر...الخ، باب التعوذ من شر ما عمل...الخ، ص۱۴۵۷، حدیث:۲۷۲۲

www.dawateislami.net

﴾8﴿.....जिस ने ग़ैरुल्लाह के लिये कोई इल्म सीखा या इल्म सीखने से ग़ैरुल्लाह का इरादा किया तो उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स इल्म सीखे फिर उस पर अ़मल न करे तो येह इल्म महज़ उस के तकब्बुर को बढ़ाएगा।

बुरे आ़लिम का अन्जाम

﴾9﴿.....क़ियामत के दिन बुरे आ़लिम को लाया जाएगा फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा तो वोह अपनी आंतों के गिर्द इस तरह चक्कर लगाता होगा जिस त़रह़ गधा चक्की के गिर्द घूमता है। उस से दरयाफ़्त किया जाएगा : किस अ़मल के सबब तुम्हें येह सज़ा मिली है? हम ने तो तुम्हारे सबब हिदायत पाई है। वोह कहेगा : जिन कामों से मैं तुम को मन्अ़ किया करता था खुद उन कामों को किया करता था।(2)

हज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन अ़ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इल्म ह़ासिल करना सख़्त काम है और इसे याद रखना इस से ज़ियादा सख़्त है और इस पर अ़मल करना याद रखने से ज़ियादा सख़्त है और (इस की आफ़ात से) सलामती इल्म पर अ़मल करने से भी ज़ियादा सख़्त है।

27 दर्जे बढ़ कर

... **फ़रमाने मुस्त़फ़ा :** नमाज़े बा जमाअ़त तन्हा पढ़ने से 27 दर्जे बढ़ कर है।

(مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ.....الخ، ص۳۲۶، حدیث:۲۵۰)

(1)... ترمذی، کتاب العلم، باب فی من یطلب بعلمہ الدنیا، ۴/ ۲۹۷، حدیث: ۲۶۶۴

(2)...مسلم، کتاب الزھد والرقاق، باب عقوبۃ من یامر بالمعروف ولا یفعلہ، ص۱۵۹۵، حدیث: ۲۹۸۹

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर : 36

एह्सान जताना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एह्सान रख कर और ईज़ा दे कर ।

एह्सान जताने की मज़म्मत में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा ﷺ

ह़दीसे सह़ीह़ में है :

﴾1﴿.....तीन अश्ख़ास से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत कलाम नहीं फ़रमाएगा न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करेगा और न उन्हें पाक फ़रमाएगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा :

(1) (तकब्बुर से) अपना तहबन्द लटकाने वाला

(2) एह्सान जतलाने वाला और

(3) झूटी क़सम खा कर सौदा बेचने वाला ।[1]

﴾2﴿.....तीन लोगों के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल :

(1) वालिदैन का ना फ़रमान

(2) एह्सान जताने वाला और

(3) तक़्दीर को झुटलाने वाला ।[2] येह ह़दीस ह़सन है ।

---

❶...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار...الخ، ص۶۷، حدیث:۱۰۶

❷...السنۃ لابن ابی عاصم، باب ماذکر عن النبی علیہ السلام فی المکذبین بقدر اللہ...الخ، ص۷۳، حدیث:۳۳۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 37

तक़्दीर को झुटलाना

तक़्दीर के मुतअ़ल्लिक़ छे फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....

اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿۴۹﴾

(پ۲۷، القمر: ۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।

﴿2﴾.....

وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَ مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾

(پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को।

﴿3﴾.....

مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ ؕ

(پ۹، الاعراف: ۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।

﴿4﴾.....

وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ

(پ۲۵، الجاثیۃ: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह ने उसे बा वस्फ़ इ़ल्म के गुमराह किया।

﴿5﴾.....

وَ مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

(پ۲۹، الدھر: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम क्या चाहो मगर येह कि अल्लाह चाहे।

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝۸ (پ۳۰، الشمس:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़गारी दिल में डाली।

तक़्दीर के बारे में 15 फ़रामीने मुस्तफ़ा

ह़दीसे जिब्रील जो कि ह़दीसे सह़ीह़ है उस में है :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ईमान क्या है ? इरशाद फ़रमाया : तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों और उस के रसूलों, मरने के बा'द उठाए जाने और अच्छी बुरी तक़्दीर पर ईमान लाए।(1)

छे अश्ख़ास पर ख़ुदा व रसूल की ला'नत

﴾2﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : छे शख़्सों पर मैं ने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है और हर नबी की दुआ़ क़बूल होती है : (1) तक़्दीर का मुन्किर (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब में इज़ाफ़ा करने वाला (3) ज़बरदस्ती मुसल्लत़ होने वाला (ह़ाकिम) (4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़राम को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरी आल के मुतअ़ल्लिक़ वोह बातें ह़लाल समझने वाला जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया और (6) मेरी सुन्नत को तर्क करने वाला।(2) इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है।

---

❶...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الایمان والاسلام والاحسان..الخ، ص۲۱، حدیث:۸

❷...السنة لابن ابی عاصم، باب سبعة لعنتهم، ص۷۶، حدیث: ۳۴۶

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....वालिदैन का ना फ़रमान, तक़्दीर का मुन्किर और शराब का आ़दी जन्नत में दाख़िल न होगा।[1]

इस ह़दीसे पाक की सनद में सुलैमान बिन उ़त्बा नामी रावी को ज़ईफ़ कहा गया है और इस ह़दीस को मुह़द्दिसीन की एक जमाअ़त ने रिवायत किया है।

इस उम्मत के मजूसी

﴾4﴿.....क़दरिय्या इस उम्मत के मजूसी हैं, अगर वोह बीमार पड़ जाएं तो तुम उन की इ़यादत न करो, अगर मर जाएं तो उन के जनाज़े में शिर्कत न करो[2]।[3]

इस ह़दीस के रावी सिक़ह हैं लेकिन येह ह़दीस मुन्क़त़ेअ़ है।

﴾5﴿.....अ़न क़रीब मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो तक़्दीर को झुटलाएंगे।[4]

येह ह़दीसे पाक इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

बिदअ़ती के सलाम का जवाब न दिया

इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने ब त़रीक़े सह़ीह़ नक़्ल किया कि,

﴾6﴿.....एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास आ कर अ़र्ज़ की : फ़ुलां शख़्स ने आप को सलाम

1...السنۃلابن ابی عاصم، باب ماذکر عن النبی علیہ السلام فی المکذبین بقدر اللہ...الخ، ص ۷۲، حدیث: ۳۳۰

2.....मजूसी का अ़क़ीदा है कि आ़लम के ख़ालिक़ दो हैं। ख़ैर का ख़ालिक़ यज़दान और शर का अह़रमन या'नी शैत़ान ऐसे ही क़दरिय्या अपने को अपने आ'माल का ख़ालिक़ मानते हैं लिहाज़ा मजूस से बदतर हुवे कि वोह सिर्फ़ दो ख़ालिक़ मानें और येह लाखों। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 108)

3...ابو داود، کتاب السنۃ، باب فی القدر، ۴/ ۲۹۴، حدیث: ۴۶۹۱

4...مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب سیکون فی امتی اقوام یکذبون بالقدر، ۱/ ۲۶۹، حدیث: ۲۹۲

www.dawateislami.net

कहा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि उस ने कोई बुरी बिदअ़त ईजाद की है। अगर वाक़ेई उस ने बुरी बिदअ़त ईजाद की है तो मेरा सलाम उस से न कहना क्यूंकि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : "इस उम्मत में बा'ज़ लोगों को धंसा दिया जाएगा और बा'ज़ की सूरतों को बिगाड़ दिया जाएगा या उन पर पथ्थर बरसाए जाएंगे, येह लोग तक़्दीर के मुन्किर होंगे।"(1)

तक़्दीर पर ईमान लाना लाज़िमी है

﴿7﴾.....बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक चार बातों पर ईमान न लाए : (1) वोह गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं (2) मैं (मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं और (3) वोह मरने के बा'द उठाए जाने और (4) तक़्दीर पर ईमान रखता हो।(2) इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है और इस की सनद उ़म्दा है।

﴿8﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बनाई हुई तक़्दीर को झुटलाने वाले लोग इस उम्मत के मजूसी हैं। अगर वोह बीमार हो जाएं तो तुम उन की इ़यादत न करना और अगर मर जाएं तो उन की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना और अगर तुम उन से मिलो तो उन्हें सलाम न करना।(3) इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू बक्र बिन अबू आ़सिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मुस्नद में ज़िक्र किया है।

1...ترمذی، کتاب القدر، باب: ۱۶، ۴/ ۶۰، حدیث: ۲۱۵۹

2...ترمذی، کتاب القدر، باب ما جاء ان الایمان بالقدر...الخ، ۴/ ۵۸، حدیث: ۲۱۵۹

3...السنۃ لابن ابی عاصم، باب قول النبی: ان المکذبین بالقدر...الخ، ص ۷۴، حدیث: ۳۳۷

www.dawateislami.net

तक़्दीर के बारे में दीगर अहादीस भी हैं जिन्हें इमाम इब्ने अबू आसिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है लेकिन इन अहादीस की अस्नाद में कलाम है।

﴿9﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी को भी मबऊस नहीं फ़रमाया मगर येह कि उस की उम्मत में क़दरिय्या और मुरजिय्या[1] थे। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत फ़रमाई है।[2]

﴿10﴾.....बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन शख़्सों से कलाम नहीं फ़रमाएगा और न उन की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा और न उन्हें पाक फ़रमाएगा : (1) तक़्दीर को झुटलाने वाला (2) शराब का आदी और (3) अपनी औलाद से बराअत ज़ाहिर करने वाला।[3]

﴿11﴾.....हर उम्मत में मजूसी हैं और इस उम्मत के मजूसी वोह लोग हैं जो गुमान करते हैं कि तक़्दीर कुछ नहीं।[4]

﴿12﴾.....क़दरिय्या इस उम्मत के मजूसी हैं।[5] इन रिवायात के रावी चूंकि ज़ईफ़ हैं इस लिये येह रिवायात हुज्जत नहीं हैं।

---

1 .....क़दरिय्या कहते हैं कि बन्दा ख़ुद अपने अफ़्आल का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है जब कि जबरिय्या के नज़्दीक बन्दे का हर फ़े'ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़े'ल है येह बन्दों के लिये कस्ब नहीं मानते जब कि अहले सुन्नत व जमाअ़त इफ़रात़ व तफ़रीत़ से बचते हुवे येह अ़क़ीदा रखते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे और इस के अफ़्आल दोनों का ख़ालिक़ है और अहले सुन्नत बन्दों के लिये इख़्तियार मानते हैं और जो चीज़ इस इख़्तियार के ज़रीए वाक़ेअ़ होती है उसे "कस्ब" का नाम देते हैं। (الحديقة الندية، ۱/ ۳۰۴)

2 ...السنة لابن ابی عاصم، باب قول النبی: ان المکذبین بالقدر...الخ، ص ۷۳، حدیث: ۳۳۴

3 ...السنة لابن ابی عاصم، باب من قال القدریة فی المنسأ تحت قدم الرحمن، ص ۷۵، حدیث: ۳۲۲

4 ...السنة لابن ابی عاصم، باب قول النبی: ان المکذبین بالقدر...الخ، ص ۷۴، حدیث: ۳۳۸

5 ...السنة لابن ابی عاصم، باب قول النبی...الخ، ص ۷۴، حدیث: ۳۴۰

www.dawateislami.net

﴾13﴿.....मेरी उम्मत में से दो गुरौह ऐसे हैं जिन का इस्लाम में कुछ हिस्सा नहीं है : (1) क़दरिय्या (2) मुरजिय्या ।[1]

इमाम इब्ने हिब्बान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस ह़दीस के रावी निज़ार बिन ह़य्यान के बारे में कलाम किया है। निज़ार के इलावा दीगर ह़ज़रात ने भी इस रिवायत को बयान किया लेकिन उन असनाद में भी ज़ईफ़ रावी हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन बिश्र अ़ब्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सल्लाम बिन अबू अ़मरह से, उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरफ़ूअ़न इस की मिस्ल रिवायत की है ।[2]

﴾14﴿.....तक़्दीर के बारे में कलाम इस उम्मत के बदतरीन लोगों के लिये मुअख़्ख़र किया गया है ।[3]

﴾15﴿.....हर कारीगर और उस की कारीगरी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा फ़रमाया है ।[4]

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जिस ने क़स्दन नमाज़ छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है

(حلیۃ الاولیاء، ۷/ ۲۹۹، حدیث: ۱۰۵۹۰)

1 ...ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء فی القدریۃ، ۴/ ۵۹، حدیث: ۲۱۵۶

2 ...ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء فی القدریۃ، ۴/ ۵۹، حدیث: ۲۱۵۶

3 ...معجم الاوسط، ۴/ ۳۵۸، حدیث: ۶۲۳۳

4 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب: ۸۰، ص ۸۱، حدیث: ۳۶۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 38

लोगों की ख़ुफ़्या बातें सुनना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶، الحجرات:۱۲) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंढो।*

कानों में पिघला हुवा सीसा

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنِ اسْتَمَعَ اِلٰى حَدِيْثِ قَوْمٍ وَهُمْ لَهٗ كَارِهُوْنَ اَوْ يَفِرُّوْنَ مِنْهُ صُبَّ فِيْ اُذُنَيْهِ الْاٰنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ صَوَّرَ صُوْرَةً عُذِّبَ وَكُلِّفَ اَنْ يَّنْفُخَ فِيْهَا وَلَيْسَ بِنَافِخٍ

"या'नी जिस ने लोगों के ना पसन्द करने और न चाहने के बा वुजूद उन की बातों की त़रफ़ कान लगाए बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उंडेला जाएगा और जो तसवीर बनाए उसे अ़ज़ाब दिया जाएगा और उसे इस बात की तक्लीफ़ दी जाएगी कि वोह उस में रूह़ फूंके और वोह रूह़ न फूंक सकेगा।"(1)

इस ह़दीसे पाक में मज़्कूर लफ़्ज़ "اَلْاٰنُكُ" से मुराद पिघला हुवा सीसा है। इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने रिवायत किया है।

ग़ुस्से की ता'रीफ़

नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ (दूर) करने पर उभारे। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 655)

1... بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ۴/ ۴۲۲، حدیث: ۷۰۴۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 39

ला'नत भेजना

ला'नत भेजने के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.....मोमिन को ला'नत करना उसे क़त्ल करने की त़रह़ है।(1) येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उस से झगड़ना कुफ़्र है(2)।(3)

﴾3﴿.....ला'नत करने वाले बरोज़े क़ियामत न तो सिफ़ारिश करने वाले होंगे न गवाह(4)।(5) इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم قتل الانسان نفسہ...الخ، ص۶۹، حدیث: ۱۰۹

2 .....मुसलमान से लड़ने को ह़दीसे पाक में कुफ़्र क़रार दिया गया है, येह कुफ़्र ब मा'ना इरतिदाद इस सूरत में होगा जब कि उसे (गाली देने को) ह़लाल ए'तिक़ाद करे। इस ह़दीसे पाक के मा'ना के बारे में दीगर तावीलात येह हैं: (1) कुफ़्र से मुराद कुफ़्राने ने'मत है और ऐसा शख़्स इस्लामी उख़ुव्वत की नाशुक्री करने वाला है। (2) इस फ़े'ले शनीअ़ की नुहूसत बन्दे को कुफ़्र के क़रीब ले जाती है या (3) मुराद येह है कि येह फ़े'ल कुफ़्फ़ार के अफ़्आ़ल की त़रह़ है। (شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب بیان قول النبی سباب المسلم فسوق...الخ، ۲/۵۳، ۵۴)

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان قول النبی سباب المسلم فسوق...الخ، ص۵۲، حدیث: ۶۴

4 .....या'नी उम्मते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़े क़ियामत गुज़श्ता अम्बियाए किराम की गवाह भी होगी कि उन्हों ने अपनी उम्मतों को तब्लीग़ फ़रमा दी और गुनहगारों की शफ़ीअ़ भी मगर जो मुसलमान ला'न व त़ा'न का आ़दी होगा वोह इन दोनों ने'मतों से महरूम रहेगा लिहाज़ा दुन्या में ला'न त़ा'न के आ़दी न बनो। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 342)

5 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب النھی عن لعن الدواب وغیرھا...الخ، ص۱۴۰۰، حدیث: ۲۵۹۸

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत के साथ ला'नत मत करो और न किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और जहन्नम में जाने का कहो[1]।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

﴾5﴿.....सिद्दीक़ के लिये येह लाइक़ नहीं कि वोह ला'न त़ा'न करने वाला हो[3]।[4]

मोमिन ला'न त़ा'न करने वाला नहीं होता

﴾6﴿.....मोमिन ला'नत करने वाला, त़ा'ना देने वाला, फ़ोह़्श गो और बेहूदा गुफ़्तगू करने वाला नहीं होता।[5] इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने ह़सन क़रार दिया है।

﴾7﴿.....बेशक बन्दा जब किसी चीज़ को ला'नत करता है तो वोह ला'नत आस्मान की त़रफ़ चढ़ जाती है तो उस के सामने आस्मान के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर वोह दाईं और बाईं जानिब की राह लेती है अगर जगह नहीं पाती तो जिसे

1 .....या'नी येह न कहो कि तुझ पर ख़ुदा की ला'नत अल्लाह की फिट्कार न येह कहो कि तुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब अल्लाह का क़ह्र वग़ैरा, ला'नत व ग़ज़ब की बद दुआ न करो न येह कहो कि तू जहन्नम में जाए या तेरा ठिकाना दोज़ख़ हो या तुझे ख़ुदा दोज़ख़ में या आग में डाले। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 355)

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعنة، ۳/ ۳۹۳، حدیث: ۱۹۸۳

3 .....सिद्दीक़ के लुग़वी मा'ना हैं बहुत सच्चा येह सादिक़ का मुबालग़ा है सादिक़ वोह जो झूट न बोले, सिद्दीक़ वोह जो झूट न बोल सके। जिसे अल्लाह त'आला सिद्दीक़ बनाए वोह लोगों पर ला'नत करने का आ़दी नहीं होता क्यूंकि सिद्दीक़िय्यत को नबुव्वत से बहुत ही क़ुर्ब है कि नबी के बा'द सिद्दीक़ का दरजा है ह़ज़राते अम्बिया रह़मत वाले होते हैं न कि ला'नत भेजने वाले और न अ़ज़ाब की दुआएं करने वाले। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 341-342)

4 ...مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب النهی عن لعن الدواب وغیرها، ص ۱۳۹۹، حدیث: ۲۵۹۷

5 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی اللعنة، ۳/ ۳۹۳، حدیث: ۱۹۸۴

www.dawateislami.net

ला'नत की गई अगर वोह उस का अह्ल होता है तो उस की त़रफ़ जाती है वरना देने वाले पर लौट आती है।(1)

इस ह़दीस को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾8﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस औ़रत पर नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया जिस ने अपनी ऊंटनी पर ला'नत की और उस से वोह ऊंटनी अलग कर दी गई जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत में है : हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे कि एक अन्सारी औ़रत अपनी ऊंटनी पर सुवार थी, उस ने अपनी ऊंटनी को झिड़का और उस पर ला'नत भेजी। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऊंटनी पर जो सामान है उसे पकड़ कर उतार दो और ऊंटनी को छोड़ दो कि वोह ला'नती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : मैं गोया अब भी उस ऊंटनी को देख रहा हूं कि वोह लोगों में चलती फिरती है और कोई उस से तआ़रुज़ नहीं करता।(2) येह ह़दीस इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत की है।

सब से बड़ा सूद

﴾9﴿.....बेशक सब से बड़ा सूद बन्दे का अपने मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त में ज़बाने त़ा'न दराज़ करना है।(3)

---

1 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی اللعن، ۴/۳۶۱، حدیث: ۴۹۰۵

2 ...مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب النهی عن لعن الدواب وغیرها، ص۱۳۹۹، حدیث: ۲۵۹۵

3 ...ابو داود، کتاب الادب باب فی الغیبة، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 40

अमीर के साथ अ़ह्द शिक्नी वग़ैरा करना

ईफ़ाए अ़ह्द के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अ़ह्द पूरा करो बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है।

﴿2﴾.....

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ (پ۶، المائدۃ:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़ह्द) पूरे करो।

﴿3﴾.....

وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ (پ۱۴، النحل:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह का अ़ह्द पूरा करो जब क़ौल बांधो।

अ़ह्द व बद अ़ह्दी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....चार ख़स्लतें जिस में होंगी वोह पक्का मुनाफ़िक़ है : (1) बात करे तो झूट बोले (2) अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करे (3) जब अ़ह्द करे तो धोकादेही से काम ले और (4) जब झगड़े तो गाली बके।[1]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

[1]...بخاری، کتاب الایمان، باب علامۃ المنافق، ۱/ ۲۵، حدیث:۳۴

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....हर बद अ़ह्द के लिये बरोज़े क़ियामत उस की सुरीन के पास एक झन्डा होगा, कहा जाएगा कि येह फ़ुलां की बद अ़ह्दी है। सुनो ! अ़वाम का अमीर से बद अ़ह्दी करने से बढ़ कर कोई बद अ़ह्दी नहीं।[1] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾3﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : बरोज़े क़ियामत तीन लोगों की त़रफ़ से मैं मुत़ालबा करूंगा : (1) वोह शख़्स जिसे मेरे सबब अ़त़ा किया गया फिर उस ने बद अ़ह्दी की। (2) वोह शख़्स जिस ने आज़ाद शख़्स को बेच कर उस की क़ीमत खा ली और (3) वोह शख़्स जिस ने किसी को मज़दूर रखा और उस से पूरा पूरा काम लिया मगर उसे उजरत नहीं दी।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

﴾4﴿.....जिस ने अपना हाथ फ़रमां बरदारी से निकाल लिया वोह क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस के पास कोई दलील न होगी और जो शख़्स इस ह़ालत में मरा कि उस की गर्दन में बैअ़त नहीं थी, वोह जाहिलिय्यत की मौत मरा[3]।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب تحریم الغدر، ص۹۵۶، حدیث:۱۷۳۸

2 ... بخاری، کتاب البیوع، باب اثم من باع حرا... الخ، ۲/ ۵۲، حدیث:۲۲۲۷

3 .....या'नी सुल्त़ाने इस्लाम होने के बा वुजूद जो उस की बैअ़ते ख़िलाफ़त न करे तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा। इस ह़दीस में दलील से मुराद बन्दे के ईमान व तक़्वा की दलील व सुबूत है। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 389 मुलख़्ख़सन)

4 ...مسلم، کتاب الامارة، باب وجوب ملازمة جماعة المسلمین... الخ، ص۱۰۳۰، حدیث:۱۸۵۱

www.dawateislami.net

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

﴿5﴾.....जो इस बात को महबूब रखता हो कि उसे आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए तो चाहिये कि उसे मौत इस ह़ालत में आए कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो और लोगों से इस त़रह़ पेश आए जैसे अपने लिये चाहता है और जिस ने किसी अमीर से बैअ़त की फिर अपने हाथ का अ़मल और दिल का फल उसे दे दिया तो उसे चाहिये कि त़ाक़त भर उस की फ़रमां बरदारी करे[1] और अगर कोई उस के पास आ कर उस से झगड़े तो येह उस दूसरे की गर्दन मार दे ।[2]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

﴿6﴾.....जिस ने मेरी इत़ाअ़त की बिलाशुबा उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की बिलाशुबा उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की और जिस ने अमीर की इत़ाअ़त की बिलाशुबा उस ने मेरी इत़ाअ़त की और जिस ने अमीर की ना फ़रमानी की बिलाशुबा उस ने मेरी ना फ़रमानी की ।[3] येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

---

1 ...या'नी दिल का इख़्लास उसे दे कर दिल से उस की बैअ़त करे या दिल के मेवे से मुराद औलाद है, या'नी अपने बाल बच्चों से भी उस इमाम की बैअ़त कराए । (मिरआतुल मनाजीह़, 5 /392 मुल्तक़त़न)

2 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب الوفاء ببیعۃ الخلفاء...الخ، ص۱۰۲۶، حدیث: ۱۸۴۴

3 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب طاعۃ الامراء فی غیر معصیۃ...الخ، ص۱۰۲۱، حدیث: ۱۸۳۵

www.dawateislami.net

हुक्मरान की ना गवार बात पर सब्र करो

﴾7﴿.....जिसे अपने हुक्मरान की कोई बात ना गवार गुज़रे तो उसे सब्र करना चाहिये कि बिलाशुबा जो बालिश्त भर हाकिम की इताअ़त से निकला वोह जाहिलिय्यत की मौत मरा।(1)(2)

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾8﴿.....जो बालिश्त भर जमाअ़त से बाहर निकला तो बिलाशुबा उस ने इस्लाम का पट्टा अपनी गर्दन से उतार दिया(3)।(4)

येह ह़दीस मुख़्तलिफ़ सह़ीह़ असनाद से मरवी है।

इमाम ज़ह्बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस से बड़ा गुनाह कौन सा होगा कि तुम एक शख़्स की बैअ़त कर के अपना हाथ उस की फ़रमां बरदारी से निकाल लो और अपने साबिक़ा अ़मल को ख़त्म कर दो और अपनी तल्वार के साथ उस से जंग करो या तुम उसे रुस्वा करो ह़त्ता कि उसे क़त्ल कर दिया जाए ?

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो हम पर हथयार उठाए वोह हम में से नहीं है।"(5)

येह ह़दीसे पाक सह़ीह़ है।

---

1 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب ملازمۃ جماعۃ المسلمین...الخ، ص۱۰۲۹، حدیث: ۱۸۴۹

2 ...या'नी अगर ह़ाकिम या सुल्त़ान में कोई शरई या त़बई या अख़्लाक़ी नक़्स देखे तो सिर्फ़ इस वज्ह से उस पर ख़ुरूज न करे और उस के ख़िलाफ़ अ़लमे बग़ावत बुलन्द न करे इस का येह मत़लब नहीं कि अह़सन त़रीक़े से उस की इस्लाह़ भी न करे जाबिर ह़ाकिम के सामने कलिमए ह़क़ कह देना तो आ'ला दरजे का जिहाद है इस्लाह़ और चीज़ है ख़ुरूज कुछ और। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/384)

3 .....या'नी जो मुसलमानों की उस जमाअ़त से जो किसी सुल्त़ाने इस्लाम पर मुत्तफ़िक़ व मुत्त़हिद हों थोड़ा सा भी अलग रहेगा उस की मौत, ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों की सी मौत होगी कि न उन का कोई सुल्त़ान होता था और न उन में तन्ज़ीम थी, न क़ौमी इत्तिफ़ाक़। इस का मत़लब येह नहीं कि वोह काफ़िर हो जाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 384)

4 ...ابو داود، کتاب السنۃ، باب فی قتال الخوارج، ۴/ ۳۱۸، حدیث: ۴۷۵۸

5 ...مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی: من حمل علینا السلاح فلیس منا، ص۶۴، حدیث: ۹۸

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 41

काहिन[1] और नुजूमी को सच्चा जानना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं।

और फ़रमाता है :

اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

(پ۲۶، الحجرات: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

नीज़ फ़रमाता है :

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰى غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(پ۲۹، الجن: ۲۶، ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

इल्मे नुजूम और नुजूमी के मुत'अल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴿1﴾.....जो शख़्स नुजूमी या काहिन के पास गया और उस की बातों को सच जाना बिलाशुबा उस ने उस शै का इन्कार किया जो मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल की गई है।[2]

इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है।

---

1 .....अल्लामा ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : काहिन उसे कहते हैं जो इल्मे ग़ैब पर इत्तिलाअ़ का दा'वेदार हो और मुस्तक़बिल में होने वाले वाक़िआ़त की ख़बरें देता हो। (معالم السنن، کتاب الطب، ومن باب النهی عن اتیان الکاهن، ۴/ ۲۲۸)

2 ...ابو داود، کتاب الطب، باب فی النجوم، ۴/ ۲۰، حدیث: ۳۹۰۴

www.dawateislami.net

﴿2﴾.....बारिश वाली रात की सुब्ह रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दों ने मोमिन और काफ़िर होने की हालत में सुब्ह की तो जिस शख़्स ने येह कहा : हम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल के सबब बारिश हुई तो वोह मुझ पर ईमान रखने वाला है और सितारों (की तासीर) का मुन्किर है और जिस ने येह कहा कि फ़ुलां सितारे की वज्ह से हम पर बारिश हुई वोह मेरे साथ कुफ़्र करने वाला है[1] और सितारों पर ईमान रखने वाला है।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿3﴾.....जो नुजूमी के पास आया और उस से किसी शै के बारे में दरयाफ़्त किया फिर उस की तस्दीक़ की तो ऐसे शख़्स की 40 दिन की नमाज़ क़बूल नहीं होगी[3]।[4]

इसे इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

---

1 .....काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं ह़क़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है। इसी को ह़दीस में फ़रमाया : فَقَدْ كَفَرَ بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बेशक उस से इन्कार किया जो कुछ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर उतारा गया। और अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद व तयक़्कुन न हो मगर मेल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है। इसी को ह़दीस में फ़रमाया : لَمْ يُقْبَلِ اللهُ لَهٗ صَلٰوةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا अल्लाह तआ़ला चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा। और अगर हज़ल व इस्तिह्ज़ा हो तो अ़ब्स व मकरूह ह़माक़त है। हां अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी मक़्सूद इस के इ़ज़्ज़ का इज़्हार) हो तो ह़रज नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 155)

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کفر من قال: مطرنا...الخ، ص ۵۴، حدیث: ۷۱

3 .....अगर साइल तस्दीक़ के लिये सुवाल करेगा तो येह हुक्म है और अगर उस का मज़ाक़ उड़ाने और उस के इ़ज़्ज़ को ज़ाहिर करने के लिये नीज़ इसे झूटा साबित करने के लिये कुछ दरयाफ़्त करे तो येह हुक्म नहीं, नमाज़ क़बूल न होने से मुराद नमाज़ का सवाब न मिलना है। (مرقاۃ المفاتیح، ۸/ ۳۶۲)

4 ...مسلم، کتاب السلام، باب تحریم الکھانۃ واتیان الکھان، ص ۱۲۲۵، حدیث: ۲۲۳۰

www.dawateislami.net

﴿4﴾.....जिस ने इल्मे नुजूम का एक हिस्सा सीखा[1] तो उस ने जादू का एक हिस्सा सीखा है।[2]

इस हदीसे पाक को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ब सनदे सहीह रिवायत किया है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 42

शोहर की ना फ़रमानी करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ (پ۵، النساء: ۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन औरतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो।

शोहर की ना फ़रमानी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए मगर वोह न आए और उस का शोहर उस से नाराज़ी की हालत

---

1 .....शर्हुस्सुन्नह में है : जिस इल्मे नुजूम के बारे में नह्य वारिद है, इस से मुराद वोह इल्म है जिस का मुद्दई आइन्दा होने वाले वाक़िआ़त मसलन हवाओं का चलना, बारिशें होना, बर्फ़बारी होना और सर्दी व गर्मी होने वग़ैरा की मा'रिफ़त का मुद्दई हो और रहे वोह उमूर जिन का इदराक इल्मे नुजूम के ज़रीए मुशाहदे से किया जाता है जिस के ज़रीए वक़्ते ज़वाल और जहते क़िब्ला की मा'रिफ़त होती है तो इन उमूर का इल्म मज़कूरा नफ़ी में दाख़िल नहीं है। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इल्मे नुजूम में से इतना सीखो जिस के ज़रीए तुम क़िब्ला और रास्ते पहचान सको और इतना इल्म हासिल कर लेने के बा'द इस से रुक जाओ। (مرقاۃ المفاتیح، ۸/ ۳۶۲، ملخصًا)

2 ...ابو داود، کتاب الطب، باب فی النجوم، ص ۲۱، حدیث: ۳۹۰۵

www.dawateislami.net

में रात गुज़ारे तो सुब्ह तक फ़िरिश्ते उस औ़रत पर ला'नत करते रहते हैं ।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है और बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में यूं है :

﴿2﴾.....जब औ़रत अपने शोहर के बिस्तर से अ़लाह़िदा रात गुज़ारती है (या'नी उसे नाराज़ कर के) तो फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं ।[2]

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं :

﴿3﴾.....उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो मर्द अपनी औ़रत को बिस्तर पर बुलाए और वोह आने से इन्कार कर दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर उस वक़्त तक ग़ज़बनाक रहता है जब तक उस का शोहर उस से राज़ी न हो जाए ।[3]

नफ़्ली रोज़े के लिये शोहर की इजाज़त

﴿4﴾.....जिस औ़रत का शोहर मौजूद हो उस के लिये शोहर की इजाज़त के बिग़ैर (नफ़्ली) रोज़ा रखना ह़लाल नहीं और न उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के घर में किसी को आने की इजाज़त देना जाइज़ है ।[4] इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

---

1 ...مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، ص۷۵۳، حدیث: ۱۴۳۶

2 ...مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، ص۷۵۳، حدیث: ۱۴۳۶

3 ...مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، ص۷۵۳، حدیث: ۱۴۳۶

4 ...بخاری، کتاب النکاح، باب لا تأذن المرأة فی بیت زوجها...الخ، ۳/۴۶۲ حدیث: ۵۱۹۵

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....अगर मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और के लिये सजदा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सजदा करे।(1)

इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फूफीजान ने बारगाहे रिसालत में अपने शोहर का ज़िक्र किया तो रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : देख लो तुम्हारा उन से क्या रविय्या है वोह तुम्हारी जन्नत और दोज़ख़ है।(2)

इसे इमाम नसाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

﴾7﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो अपने शोहर का शुक्र अदा नहीं करती ह़ालांकि वोह उस से मुस्तग़नी नहीं हो सकती।(3)

इस ह़दीस की सनद सह़ीह़ है जिसे इमाम नसाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

﴾8﴿.....जो औ़रत (बिला इजाज़त) अपने शोहर के घर से निकले उस पर फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं ह़त्ता कि घर लौट आए या तौबा कर ले।(4)

इस बाब में कई अह़ादीसे मुबारका वारिद हैं।

❶...ترمذی، کتاب الرّضاع، باب ماجاء فی حقّ الزّوج...الخ، ۲/ ۳۸۶، حدیث: ۱۱۶۲

❷...سنن کبری للنسائی، کتاب عشرۃ النّساء، طاعۃ المراۃ زوجھا، ۵/ ۳۱۰، حدیث: ۸۹۶۲

❸...سنن کبری للنسائی، کتاب عشرۃ النساء، شکر المراۃ لزوجھا، ۵/ ۳۵۴، حدیث: ۹۱۳۵

❹...معجم الاوسط، ۱/ ۱۵۸، حدیث: ۵۱۳

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 43

रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَؕ (پ۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।

और इरशाद फ़रमाता है :

فَهَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾

(پ۲۶، محمد: ۲۲، ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन्हें हक़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं।

क़त्ए रेह्मी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।[1]

﴿2﴾.....जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि सिलए रेह्मी करे।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿3﴾.....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया ह़त्ता कि जब मख़्लूक़ पैदा फ़रमा चुका तो रेह्म ने खड़े हो कर

1 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب صلۃ الرحم وتحریم قطیعتھا، ص ۱۳۸۳، حدیث: ۲۵۵۶

2 ...بخاری، کتاب الآداب، باب اکرام الضیف...الخ، ۴/ ۱۳۶، حدیث: ۶۱۳۸

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : येह तुझ से क़त्ए़ रेह़्मी से पनाह मांगने का मक़ाम है। इरशाद फ़रमाया : क्या तू इस पर राज़ी नहीं है कि जो तुझे जोड़े मैं उसे मिलाऊं और जो तुझे काटे मैं उसे काट दूं ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं इस पर राज़ी हूं।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

फ़राख़िये रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़े का नुस्ख़ा

﴾4﴿.....जो येह चाहे कि उस के रिज़्क़ में कुशादगी और उ़म्र में इज़ाफ़ा किया जाए तो उसे सिलए रेह़्मी करनी चाहिये।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾5﴿.....रेह़्म अ़र्श के साथ मुअ़ल्लक़ है और वोह कहता है : जो मुझे मिलाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मिलाएगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे काट देगा।[3]

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं :

﴾6﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : जो इसे जोड़ेगा मैं उसे मिलाऊंगा और जो इसे काटेगा मैं उसे हलाक करूंगा।[4]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अल्लाह का अ़ह्द उस के पक्के होने के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को

1...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب صلۃ الرحم وتحریم قطیعتہا، ص ۱۳۸۳، حدیث: ۲۵۵۴

2...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب صلۃ الرحم وتحریم قطیعتہا، ص ۱۳۸۴، حدیث: ۲۵۵۷

3...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب صلۃ الرحم وتحریم قطیعتہا، ص ۱۳۸۳، حدیث: ۲۵۵۵

4...ابو داود، کتاب الزّکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، ۲/ ۱۸۳، حدیث: ۱۶۹۴

www.dawateislami.net

بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓىٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿۲۵﴾ (پ۱۳، الرعد: ۲۵)

अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा घर।

﴿7﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं रह़मान हूं और येह रेह़्म है तो जो इसे मिलाएगा मैं उसे मिलाऊंगा और जो इसे काटेगा मैं उसे काट दूंगा।[1]

क़ातेए रेह़्म से कौन मुराद है ?

हम कहते हैं : यहां वोह शख़्स मुराद है जो ग़नी होने के बा वुजूद अपने ग़रीब रिश्तेदारों के साथ क़त्एे रेह़्मी करे और यूंही यहां वोह शख़्स भी मुराद है जो बे मुरव्वती, अपनी कोताही और बे वुक़ूफ़ी के सबब अपने रिश्तेदारों के साथ क़त्एे रेह़्मी करे।

﴿8﴾.....अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी करो अगर्चे सलाम करने के साथ ही हो।[2]

60 साल की इबादत से बेहतर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : (आख़िरत के मुआ़मले में) घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है। (الجامع الصغیر للسیوطی، ص۳۶۵، حدیث: ۵۸۹۷)

---

1 ... ابو داود، کتاب الزّکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، ۲/ ۱۸۳، حدیث: ۱۶۹۴

2 ... شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ۶/ ۲۲۶، حدیث: ۷۹۷۲

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 44

कपड़े या दीवार वग़ैरा में तस्वीर बनाना

तस्वीर बनाने की मज़म्मत में आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....जिस ने कोई तस्वीर बनाई उसे येह तक्लीफ़ दी जाएगी कि वोह उस में रूह फूंके और वोह रूह न फूंक सकेगा।(1)

बरोज़े क़ियामत सख़्त तरीन अ़ज़ाब

﴿2﴾.....बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से सख़्त अ़ज़ाब तस्वीर बनाने वालों को होगा, इन से कहा जाएगा : जो तुम ने बनाया है उसे ज़िन्दा करो।(2)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿3﴾.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं : रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए, मैं ने अपनी निशस्तगाह (या चबूतरे) पर तस्वीरों वाला बारीक पर्दा लटकाया हुवा था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फाड़ डाला, आप के चेहरे का रंग मुतग़य्यर हो गया और इरशाद फ़रमाया :

یَاعَائِشَةُ اَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا عِنْدَ اللّٰهِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ الَّذِیْنَ یُضَاهُوْنَ بِخَلْقِ اللّٰهِ

"या'नी ऐ आइशा ! बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक लोगों में से सख़्त तरीन अ़ज़ाब उन को होगा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ की मुशाबहत करते हैं।"(3)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

---

1 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم تصویر الحیوان...الخ، ص ۱۱۷۰، حدیث: ۲۱۱۰

2 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم تصویر الحیوان...الخ، ص ۱۱۶۹، حدیث: ۲۱۰۸

3 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم تصویر الحیوان...الخ، ص ۱۱۶۷، حدیث: ۲۱۰۷

www.dawateislami.net

सुनन में उ़म्दा सनद के साथ रिवायत है :

﴾4﴿.....(बरोजे़ कि़यामत) आग से एक गर्दन निकलेगी और कहेगी : मुझे हर उस शख़्स पर जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ दूसरे को पूजे और हर सर्कश हटधर्म और तस्वीर बनाने वाले पर मुसल्लत़ किया गया है।(1)

इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

﴾5﴿.....जो लोग (जानदार) की तस्वीरें बनाते हैं कि़यामत के दिन उन्हें सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा, उन से कहा जाएगा : जो तुम ने बनाया है उसे ज़िन्दा करो।(2)

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾6﴿.....हर तस्वीर बनाने वाला आग में है, उस के लिये अपनी बनाई हुई हर तस्वीर के बदले में एक जान बनाई जाएगी जो जहन्नम में उसे अ़ज़ाब देगी।(3)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾7﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन है जो मेरी तख़्लीक़ कर्दा मख़्लूक़ की त़रह़ मख़्लूक़ बनाना चाहता है ? पस वोह एक दाना, एक जव और एक ज़र्रा तो बना कर दिखा दे ?(4) येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾8﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तस्वीर बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।(5) येह ह़दीस सह़ीह़ है।

---

❶...ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ما جاء فی صفة النار، ۴/۲۵۹، حدیث: ۲۵۸۳

❷...مسلم، کتاب اللباس والزينة، باب تحريم تصوير الحيوان...الخ، ص ۱۱۶۹، حدیث: ۲۱۰۸

❸...مسلم، کتاب اللباس والزينة، باب تحريم تصوير الحيوان...الخ، ص ۱۱۷۰، حدیث: ۲۱۱۰

❹...مسلم، کتاب اللباس والزينة، باب تحريم تصوير الحيوان...الخ، ص ۱۱۷۰، حدیث: ۲۱۱۱

❺...بخاری، کتاب البيوع، باب موكل الربوا، ۲/۱۵، حدیث: ۲۰۸۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 45

चुग़ली[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿۱۲﴾

(پ۲۹، القلم: ۱۰ تا ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला ज़लील बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला भलाई से बड़ा रोकने वाला हद से बढ़ने वाला गुनहगार।

चुग़ली के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल न होगा।[2]

येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

चुग़ली के सबब अ़ज़ाबे क़ब्र

﴿2﴾.....रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दोनों अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में अ़ज़ाब नहीं दिये जा रहे। इन में से एक चुग़ली किया करता था और दूसरा अपने पेशाब से नहीं बचता था।[3]

येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

---

1 .....किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना चुग़ली है। (عمدۃ القاری، ۲/ ۵۹۴، تحت الحدیث: ۲۱۶)

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب غلظ تحریم النمیمۃ، ص ۶۶، حدیث: ۱۰۵

3 ...مسلم، کتاب الطھارۃ، باب دلیل علی نجاسۃ البول...الخ، ص ۱۶۷، حدیث: ۲۹۲

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....تَجِدُوْنَ شَرَّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ الَّذِیْ یَاْتِیْ هٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ وَهٰؤُلَاءِ بِوَجْهٍ "या'नी तुम लोगों में से बदतरीन दो रुख़े शख़्स[1] को पाओगे जो एक के पास एक रुख़ से जाता है और दूसरे के पास दूसरे रुख़ से।"[2]

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं :

﴿4﴾.....تَجِدُوْنَ شِرَارَ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ "या'नी तुम लोगों में से बदतरीन दो रुख़े को पाओगे।"[3]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿5﴾.....कोई शख़्स मेरे सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ किसी बात को मुझ तक न पहुंचाए क्यूंकि मुझे येह पसन्द है कि तुम्हारे पास से इस ह़ालत में निकलूं कि मेरा सीना साफ़ हो।[4] इस ह़दीस को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा ने रिवायत किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : चुग़ली से बचो कि बिलाशुबा चुग़ली करने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ नहीं रहता।

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

---

1 .....दो रुख़ा शख़्स बाहम दुश्मनी रखने वाले दो अफ़राद से उन की मुवाफ़िक़त में कलाम करता है या उन में से एक की बात दूसरे को पहुंचा देता है या हर एक को इस झगड़े में सह़ीह़ मौक़िफ़ पर क़रार देता और इस पर उस की ता'रीफ़ करता है या दोनों से वा'दा करता है कि मैं मुख़ालिफ़ के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद करूंगा। (الطريقة المحمدية، القسم الثاني في آفات اللسان، النوع الخامس والعشرون، ۲/ ۱۸۶)

2 ...بخاری، کتاب المناقب، باب قول الله: یاایها الناس انا خلقناکم...الخ، ۲/ ۴۷۳، حدیث: ۳۴۹۴

3 ...مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب خیار الناس، ص ۱۳۶۷، حدیث: ۲۵۲۶

4 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی رفع الحدیث من المجلس، ۴/ ۳۴۸، حدیث: ۴۸۶۰

www.dawateislami.net

حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۚ﴿۴﴾ (پ۳۰،اللھب:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (और उस की जोरू) लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद अबू लहब की बीवी है जो चुग़ली किया करती थी।

गुनाहे कबीरा नम्बर 46

नौहा करना और चेहरा पीटना

नौहे के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....लोगों में दो चीज़ें ज़मानए कुफ़्र की अ़लामत हैं : (1) नसब में ता'न करना और (2) मय्यित पर नौहा करना।(1) इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने रिवायत किया है।

मुस्लिम शरीफ़ की सह़ीह़ ह़दीस में है :

﴾2﴿.....नौहा करने वाली अगर तौबा न करे तो उसे बरोज़े क़ियामत जरब की क़मीस और राल का लिबास पहनाया जाएगा(2)।(3)

1...مسلم، کتاب الجنائز،باب التشدید فی النیاحة، ص۴۶۵،حدیث:۹۳۴

2.....राल (के लिबास) में आग जल्द लगती है और सख़्त गर्म भी होती है, जरब वोह कपड़ा है जो सख़्त ख़ारिश में पहनाया जाता है। मा'लूम होता है कि नाइह़ा पर उस दिन ख़ारिश का अ़ज़ाब मुसल्लत़ होगा क्यूंकि वोह नौहा कर के लोगों के दिल मजरूह़ करती थी तो क़ियामत के दिन उसे ख़ारिश से ज़ख़्मी किया जाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 490)

3...مسلم، کتاب الایمان،باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن...الخ،ص۵۳،حدیث:۶۷

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....वोह हम में से नहीं जो गालों को पीटे, गिरेबान चाक करे और जाहिलिय्यत की बातें बके।[1]

﴾4﴿.....बिलाशुबा मय्यित को उस पर नौहा किये जाने के सबब उस की क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है।[2][3]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नौहा करने वाली, सर मुंडाने वाली और गिरेबान चाक करने वाली औ़रत से बरी हैं।[4]

आख़िरी तीन रिवायात बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 47

नसब पर त़ा'न करना

ब त़रीक़े सहीह मन्क़ूल है कि नसब में त़ा'न करना कुफ़्र है।[5]

1...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم ضروب الخدود...الخ، ص ۶۵، حدیث: ۱۰۳

2...بخاری، کتاب الجنائز، باب مایکرہ من النیاحۃ...الخ، ۱/ ۴۳۸، حدیث: ۱۲۹۲

3.....जुमहूर उ़लमा का क़ौल येह है कि येह वईद उस शख़्स के लिये है जिस ने येह वसिय्यत की हो कि मेरे मरने के बा'द मुझ पर नौहा करना। पस ह़स्बे वसिय्यत उस की मय्यित पर नौहा किया गया तो उस शख़्स को बा'दे मर्ग नौहा किये जाने पर अ़ज़ाब होगा क्यूंकि येही शख़्स इस फ़े'ल का सबब है और येह फ़े'ल इसी की त़रफ़ मन्सूब होगा। बहर ह़ाल जिस शख़्स ने ऐसी कोई वसिय्यत न की हो और उस के मरने के बा'द उस के अहले ख़ाना उस की मय्यित पर नौहा करें तो इस सूरत में उस शख़्स को अ़ज़ाब नहीं होगा।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الجنائز، ۲/ ۲۲۹، مرقاۃ المفاتیح، ۴/ ۲۰۸)

4...مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم ضروب الخدود...الخ، ص ۶۶، حدیث: ۱۰۴

5.....नसब पर त़ा'न अगर ह़लाल समझ कर है तो कुफ़्र से मुराद कुफ़्रे ह़क़ीक़ी है वरना नाशुक्री मुराद है। (فیض القدیر، ۳/ ۳۸۸، تحت الحدیث: ۳۴۳۷)

www.dawateislami.net

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में दो चीज़ें ज़मानए कुफ़्र की अ़लामत हैं : (1) नसब में ता'न करना और (2) मय्यित पर नौहा करना।[1]

गुनाहे कबीरा नम्बर 48

बग़ावत व सर्कशी करना[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا السَّبِیْلُ عَلَى الَّذِیْنَ یَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾

(پ۲۵، الشوریٰ: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुवाख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सर्कशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

बग़ावत व सर्कशी के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि तुम लोग एक दूसरे के लिये तवाज़ोअ़ करो ह़त्ता कि कोई दूसरे पर ज़ुल्म व सर्कशी न करे और कोई दूसरे पर फ़ख़्र न जताए।[3]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है।

---

1 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب التشدید فی النیاحۃ، ص۴۶۵، حدیث: ۹۳۴

2 .....बग़ावत व सर्कशी का मा'ना ज़ुल्म करना है या सुल्त़ाने इस्लाम पर ख़ुरूज या तकब्बुर करना है। (مرقاۃ المفاتیح، ۸/ ۲۲۶، تحت الحدیث: ۴۹۳۲)

3 ...مسلم، کتاب الجنۃ، باب الصفات التی... الخ، ص۱۵۳۳، حدیث: ۲۸۶۵

www.dawateislami.net

एक रिवायत में है : अगर कोई पहाड़ दूसरे पहाड़ पर जुल्म करता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जुल्म करने वाले को पाश पाश कर देता ।[1]

﴾2﴿.....सर्कशी और क़त्ए रेह्मी से ज़ियादा कोई गुनाह इस लाइक़ नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में इस के लिये सज़ा को जम्अ़ रखने के साथ साथ दुन्या में भी इस के मुर्तकिब को जल्द सज़ा दे ।[2]

ख़ुश लिबासी तकब्बुर नहीं ?

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हज़रते मालिक रुहावी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ख़ूब सूरती अ़ता की गई है जैसा कि आप देख रहे हैं और मैं येह पसन्द नहीं करता कि कोई जूते के तस्मे में भी मुझ से फ़ाइक़ हो, क्या येह तकब्बुर है ? इरशाद फ़रमाया : येह तकब्बुर नहीं है बल्कि तकब्बुर हक़ बात का इन्कार करना है या इरशाद फ़रमाया : तकब्बुर हक़ को झुटलाना और लोगों को हक़ीर समझना है ।[3] इस ह़दीसे पाक की सनद क़वी है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ारून को उस की बग़ावत व सर्कशी के सबब ज़मीन में धंसा दिया ।

बिल्ली के सबब औ़रत को अ़ज़ाब

﴾4﴿.....एक औ़रत को बिल्ली की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला किया गया जिसे उस ने बांध कर रखा था ह़त्ता कि वोह मर गई

---

1 ...الادب المفرد، باب البغی، ص ۱۶۷، حدیث: ۲۰۱

2 ...الادب المفرد، باب عقوبۃ عقوق الوالدین، ص ۳۱، حدیث: ۲۹

3 ...مستدرک حاکم، کتاب اللباس، باب ان اللہ جمیل یحب الجمال، ۵/ ۲۵۶، حدیث: ۷۴۴۵

www.dawateislami.net

तो वोह औ़रत उस बिल्ली के सबब आग में दाख़िल हुई क्यूंकि उस ने बिल्ली को खाने को दिया न पीने को और न ही खुला छोड़ा कि वोह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ी रूह़ चीज़ को निशाना बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है[2]।[3]

येह रिवायत बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿5﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : मैं अपने ग़ुलाम को कोड़े से मार रहा था इसी दौरान मैं ने अपने पीछे एक आवाज़ सुनी : "ऐ अबू मसऊ़द ! जान लो।" ग़ुस्से के सबब मैं आवाज़ पहचान नहीं पाया। जब वोह मेरे क़रीब आए तो मा'लूम हुवा कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू मसऊ़द ! जान लो कि जितनी क़ुदरत तुम इस ग़ुलाम पर रखते हो इस से कहीं ज़ियादा क़ुदरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रखता है। मैं ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : मैं आज के बा'द कभी अपने ग़ुलाम को नहीं मारूंगा।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب السلام، باب تحریم قتل الھرۃ، ص ۱۲۳۱، حدیث: ۲۲۴۲

2 .....जानवर को बांध कर उसे तीर का निशाना बनाया जाए येह ह़राम है कि इस में अगर वोह मर गया तो जानवर ह़राम हो गया न मरा और ज़ब्ह़ किया गया तो उसे बिला वज्ह डबल तक्लीफ़ दी गई। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 673)

3 ...مسلم، کتاب الصید والذبح...الخ، باب النھی عن صبر البھائم، ص ۱۰۸۱، حدیث: ۱۹۵۸

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب صحبۃ المماليک...الخ، ص ۹۰۴، حدیث: ۱۶۵۹

www.dawateislami.net

एक रिवायत में येह भी है : रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत के सबब मेरे हाथ से कोड़ा गिर गया।[1]

एक रिवायत में है : मैं ने अ़र्ज़ की : येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद है। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम ऐसा न करते तो तुम्हें आग पहुंचती।[2] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

ग़ुलाम को बे क़ुसूर मारने का कफ़्फ़ारा

﴿6﴾.....जिस ने अपने ग़ुलाम को बे क़ुसूर मारा या उसे थप्पड़ रसीद किया तो इस का कफ़्फ़ारा उस ग़ुलाम को आज़ाद करना है।[3] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴿7﴾.....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को अ़ज़ाब देगा जो दुन्या में लोगों को अ़ज़ाब देते हैं।[4]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴿8﴾.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक गधे के क़रीब से हुवा जिस के चेहरे को दाग़ा गया था। येह देख कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने इस के चेहरे को दाग़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए।[5]

इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب صحبة المماليک...الخ، ص۹۰۵، حدیث: ۱۶۵۹

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب صحبة المماليک...الخ، ص۹۰۴، حدیث: ۱۶۵۹

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب صحبة المماليک...الخ، ص۹۰۳، حدیث: ۱۶۵۷

4 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب الوعید الشدید لمن...الخ، ص۱۴۰۸، حدیث: ۲۶۱۳

5 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب النهی عن ضرب الحیوان...الخ، ص۱۱۷۲، حدیث: ۲۱۱۷

www.dawateislami.net

﴿9﴾.....जिस ने किसी ऐसी जान को नाहक़ क़त्ल कर डाला जिस का इस्लामी हुकूमत से मुआ़हदा था तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पा सकेगा और बेशक जन्नत की ख़ुश्बू पांच सौ साल की मसाफ़त से महसूस की जाएगी।[1]

येह ह़दीस मुस्लिम की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 49

मुसलमान पर नाहक़ ख़ुरूज करना और कबीरा गुनाह के मुर्तकिब को काफ़िर क़रार देना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۱۹۰﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़द से न बढ़ो अल्लाह पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को।

और फ़रमाता है :

وَ مَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا مُّبِیْنًا ﴿۳۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो हुक्म न माने अल्लाह और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका।

रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने मुसलमान भाई को ऐ काफ़िर ! कहे तो बिलाशुबा कुफ़्र उन दोनों में से एक पर लौटेगा।[2]

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الایمان، باب من قتل نفسا معاھدۃ...الخ، ۱/ ۲۱۰، حدیث: ۱۴۱

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من قال...الخ، ص ۵۱، حدیث: ۶۰

www.dawateislami.net

ख़वारिज की मज़म्मत

ख़वारिज[1] के ह़ालात के बारे में कई आसार वारिद हैं। उ़लमा का इन की तक्फ़ीर के बारे में इख़्तिलाफ़ है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (इन के मुतअ़ल्लिक़) इरशाद फ़रमाया : येह दीन से इस त़रह़ निकल जाएंगे जैसा कि तीर शिकार से निकल जाता है[2] तुम जहां भी इन को पाओ क़त्ल कर दो[3]।[4]

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह लोग ज़मीन पर बदतरीन मक़्तूल हैं और जिन को येह क़त्ल करें वोह बेहतरीन मक़्तूल हैं।[5]

ख़वारिज बद मज़हब हैं, येह लोग आ़म मुसलमानों के ख़ून को जाइज़ और इन की तक्फ़ीर को ह़लाल जानते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त को काफ़िर क़रार देते हैं।

ख़वारिज जहन्नमी कुत्ते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मैं ने रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : ख़ारिजी जहन्नम के कुत्ते हैं।[6]

---

1 .....ख़वारिज से मुराद वोह लोग हैं जिन का गुमान येह है : कबीरा गुनाह का मुर्तकिब शख़्स काफ़िर है और वोह हमेशा जहन्नम में रहेगा। (فیض القدیر، ۳/۶۷۹، تحت الحدیث: ۴۱۴۸)

2 .....या'नी शिकारी का तीर जिस्म में दाख़िल हो कर ऐसे निकल जाता है कि उस में ख़ून, गोश्त, चर्बी कुछ नहीं लगा होता बिल्कुल साफ़ होता है ऐसे ही येह लोग दा'वए इस्लाम के बा वुजूद इस्लाम से ऐसे निकल जाएंगे कि उन के दिलों में इस्लाम का शाइबा भी न होगा। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 299)

3 .....क़त्ल कर दो कि वोह मुर्तद हैं या इस लिये कि वोह सुल्त़ाने इस्लाम के बाग़ी हैं मगर येह क़त्ल शाहे इस्लाम करेगा न कि आ़म मुसलमान। (मिरआतुल मनाजीह, 5 / 299)

4 ... مسلم، کتاب الزکاۃ، باب التحریض علی قتل الخوارج، ص ۵۳۵، حدیث: ۱۰۶۶

5 ... ترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب من سورۃ آل عمران، ۵/ ۷، حدیث: ۳۰۱۱

6 ... ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب فی ذکر الخوارج، ۱/ ۱۱۲، حدیث: ۱۷۳

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुमहान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن बयान करते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा, आप चादर में लिपटे हुवे थे। उन्हों ने दरयाफ़्त किया : तुम कौन हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : सईद बिन जुमहान। इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे वालिद साहिब का क्या हुवा ? मैं ने अ़र्ज़ की : उन्हें अज़ारिक़ा[1] ने शहीद कर दिया। येह सुन कर उन्हों ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज़ारिक़ा को बरबाद करे फिर फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से येह बयान फ़रमाया : ''येह लोग जहन्नम के कुत्ते हैं।''मैं ने अ़र्ज़ की : क्या सिर्फ़ अज़ारिक़ा ? फ़रमाया : तमाम ख़वारिज जहन्नम के कुत्ते हैं।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़दीस बयान की, कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़वारिज से जंग करते येह सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस के लिये ख़ुश ख़बरी है जो ख़ारिजियों को क़त्ल करे और जिसे ख़ारिजी क़त्ल करें।[3]

महब्बते दुन्या की ता'रीफ़

दुन्या की वोह महब्बत जो उख़रवी नुक़्सान का बाइ़स हो (क़ाबिले मज़म्मत और बुरी है)। (احیاء العلوم، ۳/۲۹۳)

---

1 .....ख़वारिज का एक गुरौह जो अपने सिवा तमाम मुसलमानों और अकाबिर सह़ाबा की एक जमाअ़त को काफ़िर समझता है नीज़ जो जंग में उन का साथ न दे उसे भी काफ़िर जानता है। उन के नज़दीक मुख़ालिफ़ीन के बच्चों और औ़रतों का क़त्ल जाइज़ है। (الحدیقۃ الندیۃ، ۱/۳۰۵)

2 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب: المارقۃ والحروریۃ والخوارج...الخ، ص۲۱۵، حدیث: ۹۳۷

3 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب المارقۃ والحروریۃ والخوارج...الخ، ص۲۱۵، حدیث: ۹۳۸

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 50

मुसलमान को अज़िय्यत देना और बुरा भला कहना

ईज़ाए मुस्लिम के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾

(پ۲۲،الاحزاب:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

﴿2﴾.....

وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا (پ۲۶،الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंढो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो।

﴿3﴾.....

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ (پ۲۶،الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों।

﴿4﴾.....

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۙ (پ۳۰،الهمزة:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे।

www.dawateislami.net

ईज़ाए मुस्लिम के मुतअ़ल्लिक़ 19 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लोगों में से सब से बुरा मर्तबा उस का है जिसे लोग उस की फ़ोह़्श कलामी के डर से छोड़ दें ।(1)

﴾2﴿.....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे ह़या और फ़ोह़्श गो को ना पसन्द फ़रमाता है ।(2)

﴾3﴿.....अल्लाह के बन्दो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़रज को उठा दिया है मगर वोह शख़्स जो अपने भाई की आबरू रेज़ी के दरपे हो तो ऐसा शख़्स गुनहगार हुवा या (फ़रमाया :) हलाक हुवा ।(3)

तक़्वा दिल में होता है

﴾4﴿.....हर मुसलमान की इ़ज़्ज़त, उस का ख़ून और उस का माल दूसरे मुसलमान पर ह़राम है । (आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दिल की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) तक़्वा यहां है, आदमी के बुरे होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर जाने ।(4)

इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने रिवायत किया और इसे ह़सन क़रार दिया ।

﴾5﴿.....एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, वोह उस पर ज़ुल्म करता है न उसे रुस्वा करता और न उसे ह़क़ीर जानता है । आदमी के बुरे होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर जाने ।(5)

---

❶...مسلم، کتاب البر والصلة، باب مداراة من يتقى فحشه، ص ۱۳۹۷، حدیث: ۲۵۹۱

❷...الادب المفرد، باب الرفق، ص ۱۷۰، حدیث: ۴۷۰

❸...ابو داود، کتاب المناسک باب فیمن قدم شیئا قبل شیء فی حجه، ۲/۳۰۵، حدیث: ۲۰۱۵

❹...ترمذی، کتاب البرّ والصّلة، باب ماجاء فی شفقة المسلم علی المسلم، ۳/۳۷۲، حدیث: ۱۹۳۴

❺...مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم ظلم المسلم...الخ، ص ۱۳۸۶، حدیث: ۲۵۶۴

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ (پ۱۸، النور:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में।

﴿6﴾.....मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ और उस से झगड़ना कुफ़्र है[1]।[2]

पड़ोसी को अज़िय्यत देने की मज़म्मत

मुस्लिम शरीफ़ में है :

﴿7﴾.....वोह शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिस की शरारतों से उस का पड़ोसी अम्न में न हो।[3]

बुख़ारी व मुस्लिम में है :

﴿8﴾.....ख़ुदा की क़सम ! वोह मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम ! वोह मोमिन नहीं। अ़र्ज़ की गई : कौन ? इरशाद फ़रमाया : जिस की शरारतों से उस का पड़ोसी अम्न में न हो।[4]

बुख़ारी व मुस्लिम की शर्त़ के मुत़ाबिक़ एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं :

---

1 .....इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ाशिया कबीरा नम्बर : 39 के तह़्त आ चुका है।

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان قول النبی سباب المسلم...الخ، ص۵۲، حدیث: ۶۴

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تحریم ایذاء الجار، ص۴۳، حدیث: ۴۶

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب اثم من لا یامن جارہ...الخ، ۴/ ۱۰۴، حدیث: ۶۰۱۶

www.dawateislami.net

﴾9﴿.....वोह बन्दा जन्नत में दाख़िल न होगा जिस की शरारतों से उस का पड़ोसी अम्न में न हो।[1]

﴾10﴿.....जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि वोह अपने पड़ोसी को ईज़ा न दे।[2] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है :

﴾11﴿.....जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि वोह अपने पड़ोसी के साथ भलाई करे।[3]

﴾12﴿.....बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ुलानी औ़रत रात में नमाज़ पढ़ती है और दिन में रोज़ा रखती है लेकिन वोह अपनी ज़बान से पड़ोसियों को ईज़ा देती है। येह सुन कर रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस में कोई भलाई नहीं है वोह जहन्नम में जाएगी।[4]

इस ह़दीसे पाक को इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

मुर्दों की बुराइयां बयान करने की मुमानअ़त

﴾13﴿.....अपने मुर्दों की अच्छाइयां बयान करो और उन की बुराइयां बयान करने से बाज़ रहो।[5] इस ह़दीसे पाक को इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

1...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تحریم ایذاء الجار، ص ۴۳، حدیث: ۴۶

2...بخاری، کتاب الادب، باب من کان یؤمن باللہ والیوم الآخر...الخ، ۴/ ۱۰۵، حدیث: ۶۰۱۸

3...مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار والضیف...الخ، ص ۴۳، حدیث: ۴۷

4...مستدرک حاکم، کتاب البر والصلۃ، ان اللہ لا یعطی الایمان الا من یحب، ۵/ ۲۳۱، حدیث: ۷۳۸۵

5...ابوداود، کتاب الادب، باب فی النھی عن سب الموتی، ۴/ ۳۶۰، حدیث: ۴۹۰۰

www.dawateislami.net

﴾14﴿.....जिस ने किसी को काफ़िर या दुश्मने ख़ुदा कहा हालांकि वोह ऐसा नहीं था तो वोह बात कहने वाले पर लौट आएगी[1]।[2] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

ग़ीबत का अ़ज़ाब

﴾15﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : शबे मे'राज मेरा गुज़र ऐसी क़ौम से हुवा जिन के नाख़ुन तांबे के थे जिन से वोह अपने चेहरों और सीनों को नोच रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) और उन की आबरू रेज़ी करते थे।[3]

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, सफ़ह़ा 54" पर है : सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : "किसी मुसलमान को काफ़िर कहा तो ता'ज़ीर (या'नी सज़ा) है। रहा येह कि वोह क़ाइल (या'नी मुसलमान को काफ़िर कहने वाला) ख़ुद काफ़िर होगा या नहीं, इस में दो सूरतें हैं : (1) अगर उसे मुसलमान जानता है तो काफ़िर न हुवा और (2) अगर उसे काफ़िर ए'तिक़ाद करता (या'नी येह अ़क़ीदा रखता है कि येह काफ़िर है) तो ख़ुद काफ़िर है कि मुसलमान को काफ़िर जानना दीने इस्लाम को कुफ़्र जानना है और दीने इस्लाम को कुफ़्र जानना कुफ़्र है। हां अगर उस शख़्स में कोई ऐसी बात पाई जाती है जिस की बिना पर तक्फ़ीर हो सके और उस ने उसे काफ़िर कहा और काफ़िर जाना तो (कहने वाला) काफ़िर न होगा। (دُرِّ مُختار، رَدُّ الْمُحتار، ج6، ص111) नीज़ फ़रमाया : (मुसलमान को बत़ौरे गाली) बद मज़हब, मुनाफ़िक़, ज़िन्दीक़, यहूदी, नसरानी, नसरानी का बच्चा, काफ़िर का बच्चा कहने पर भी ता'ज़ीर (सज़ा) है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 9, स. 126 ता 127 دُرِّ مُختار، ج6، ص112، اَلْبَحْرُ الرَّائِق، ج5، ص74) अलबत्ता जो वाक़ेई काफ़िर है उस को काफ़िर ही कहेंगे।

2...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من...الخ، ص ۵۱، حدیث: ۶۱

3...ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ۴/ ۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۸

www.dawateislami.net

वालिदैन को गाली देना कबीरा गुनाह है

﴾16﴿.....कबीरा गुनाहों में से एक आदमी का अपने वालिदैन को गाली देना है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या कोई शख़्स अपने वालिदैन को गाली दे सकता है ? इरशाद फ़रमाया : येह दूसरे के बाप को गाली देगा तो वोह इस के बाप को गाली देगा और येह दूसरे की मां को गाली देगा तो वोह इस की मां को गाली देगा।(1)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾17﴿.....कबीरा गुनाहों में से एक गुनाह आदमी का अपने वालिदैन को ला'न ता'न करना है। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपने वालिदैन को ला'न ता'न कैसे कर सकता है ? इरशाद फ़रमाया : येह दूसरे के बाप को ला'न ता'न करेगा तो वोह इस के बाप को ला'न ता'न करेगा और येह दूसरे की मां को ला'न ता'न करेगा तो वोह इस की मां को ला'न ता'न करेगा।(2)

﴾18﴿.....कोई शख़्स दूसरे को काफ़िर या फ़ासिक़ नहीं कहता मगर येह कि अगर उस का साथी ऐसा न हो तो वोह बात कहने वाले पर लौट आती है।(3) इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

﴾19﴿.....मुर्दों को बुरा भला मत कहो कि बिलाशुबा उन्हों ने जो आगे भेजा था वोह पा लिया।(4)

इस ह़दीस को भी इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

---

❶...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الکبائر واکبرھا، ص٦٠، حدیث: ٩٠

❷...بخاری، کتاب الادب، باب لایسب الرجل والدیہ، ۴/ ۹۴، حدیث: ۵۹۷۳

❸...بخاری، کتاب الادب، باب ما ینھی من السباب واللعن...الخ، ۴/ ۱۱۱، حدیث: ۶۰۴۵

❹...بخاری، کتاب الرقاق، باب سکرات الموت...الخ، ۴/ ۲۵۱، حدیث: ۶۵۱۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 51

औलियाउल्लाह को अज़िय्यत देना और उन से अ़दावत रखना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ (پ۲۲، الاحزاب:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उस के रसूल को उन पर अल्लाह की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में।

सरदारे औलिया व अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की मैं उसे ए'लाने जंग देता हूं।"

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "बिलाशुबा उस ने मेरे साथ जंग करने का ए'लान कर दिया।"(1) इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! अगर तुम ने उन्हें (या'नी फ़ुक़राए मुहाजिरीन को) नाराज़ कर दिया तो बिलाशुबा तुम ने अपने रब को नाराज़ कर दिया।(2)

40 बरस इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र

हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म (رَحِمَهُمَا اللّٰه) ने 40 बरस इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई। (بهجة الاسرار، ذکر طریقه، ص۱۶۴)

(1) ...بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲

(2) ...مسلم، کتاب فضائل الصّحابة، باب من فضائل سلمان...الخ، ص ۱۳۵۹، حدیث: ۲۵۰۴

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 52

फ़ख़्र व ग़ुरूर से तहबन्द वग़ैरा लटकाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ (پ۲۱،لقمٰن:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल।

तकब्बुर से तहबन्द वग़ैरा लटकाने के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾.....तहबन्द (शलवार) का जो हिस्सा दोनों टख़्नों से नीचे है वोह आग में है[1]।[2]

﴿2﴾.....तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।[3]

﴿3﴾.....बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन शख़्सों की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा न उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : (1) (तकब्बुर से) तहबन्द लटकाने वाला (2) एह़सान जताने वाला और (3) झूटी क़सम खा कर सौदा बेचने वाला।[4]

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 102 पर इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस का मत़लब या तो येह है कि टख़्ने से नीचे तहबन्द जहन्नमियों का लिबास है या येह मत़लब है कि वोह हिस्सा तहबन्द का दोज़ख़ में जाएगा उस शख़्स को साथ ले कर, येह मत़लब नहीं कि तहबन्द तो दोज़ख़ में जावे और येह मुतकब्बिर सीधा जन्नत में ! यहां भी तकब्बुर, शैख़ी, फ़ेशन के लिये तहबन्द नीचा रखना मुराद है। येह हुक्म मर्दों के लिये है औ़रतों को टख़्ने के नीचे तहबन्द रखना चाहिये ताकि उन की पिन्डली का कोई हिस्सा ह़त्ता कि टख़्ना भी न खुले कि येह सित्रे औ़रत है।

2...بخاری، کتاب اللباس، باب ما اسفل من الکعبین...الخ، ۴/ ۴۶، حدیث: ۵۷۸۷

3...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم جر الثوب...الخ، ص ۱۱۵۶، حدیث: ۲۰۸۷

4...مسلم، کتاب ایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار...الخ، ص ۶۷، حدیث: ۱۰۶

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....एक शख़्स उ़म्दा पोशाक पहने, कंघा कर के ख़ुद पसन्दी में मुब्तला हो कर इतराता हुवा चल रहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे धंसा दिया और वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता रहेगा।(1) येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾5﴿.....कपड़ा लटकाना, शलवार, क़मीस और इ़मामे में होता है जो (इन में से) किसी शै को तकब्बुर के सबब घसीटेगा बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।(2) इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद व इमाम नसाई عَلَيْهِمَا الرَّحْمَه ने सह़ीह़ सनद के साथ रिवायत किया है।

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मुझ से रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तहबन्द लटकाने से बचो कि येह तकब्बुर में से है और बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर को ना पसन्द फ़रमाता है।(3)

इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस ह़दीसे पाक को सह़ीह़ क़रार दिया है।

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक मर्द तहबन्द लटकाए हुवे नमाज़ पढ़ रहा था, रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : "जाओ जा कर वुज़ू करो।" वोह गया और वुज़ू किया फिर वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जाओ जा कर वुज़ू करो।" येह देख कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की :

1...بخاری، کتاب اللباس، باب من جر ثوبہ...الخ، ۴/۴۷، حدیث: ۵۷۸۹

2...ابو داود، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، ۴/۸۳، حدیث: ۴۰۹۴

3...ابو داود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاسبال، ۴/۷۸، حدیث: ۴۰۸۴

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने इसे वुज़ू करने का हुक्म क्यूं इरशाद फ़रमाया ? आप कुछ देर ख़ामोश रहे फिर इरशाद फ़रमाया : "वोह तहबन्द लटकाए नमाज़ पढ़ रहा था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की नमाज़ क़बूल नहीं करता जो तहबन्द लटकाए हुवे हो[1]।[2] इस ह़दीस को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है और येह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शर्त़ के मुत़ाबिक़ है।

﴿8﴾.....जो शख़्स अपने कपड़े को तकब्बुर की वज्ह से घसीटेगा बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : मेरा तहबन्द सरक जाता है सिवाए येह कि मैं इस का बहुत ख़याल रखूं। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम उन में से नहीं हो जो येह फ़े'ल तकब्बुर की वज्ह से करते हैं।"[3]

इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने रिवायत किया है।

---

1 .....तहबन्द लटकाने से वुज़ू वाजिब नहीं होता यहां वुज़ू का हुक्म देना या इस लिये था कि इस की वज्ह से उस शख़्स को येह वाक़िआ़ याद रहे और आइन्दा कभी नीचा तहबन्द न पहने क्यूंकि क़दरे सज़ा दे देने से बात याद रहती है या इस लिये कि उन के दिल में फ़ेशन और तकब्बुर था ज़ाहिरी त़हारत के ज़रीए बात़िनी त़हारत नसीब हो, हाथ पाउं धुलने से दिल गुरूर व तकब्बुर से धुल जाए। बा'ज़ सूफ़िया फ़रमाते हैं पाक कपड़ों में रहना पाक बिस्तर पर सोना हमेशा बा वुज़ू रहना दिल की सफ़ाई का ज़रीआ़ है। उन का माख़ज़ येह ह़दीस है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 439)

2 ...ابو داود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی اسبال الازار، ۴/۷۹، حدیث: ۴۰۸۶

3 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت...الخ، ۲/ ۵۲۰، حدیث: ۳۶۶۵

www.dawateislami.net

मोमिन का तहबन्द

﴾9﴿.....मोमिन का तहबन्द उस की निस्फ़ पिन्डली तक है।[1]

﴾10﴿.....मुसलमान का तहबन्द निस्फ़ पिन्डली तक है और अगर निस्फ़ पिन्डली और टख़्नों के दरमियान में हो तो भी कोई ह़रज या गुनाह नहीं और जो ह़िस्सा दोनों टख़्नों से नीचे रहे वोह आग में है और जो तकब्बुर के सबब अपना तहबन्द घसीटेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सह़ीह़ सनद के साथ रिवायत किया है।

﴾11﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं : मैं रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से गुज़रा मेरा तहबन्द लटका हुवा था। आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह देख कर फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! अपना तहबन्द ऊपर कर लो।" मैं ने फ़ौरन तहबन्द ऊपर कर लिया फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "और ऊपर कर लो। मैं ने मज़ीद ऊपर कर लिया, इस के बा'द मैं हमेशा इस का एहतिमाम करता हूं।[3]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने रिवायत किया है।

इस वई़द में हर वोह शख़्स दाख़िल है जो ज़मीन से मस होने वाला जुब्बा या चोग़ा या खुली शलवार पहने जब कि वोह येह फ़े'ल तकब्बुर या ग़ुरूर के त़ौर पर करे और अगर वोह अपने शहर वालों की आ़दत व उ़र्फ़ के मुत़ाबिक़ इस त़रह़ का

---

❶...ابن ماجه، کتاب اللباس، باب موضع الازار این هو؟،۴/۱۲۸، حدیث: ۳۵۷۳

❷...ابو داود، کتاب اللّباس، باب فی قدر موضع الازار، ۴/۸۲، حدیث: ۴۰۹۳

❸...مسلم، کتاب اللّباس والزّینة، باب تحریم جر الثوب...الخ، ص۱۱۵۶، حدیث: ۲۰۸۶

www.dawateislami.net

लिबास पहने तो उसे इस फ़े'ल से रोका जाएगा और इस त़रह़ के मल्बूसात पहनने की ह़ुरमत के बारे में बताया जाएगा कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो तहबन्द टख़्नों से नीचे रहे वोह आग में है।"

गुनाहे कबीरा नम्बर 53

मर्द का रेशमी लिबास पहनना और सोना इस्ति'माल करना

सोने व रेशम के इस्ति'माल के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....जो दुन्या में रेशम पहनेगा वोह आख़िरत में न पहनेगा।(1)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....रेशम वोही पहनेगा जिस का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं है।(2)

इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने रिवायत किया है।

﴾3﴿.....सोना और रेशम पहनना मेरी उम्मत के मर्दों पर ह़राम और औ़रतों के लिये ह़लाल है।(3) इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं : रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सोने चांदी के बरतनों में खाने

---

(1)...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم استعمال اناء الذھب...الخ، ص ۱۱۴۷، حدیث: ۲۰۶۹

(2)...بخاری، کتاب اللباس، باب لبس الحریر للرجال...الخ، ۴/ ۵۹، حدیث: ۵۸۳۵

(3)...ترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الحریر والذھب، ۳/ ۲۷۸، حدیث: ۱۷۲۶

www.dawateislami.net

और पीने से[1] और रेशम व दीबाज पहनने से नीज़ इन पर बैठने से हमें मन्अ़ फ़रमाया है।[2] इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

﴾4﴿.....जो चांदी के बरतन में पीता है वोह अपने पेट में जहन्नम की आग उंडेल रहा है।[3] येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

ख़ारिश ज़दा को रेशम पहनने[4],[5] यूंही आ़म मर्दों के लिये चार उंगल के बराबर रेशम[6] इस्ति'माल करने[7] और (ज़रूरतन) सोने वग़ैरा का दांत लगाने की रुख़्सत आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।

---

1 .....मुसलमानों का इस बात पर इजमाअ़ है कि सोने चांदी के बरतनों में खाना पीना, इन धातों के बने हुवे बरतनों को इस्ति'माल करना या सोने चांदी का चम्चा, सुर्मादानी, सलाई, तेल की बोतल वग़ैरा मर्द औ़रत दोनों के लिये ह़राम हैं अलबत्ता औ़रत सोने चांदी का ज़ेवर इस्ति'माल कर सकती है।

(شرح المسلم للنووی، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم استعمال اوانی الذهب والفضة، ۱۴/ ۲۹، ۳۰)

2 ...بخاری، کتاب اللباس، باب افتراش الحریر، ۴/ ۶۰، حدیث: ۵۸۳۷

3 ...بخاری، کتاب الاشربة، باب آنیة الفضة...الخ، ۳/ ۵۹۳، حدیث: ۵۶۳۴

4 .....रेशम का कपड़ा ख़ारिश और जूं के लिये मुफ़ीद है। इस मजबूरी में मर्द के लिये रेशमी कपड़ा पहनना जाइज़ है (रेशमी कपड़े में जूं नहीं पड़ती)।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 105)

5 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب اباحة لبس الحریر...الخ، ص ۱۱۵۱، حدیث: ۲۰۷۶

6 .....मर्दों के कपड़ों में रेशम की गोट चार उंगल तक की जाइज़ है इस से ज़ियादा नाजाइज़ या'नी उस की चौड़ाई चार उंगल तक हो लम्बाई का शुमार नहीं। इसी त़रह़ अगर कपड़े का किनारा रेशम से बुना हो जैसा कि बा'ज़ इमामे या चादरों या तहबन्द के किनारे इस त़रह़ के होते हैं, इस का भी येही ह़ुक्म है कि अगर चार उंगल तक का किनारा हो तो जाइज़ है वरना नाजाइज़।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 16, 3 / 411)

7 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم استعمال اوانی...الخ، ص ۱۱۴۹، حدیث: ۲۰۶۹

www.dawateislami.net

तो जो रेशम की पोशाक या चांदी के तारों का कपड़ा या सोने के बेलबूटों वाला लिबास पहने या ऐसा लिबास पहने जिस पर सोने की पतरियों से नक़्शो निगार हो तो ऐसे अफ़राद इस मज़कूरा वईद में दाख़िल हैं और इन अश्या के इस्ति'माल के सबब फ़ासिक़ होंगे ।[1]

गुनाहे कबीरा नम्बर 54

ग़ुलाम का भाग जाना

भगोड़े ग़ुलाम के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....जब ग़ुलाम भाग जाता है तो उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती[2] ।[3]

﴿2﴾.....जो ग़ुलाम भाग जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से बरी है[4]।[5]

1.....सोने चांदी के बटन कुर्ते या अचकन में लगाना जाइज़ है, जिस त़रह़ रेशम की घुन्डी जाइज़ है । या'नी जब कि बटन बिग़ैर ज़न्जीर हों और अगर ज़न्जीर वाले बटन हों तो इन का इस्ति'माल नाजाइज़ है कि येह ज़न्जीर ज़ेवर के हुक्म में है, जिस का इस्ति'माल मर्द को नाजाइज़ है ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3 / 415)

2.....इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यहां अ़द्मे क़बूल से मुराद येह है कि उसे नमाज़ का सवाब नहीं मिलेगा अलबत्ता फ़र्ज़ ज़िम्मे से साक़ित हो जाएगा ।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن...الخ، ۲/۵۸)

3...مسلم، کتاب الایمان، باب تسمیة العبد الآبق کافرا، ص ۵۴، حدیث: ۷۰

4.....या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे की वज्ह से ग़ुलाम अपने आक़ा की सज़ा और उस की क़ैद से बचा हुवा था, भागने के फ़े'ल के ज़रीए उस ने इस ज़मान को उठा दिया ।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن...الخ، ۲/۵۸)

5...مسلم، کتاب الایمان، باب تسمیة العبد الآبق کافرا، ص ۵۳، حدیث: ۶۹

www.dawateislami.net

इन दोनों अहादीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴿3﴾.....तीन लोगों की नमाज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़बूल नहीं फ़रमाता और न ही उन का कोई अ़मल (आस्मान की त़रफ़) बुलन्द होता है : (1) भागा हुवा गुलाम जब तक लौट कर अपने मालिक के पास न आ जाए (2) वोह औ़रत जिस का शोहर उस से नाराज़ हो जब तक कि वोह उस से राज़ी न हो जाए और (3) नशे में मुब्तला शख़्स जब तक वोह होश में न आ जाए।[1]

﴿4﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस गुलाम पर ला'नत फ़रमाई है जो अपने आक़ा के इलावा किसी और की त़रफ़ ख़ुद को मन्सूब करे।[2]

﴿5﴾.....तीन त़रह़ के लोगों से ह़िसाबो किताब नहीं होगा (या'नी उन्हें बिला ह़िसाबो किताब जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा) (1) वोह शख़्स जो जमाअ़त से अलग हुवा और अपने इमाम की ना फ़रमानी की और उसी गुनाह की ह़ालत में मर गया (2) वोह गुलाम जो अपने आक़ा से भाग कर मर गया (3) वोह औ़रत जिस का शोहर उस की ज़रूरिय्यात को पूरा करता हो और वोह उस की ग़ैर मौजूदगी में (लोगों पर) ज़ीनत ज़ाहिर करे।[3]

हुब्बे जाह की ता'रीफ़

...लोगों में शोहरत और नामवरी चाहना हुब्बे जाह है।

(احیاء العلوم، ۳/ ۳۳۹)

---

1 ...صحیح ابن خزیمة، باب نفی قبول صلاة المرأة...الخ، ۲/ ۶۹، حدیث: ۹۴۰

2 ...مستدرک حاکم، کتاب البر والصلة، باب لعن الله العاق لوالدیه...الخ، ۵/ ۲۱۲، حدیث: ۷۳۳۶

3 ...مستدرک حاکم، کتاب العلم، باب من فارق الجماعة...الخ، ۱/ ۲۰۶، حدیث: ۴۱۱

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 55

ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह़ करना[1]

मसलन (ब वक़्ते ज़ब्ह़ بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکۡبَر की जगह) यूं कहे : بِاسۡمِ سَیِّدِی الشَّیۡخ या'नी मैं अपने फ़ुलां शैख़ के नाम पर ज़ब्ह़ करता हूं।

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَاۡکُلُوۡا مِمَّا لَمۡ یُذۡکَرِ اسۡمُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ وَ اِنَّہٗ لَفِسۡقٌ ؕ (پ۸،الانعام:۱۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया और वोह बेशक हुक्म अ़दूली है।

ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह़ करने वाला मलऊ़न है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हानी बयान करते हैं कि मेरे आक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ऐ हानी ! लोग क्या कह रहे हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! लोग इस बात के दा'वेदार हैं कि आप के पास रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ऐसी बातों का इ़ल्म है जिसे आप ज़ाहिर नहीं कर रहे हैं। येह सुन कर आप ने अपनी तल्वार के पर्तले से एक सह़ीफ़ा निकाला जिस में लिखा था : येह वोह बातें हैं जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

1.....ग़ैरुल्लाह के लिये ज़ब्ह़ करने से मुराद येह है कि वक़्ते ज़ब्ह़ ग़ैरुल्लाह का नाम ले। अगर इस ज़ब्ह़ के बारे में ज़ब्ह़ करने वाले की निय्यत ग़ैरुल्लाह की ता'ज़ीम और इ़बादत है तो येह कुफ़्र है। (فیض القدیر، ۵/۳۵۱، تحت الحدیث: ۷۲۸۲)

ज़ब्ह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर किया जाए और सवाब पीरों (बुज़ुर्गों) को पहुंचाया जाए, न इस में ह़रज न इस के मानने में ह़रज। मुसलमान येही करते हैं और येही इन का मक़्सूद होता है। इस के ख़िलाफ़ समझना बद गुमानी है। (फ़तावा रज़विय्या, 20 / 296)

www.dawateislami.net

सुनी हैं : “जो ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ करे और जो गुलाम खुद को अपने आक़ा के इलावा किसी और की त़रफ़ मन्सूब करे उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई और वालिदैन के ना फ़रमान और दूसरे की ज़मीन हथयाने के लिये ज़मीन की ह़ुदूद मिटा देने वाले पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है।”(1)

इस ह़दीसे पाक को इमाम हाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सह़ीह़ में रिवायत किया है।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो ग़ैरुल्लाह के नाम के साथ ज़ब्ह़ करे उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है।(2) येह ह़दीसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से उ़म्दा सनद के साथ मरवी है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 56

पराई ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के लिये ज़मीन के निशानात मिटाना(3)

पराई ज़मीन हथयाने वाला मलऊ़न है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मन्कूल ह़दीसे पाक में ऐसे शख़्स पर ला'नत फ़रमाई गई है।(4)

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب البر والصلة، باب لعن اللہ العاق لوالدیہ...الخ، ۵/ ۲۱۲، حدیث: ۷۳۳۶

2 ...مستدرک حاکم، کتاب الحدود، باب لعن اللہ علی سبعة من خلقه، ۵/ ۵۰۹، حدیث: ۸۰۵۲

3 .....ज़मीन के निशानात बदल देने से मुराद येह है कि दो अफ़राद की बाहम मिली हुई ज़मीन को एक दूसरे से मुमताज़ करने के लिये पथ्थरों वग़ैरा की जो दीवारें क़ाइम की जाती हैं आदमी अपने पड़ोसी का ह़क़ मारने के लिये उन अ़लामात को हटा कर उस की ज़मीन अपने ह़िस्से में मिला ले।

(فیض القدیر، ۵/ ۳۵۱، تحت الحدیث: ۷۲۸۲)

4 ...مستدرک حاکم، کتاب البر والصلة، باب لعن اللہ العاق لوالدیہ...الخ، ۵/ ۲۱۲، حدیث: ۷۳۳۶

www.dawateislami.net

रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो ग़ैरुल्लाह के नाम के साथ ज़ब्ह करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ला'नत फ़रमाई है, (क़ब्ज़ा करने के लिये) ज़मीन की अ़लामात मिटाने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है, जो किसी अन्धे को रास्ते से भटका दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ला'नत फ़रमाई है, जो अपने वालिदैन को गाली दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ला'नत फ़रमाई है और जो क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ला'नत फ़रमाई है।

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : जो किसी चौपाए के साथ बद फ़े'ली करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ला'नत फ़रमाई है।[1]

गुनाहे कबीरा नम्बर 57

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला कहना

सह़ाबा को बुरा भला कहने के मुत अ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की मैं उसे ए'लाने जंग देता हूं।[2]

﴿2﴾.....मेरे सह़ाबा को बुरा भला मत कहो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الحدود، باب لعن اللہ علی سبعۃ من خلقہ، ۵/ ۵۰۹، حدیث: ۸۰۵۲

2 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع...الخ، ۴/ ۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲

www.dawateislami.net

है ! अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ जितना सोना ख़ैरात करे तो उन के एक मुद (एक सेर) ख़ैरात करने के बराबर बल्कि आधा मुद ख़ैरात करने के बराबर नहीं हो सकता ।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सह़ाबए किराम के लिये तो इस्तिग़फ़ार करने का हुक्म दिया गया है और लोग उन्हें बुरा भला कहते हैं ।

इस ह़दीस को ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने वालिद के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत किया है ।[2]

﴾3﴿.....जो मेरे सह़ाबा को बुरा भला कहे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : उस ज़ात की क़सम जिस ने दाने को चीरा और इन्सान को पैदा फ़रमाया ! नबिय्ये उम्मी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुझ से येह अ़ह्द है कि मुझ से मोमिन ही मह़ब्बत करेगा और मुनाफ़िक़ ही बुग़्ज़ रखेगा[4]।[5]

1...مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب تحریم سب الصحابة، ص ۱۳۷۴، حدیث: ۲۵۴۱

2...مسلم، کتاب التفسیر، ص ۱۶۱۱، حدیث: ۳۰۲۲

3...فضائل الصحابة لاحمد بن حنبل، ۱/ ۶۱، حدیث: ۸

4.....जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़राबत दारी को, नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आप से मह़ब्बत को, आप की इस्लाम लाने वालों में सब्क़त वग़ैरा देखेगा तो उस शख़्स को आप की ज़ात से इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त देख कर ख़ुशी होगी और येह ख़ुशी व सुरूर उस के ईमान की दुरुस्ती और साबित क़दमी की दलील होगी और जिस का ह़ाल इस के बर ख़िलाफ़ होगा तो उस की वोह कैफ़िय्यत उस के निफ़ाक़ की अ़लामत होगी । (شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان حب الانصار...الخ، ۲/ ۶۴)

5...مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان حبّ الانصار...الخ، ص ۵۵، حدیث: ۷۸

www.dawateislami.net

फ़ज़ीलते शैख़ैन के मुन्किर पर मुफ़्तरी की हद

जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में है तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस ए'ज़ाज़ के लिये औला और ज़ियादा लाइक़ हैं क्यूंकि आप नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मते मुह़म्मदिय्या में सब से अफ़्ज़ल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) का मज़हब येह है कि जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर किसी को फ़ज़ीलत दे उसे मुफ़्तरी (बोहतान बांधने वाले) की ह़द लगाई जाएगी (या'नी 80 कोड़े मारे जाएंगे)।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू लैला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जारूद बिन मुअ़ल्ला अ़बदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से बेहतर हैं। दूसरे शख़्स ने कहा : ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से अफ़्ज़ल हैं। येह ख़बर जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को पहुंची तो आप ने उसे दुर्रे से इतना मारा कि उस के पाउं सूज गए और फ़रमाया : बिलाशुबा ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथी हैं और फुलां फुलां मुआ़मले में तमाम लोगों से बेहतर हैं जो इस के बर ख़िलाफ़ कहेगा उस पर मुफ़्तरी की ह़द होगी।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को फ़रमाते सुना : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि लोग मुझे ह़ज़रते

[1]...فضائل الصحابة لاحمد بن حنبل، ۱/ ۳۶۷، حدیث: ۳۹۶

www.dawateislami.net

अबू बक्र व हज़रते उमर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से अफ़्ज़ल क़रार देते हैं। जो शख़्स ऐसी बात करेगा वोह मुफ़्तरी है और उस के लिये मुफ़्तरी की हद है।(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जहल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : मेरे पास जब भी ऐसा शख़्स लाया जाएगा जो मुझे हज़रते अबू बक्र व हज़रते उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا पर फ़ज़ीलत देता होगा मैं उसे मुफ़्तरी की हद के तौर पर (80) कोड़े लगाऊंगा।(2)

﴿4﴾.....जो अपने भाई को कहे : "ऐ काफ़िर !" तो बिलाशुबा वोह कुफ़्र उन दोनों में से एक पर लौटेगा।(3)

सहाबी को काफ़िर कहने वाला ख़ुद काफ़िर है

मैं कहता हूं : जो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के इलावा किसी सहाबी को "ऐ काफ़िर !" कह कर पुकारेगा तो बिलाशुबा यहां क़त्ई तौर पर कुफ़्र क़ाइल की तरफ़ लौटेगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से राज़ी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ

(پ۱۱، التوبة:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ इन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी।

---

❶...فضائل الصحابۃ لاحمد بن حنبل، ۱/ ۳۱۲، حدیث: ۳۸۴

❷...بخاری، کتاب الادب، باب من کفر اخاہ بغیر تاویل۔۔۔ الخ، ۴/ ۱۲۷، حدیث: ۶۱۰۴

❸...فضائل الصحابۃ لاحمد بن حنبل، ۱/ ۳۶۰، حدیث: ۳۸۷

www.dawateislami.net

लिहाज़ा जो इन नुफ़ूसे कुदसिय्या को बुरा भला कहे बिलाशुबा उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जंग का चेलेन्ज दिया बल्कि इन ह़ज़रात की शान तो अर्फ़अ़ व आ'ला है अगर कोई आ़म मुसलमानों को गालियां दे, ईज़ा पहुंचाए और उन की तह़क़ीर करे तो हम उस के बारे में पहले बयान कर चुके कि येह गुनाहे कबीरा में से है तो फिर उस शख़्स के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल शख़्स को बुरा भला कहता हो। हां येह ज़रूर है कि ऐसा शख़्स उस गुनाह के सबब हमेशा दोज़ख़ में नहीं रहेगा मगर जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की नबुव्वत का ए'तिक़ाद रखे या उन्हें ख़ुदा कहे तो ऐसा मलऊ़न शख़्स काफ़िर है।[1]

शिक्वा की ता'रीफ़

मुसीबत के वक़्त वावेला करने और सब्र का दामन हाथ से छोड़ देने को शिक्वा कहते हैं। (الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية، ٢/٩٨)

---

1 .....आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : तह़क़ीक़े मक़ाम व तफ़्सीले मराम येह है कि राफ़िज़ी तबर्राई जो ह़ज़राते शैख़ैन सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا, ख़्वाह इन में से एक की शाने पाक में गुस्ताख़ी करे, अगर्चे सिर्फ़ इसी क़दर कि उन्हें इमाम व ख़लीफ़ए बर ह़क़ न माने, कुतुबे मो'तमदा फ़िक़्हे ह़नफ़ी की तसरीह़ात और आ़म्मा अइम्मए तरजीह़ व फ़तावा की तस्ह़ीह़ात पर मुत़लक़न काफ़िर है। (फ़तावा रज़विय्या, 14 / 250)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 58

अन्सार को बुरा भला कहना

ईमान की निशानी

रसूले मक्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अन्सार से महब्बत करना ईमान की निशानी है और अन्सार से बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ की अलामत है।(1)(2)

मुनाफ़िक़ ही अन्सार से बुग़्ज़ रखता है

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अन्सार से मोमिन ही महब्बत करता है और मुनाफ़िक़ ही उन से बुग़्ज़ रखता है।(3)

शुमातत की ता'रीफ़

दूसरों की तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर ख़ुशी का इज़्हार करने को शुमातत कहते हैं। (الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ، ۱/۶۳۱)

1 ...بخاری، کتاب مناقب انصار، باب حب الانصار، ۲/ ۵۵۵، حدیث: ۳۷۸۴

2 .....इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : इस हदीस का मा'ना येह है कि जो अन्सार की दीने इस्लाम के बारे में क़ुरबानियां, दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये जंगों में शिर्कत, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उन की शदीद महब्बत रखने और ख़ुद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उन को महबूब रखना जान लेगा तो उसे अन्सार सहाबा से महब्बत होगी और ज़ुहूरे इस्लाम की जो ख़ुशी उस के दिल में पैदा होगी वोह उस के ईमान की दुरुस्ती और साबित क़दमी की दलील होगी और जिस का मुआमला इस के बर अक्स होगा तो उस की येह हालत उस के निफ़ाक़ की दलील होगी।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان حب الانصار...الخ، ۲/ ۶۴)

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الدّلیل علی ان حب الانصار...الخ، ص۵۵، حدیث: ۷۴

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 59

गुमराही की त़रफ़ बुलाना या बुरा त़रीक़ा ईजाद करना

बिदअ़त के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और येह उन के गुनाहों से कुछ कम न करेगा।(1)

﴾2﴿.....जो कोई बुरा त़रीक़ा राइज करे उस पर अपना गुनाह है और इस के बा'द जो लोग इस पर अ़मल करेंगे उन के गुनाहों का वबाल भी उसी पर है और लोगों के गुनाहों में कुछ कमी भी न होगी।(2) इन दोनों अह़ादीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

﴾3﴿.....हर बिदअ़त गुमराही है।(3)(4)

1...مسلم، کتاب العلم، باب من سن سنة حسنة... الخ، ص۱۴۳۸، حدیث: ۲۶۷۴

2...مسلم، کتاب الزکاة، باب الحث علی الصدقة ولو بشق تمرة... الخ، ص۵۰۸، حدیث: ۱۰۱۷

3...مسلم، کتاب الجمعة، باب تخفیف الصلوة والخطبة، ص۴۳۰، حدیث: ۸۶۷

4.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 1, सफ़ह़ा 140 पर इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : बिदअ़त के लुग़वी मा'ना हैं नई चीज़। रब फ़रमाता है : بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का। پ۱، البقرۃ:۱۱۷) इस्तिलाह़ में इस के तीन मा'ना हैं : (1) **नए अ़क़ीदे** इसे बिदअ़ते ए'तिक़ादी कहते हैं। (2) **वोह नए आ'माल** जो क़ुरआनो ह़दीस के ख़िलाफ़ हों और ह़ुज़ूर के बा'द ईजाद हों। (3) **हर नया अ़मल** जो ह़ुज़ूर के बा'द ईजाद हो। पहले दो मा'ना से हर बिदअ़त बुरी है कोई अच्छी नहीं। तीसरे मा'ना के लिह़ाज़ से बा'ज़ बिदअ़तें अच्छी हैं बा'ज़ बुरी, यहां बिदअ़त के पहले मा'ना मुराद हैं, या'नी बुरे अ़क़ीदे क्यूंकि ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इसे ज़लालत या'नी गुमराही फ़रमाया। गुमराही अ़क़ीदे से होती है, अ़मल से नहीं, बे नमाज़ गुनहगार है गुमराह नहीं, और रब को झूटा या ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अपनी मिस्ल समझना बद अ़क़ीदगी और गुमराही है और अगर दूसरे मा'ना मुराद हों तब भी ह़दीस अपने इत़्लाक़ पर है किसी क़ैद लगाने की ज़रूरत नहीं और अगर तीसरे मा'ना मुराद हों या'नी नया काम तो येह ह़दीस आ़म मख़्सूसुल बा'ज़ है क्यूंकि येह बिदअ़त दो क़िस्म की है बिदअ़ते ह़सना और सय्यिआ, यहां बिदअ़ते सय्यिआ मुराद है।

www.dawateislami.net

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : "हर गुमराही आग में है।"(1)

गुनाहे कबीरा नम्बर 60

बाल जोड़ना, दांत कुशादा करना और गूदना

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बाल जोड़ने, जुड़वाने वाली, गूदने, गुदवाने वाली(2), अबरू के बाल नोच कर बारीक करने और करवाने वाली और ख़ूब सूरती के लिये दांतों के दरमियान फ़ासिला कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ को बदलने वालियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है।(3)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कुत्ते(4) और ख़ून की क़ीमत ह़राम है और फ़ाह़िशा

1...نسائی، کتاب صلاۃ العیدین، باب کیف الخطبۃ، ص ۲۷۴، حدیث: ۱۵۷۵

2.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 4, सफ़ह़ा 268 पर फ़रमाते हैं : गूदने, गुदवाने से मुराद सूई के ज़रीए नेल या सुर्मा जिस्म में लगा कर नक़्शो निगार कराना या अपना नाम लिखवाना, येह दोनों काम ममनूअ़ हैं त़रीक़ए मुशरिकीन हैं और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार।

3...مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم فعل الواصلۃ...الخ، ص ۱۱۷۵، حدیث: ۲۱۲۵

4.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 4, सफ़ह़ा 268 पर इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : इमाम अबू ह़नीफ़ा (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के हां येह मुमानअ़त या तो तन्ज़ीही है या उस वक़्त की है जब कुत्ता पालना इस्लाम में मुत़लक़न ममनूअ़ था, जब शिकार व ह़िफ़ाज़त के लिये इस की इजाज़त हो गई तो येह मुमानअ़त भी मन्सूख़ हो गई।

www.dawateislami.net

(ज़ानिया) की कमाई भी ह़राम है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गूदने और गुदवाने वाली, सूद लेने और देने वाले और तस्वीर बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

गुनाहे कबीरा नम्बर 61

हथयार से मुसलमान को इशारा करना

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने लोहे से अपने भाई की त़रफ़ इशारा किया तो फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते रहते हैं अगर्चे वोह उस का सगा भाई हो[2]।[3]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है ।

चुग़ली की ता'रीफ़

किसी की बात ज़रर (नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना चुग़ली है । (عمدۃ القاری، ۲/ ۵۹۴، تحت الحدیث: ۲۱۶)

---

1 ...بخاری، کتاب اللباس، باب من لعن المصور...الخ، ۴/ ۹۰، حدیث: ۵۹۶۲

2 .....(येह इशारा) ख़्वाह डराने धमकाने के लिये हो ख़्वाह मज़ाक़ में, लोहे से मुराद क़त्ल का हर हथयार है तल्वार, छुरी, आज कल पिस्तोल बन्दूक़ वग़ैरा । (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 228)

3 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب النھی عن الاشارۃ...الخ، ص ۱۴۱۰، حدیث: ۲۶۱۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 62

ख़ुद को अपने बाप के इलावा की त़रफ़ मन्सूब करना

पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....जिस ने ख़ुद को अपने बाप के इलावा की त़रफ़ मन्सूब किया ह़ालांकि वोह जानता है कि वोह उस का बाप नहीं है तो उस पर जन्नत ह़राम है[1]।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....अपने आबाओ अज्दाद (के नसब) से रूगर्दानी न करो, जिस ने अपने बाप से रूगर्दानी की उस ने कुफ़्र किया[3]।[4]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

---

1 .....इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : मज़्कूरा शख़्स पर जन्नत दो पहलूओं से ह़राम है : (1) अगर वोह शख़्स इस फ़े'ल को ह़लाल समझ कर करे तो इस सूरत में जन्नत दाइमी तौ़र पर उस के लिये ह़राम हो जाएगी और (2) अगर ह़राम जानने के बा वुजूद येह फ़े'ल करे तो इब्तिदा में उसे जन्नत में दाख़िल होने से रोक दिया जाएगा और वोह अपने गुनाह की सज़ा पाने के बा'द जन्नत में दाख़िल होगा।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من رغب عن ابیہ...الخ، ۲/۵۲)

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من رغب عن ابیہ وھو یعلم، ص۵۲، حدیث: ۶۳

3 .....इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो बा वुजूदे इल्म अपनी निस्बत अपने बाप के बजाए किसी और की त़रफ़ करे, अगर वोह इस अ़मल को ह़लाल ए'तिक़ाद करता हो तो इस सूरत में कुफ़्र ब मा'ना इर्तिदाद होगा वरना कुफ़्र यहां ब मा'ना कुफ़्राने ने'मत होगा।

(شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من رغب عن ابیہ...الخ، ۲/۵۲)

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من رغب عن ابیہ وھو یعلم، ص۵۱، حدیث: ۶۲

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....जिस ने ख़ुद को अपने बाप के ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब किया उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है।(1) येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

रह़मते इलाही से दूर अफ़राद

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं :) मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बर सरे मिम्बर ख़ुत़बा देते हुवे सुना : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमारे पास सिवाए किताबुल्लाह के जिसे हम पढ़ते हैं और इस सह़ीफ़े के इ़लावा कुछ नहीं। फिर आप ने उस सह़ीफ़े को खोला तो उस में दियत के ऊंटों की उ़म्रों के बारे में और ज़ख़्मों के अह़काम लिखे थे। उस में येह भी लिखा था कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मक़ामे ईर से ले कर मक़ामे सौर तक ह़रमे मदीना है, जिस ने मदीने में कोई बिदअ़त जारी की या किसी बिदअ़ती को पनाह दी तो उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस के किसी फ़र्ज़ और नफ़्ल को क़बूल नहीं करेगा। तमाम मुसलमानों का ज़िम्मा एक है और उन में से कोई अदना मुसलमान भी इस ज़िम्मे की कोशिश कर सकता है। जिस ने मुसलमान से किये हुवे अ़ह्द को तोड़ा तो उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है। जिस ने ख़ुद को अपने बाप के ग़ैर की त़रफ़ या ग़ुलाम ने ख़ुद को अपने मालिकों के ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब किया तो उस पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

(1)...مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینۃ ودعاء النبی... الخ، ص۷۱۱، حدیث:۱۳۷۰

www.dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ उस के किसी फ़र्ज़ और नफ़्ल को क़बूल नहीं करेगा।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴿5﴾.....जिस ने जान बूझ कर ख़ुद को अपने बाप के ग़ैर की त़रफ़ मन्सूब किया तो उस ने कुफ़्र किया और जिस ने ऐसी शै का दा'वा किया जो उस की न हो तो ऐसा शख़्स हम में से नहीं और उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले और जिस ने किसी शख़्स को काफ़िर या ख़ुदा का दुश्मन कहा अगर वोह ऐसा न हो तो वोह बात क़ाइल की त़रफ़ लौट आएगी।[2]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है जब कि मज़्कूरा अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं।

गुनाहे कबीरा नम्बर 63

बद शुगूनी

बद शुगूनी के गुनाहे कबीरा न होने का भी एह़तिमाल है।[3]

बद शुगूनी के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....اَلطِّيَرَةُ مِنَ الشِّرْكِ या'नी बद शुगूनी लेना शिर्क है[4] और

❶...مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینة ودعاء النبي...الخ، ص ۷۱۱، حدیث: ۱۳۷۰

❷...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من رغب عن ابیه وهو یعلم، ص ۵۱، حدیث: ۶۱

❸.....जो शख़्स बद शुगूनी की तासीर का ए'तिक़ाद रखता हो उस के ह़क़ में येह कबीरा है। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، الکبیرة الحادیة بعد المائة، ۱/ ۳۲۶)

❹.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی इस ह़दीस की तशरीह़ में लिखते हैं : बद शुगूनी लेने को शिर्क क़रार दिया गया है क्यूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का ए'तिक़ाद था कि बद शुगूनी के तक़ाज़े पर अ़मल करने से उन को नफ़्अ़ ह़ासिल होता है या उन से ज़रर और परेशानी दूर होती है और जब उन्हों ने इस के तक़ाज़े पर अ़मल किया तो गोया उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क किया और इसे शिर्के ख़फ़ी कहा जाता है (जो कि गुनाह है) और किसी शख़्स ने येह अ़क़ीदा रखा कि फ़ाइदा दिलाने और मुसीबत में मुब्तला करने वाली **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और कोई ज़ात है जो एक मुस्तक़िल ताक़त है तो उस ने शिर्के जली का इरतिकाब किया है (जो कि कुफ़्र है)। (مرقاة المفاتیح، ۸/ ۳۴۹، تحت الحدیث: ۴۵۸۴)

www.dawateislami.net

हम में से हर शख़्स को ऐसा ख़याल आ जाता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तवक्कुल के ज़रीए़ उसे दूर फ़रमा देता है।(1)

इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "और हम में से हर शख़्स को ऐसा ख़याल आ जाता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तवक्कुल के ज़रीए़ उसे दूर फ़रमा देता है।" येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अल्फ़ाज़ हैं (क़ौले रसूल नहीं)।

﴾2﴿.....कोई बीमारी मुतअ़द्दी नहीं और बद शुगूनी कोई शै नहीं और मैं फ़ाल को पसन्द करता हूं। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ाल क्या है ? इरशाद फ़रमाया : अच्छा कलिमा (जो किसी से सुने)।(2) येह ह़दीसे पाक सह़ीह़ है।

कीने की ता'रीफ़

...दिल की छुपी हुई दुश्मनी को कीना कहते हैं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 1412)

1...ترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الطیرۃ، ۳/ ۲۲۷، حدیث: ۱۶۲۰

2.....जैसे कोई शख़्स किसी काम को जा रहा है किसी से आवाज़ आई : ऐ नजीह़ या ऐ बरकत या ऐ रशीद ! येह जाने वाला येह अल्फ़ाज़ सुन कर कामयाबी का उम्मीद वार हो गया येह बिल्कुल जाइज़ है। बा'ज़ दुकानदार सुब्ह़ को يَارَزَّاق, गुमशुदा के मुतलाशी يَاوَاجِد मुसाफ़िर लोग يَاسَالِم ह़ाजी व गाज़ी लोग يَامَنْصُوْرِيَامَبْرُوْر और ज़ाइर लोग يَامَقْبُوْل सुन कर ख़ुश हो जाते हैं येह सब इसी ह़दीस से माख़ूज़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 216)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 64

सोने चांदी के बरतनों में खाना पीना

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

﴾1﴿.....बारीक रेशम पहनो न मोटा, न सोने चांदी के बरतनों में पियो और न उन के प्यालों में खाओ क्यूंकि येह दुन्या में कुफ़्फ़ार के लिये और आख़िरत में तुम्हारे लिये हैं।[1]

येह ह़दीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....जो सोने चांदी के बरतनों में खाता और पीता है वोह अपने पेट में जहन्नम की आग उंडेल रहा है।[2]

﴾3﴿.....जो चांदी के बरतन में कुछ पियेगा वोह आख़िरत में चांदी के बरतनों में नहीं पियेगा।[3] इन दोनों अह़ादीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

गुनाहों से नफ़रत करने का ज़ेहन

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

---

1 ...بخاری، کتاب الاطعمة، باب الاکل فی اناء مفضض...الخ، ۳/ ۵۳۵، حدیث: ۵۴۲۶

2 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم استعمال اناء الذهب...الخ، ص ۱۱۴۳، حدیث: ۲۰۶۵

3 ...مسلم، کتاب اللباس والزینة، باب تحریم استعمال اناء الذهب...الخ، ص ۱۱۴۳، حدیث: ۲۰۶۶

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 65

नाहक़ झगड़ना, दूसरे को हक़ीर समझ कर उस के कलाम में त़ा'न करना, इन्तिहाई दुश्मनी रखना और हक़ जाने बिग़ैर क़ाज़ी का वकील बनना

चार फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا

(پ۲، البقرۃ: ۲۰۴، ۲۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे और अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे।

﴿2﴾.....

مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ۲۵، الزخرف: ۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़ने को बल्कि वोह हैं ही झगड़ालू लोग।

﴿3﴾.....

اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ

(پ۲۴، المؤمن: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो उन के दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हवस जिसे न पहुंचेंगे।

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....

وَلَا تُجَادِلُوۡۤا اَهۡلَ الۡكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ ۖ (پ۲۱،العنکبوت:۴۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और ऐ मुसलमानो किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर त़रीक़े पर।

लड़ाई झगड़े के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा ना पसन्द शख़्स वो है जो बड़ा झगड़ालू है।(1)

﴾2﴿.....जो शख़्स बिग़ैर इल्म के ख़ुसूमत (झगड़े व इख़्तिलाफ़) में पड़ता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहता है यहां तक कि उसे छोड़ दे।(2)

﴾3﴿.....कोई क़ौम हिदायत पर रहने के बा'द गुमराह नहीं होती मगर झगड़ों के सबब।(3) येह कह कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

مَا ضَرَبُوۡهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٌ خَصِمُوۡنَ ﴿۵۸﴾ (پ۲۵،الزخرف:۵۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाह़क़ झगड़ने को बल्कि वोह हैं ही झगड़ालू लोग।(4)

﴾4﴿.....मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ आ़लिम की लग़्ज़िश, मुनाफ़िक़ के क़ुरआने पाक में झगड़ने और दुन्या का है जो तुम्हारी गर्दनों को काट कर रख देगी।(5)

---

❶...مسلم، کتاب العلم، باب في الالد الخصم، ص۱۴۳۳، حدیث:۲۶۶۸

❷...موسوعة ابن ابي الدنيا، ذم الغيبة والنميمة، ۴/ ۳۲۲، حدیث:۱۴

❸.....इस झगड़े से मुराद क़ौम का अपने अम्बिया के साथ बात़िल झगड़ना और बत़ौरे सर्कशी और इन्कार इन से नित नए मो'जिज़ात त़लब करना था। (مرقاة المفاتيح، ۱/ ۴۲۶، تحت الحدیث:۱۸۰)

❹...بخاری، کتاب التفسير، باب: وهو الد الخصام، ۳/ ۱۸۱، حدیث:۴۵۲۳

❺...معجم الكبير، ۲۰/ ۱۳۸، حدیث:۲۸۲

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....कुरआन में झगड़ना कुफ़्र है[1]।[2]

﴾6﴿.....जिस ने बातिल की हिमायत में जान बूझ कर झगड़ा किया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहेगा यहां तक कि उसे छोड़ दे ।[3]

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "जिस ने ऐसा किया बिलाशुबा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब में पलटा ।"[4]

इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

﴾7﴿.....मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ गुफ़्तगू के माहिर मुनाफ़िक़ का है[5]।[6]

﴾8﴿.....ह़या और कमगोई ईमान की दो शाख़ें हैं और फ़ोह़्श गोई और ज़ियादा बोलना निफ़ाक़ की दो शाख़ें हैं ।[7]

1.....आयाते कुरआनिया के मआ़नी में ऐसा झगड़ा करना जिस से लोग शक में मुब्तला हो जाएं क़रीबन कुफ़्र है क्यूंकि लोगों के कुफ़्र का ज़रीआ़ है या मुतशाबेहात की तावीलों में झगड़ना कुफ़्राने ने'मत है या कुरआनी आयात और आयात की मुतवातिर क़िरातों में येह झगड़ा करना कि येह कलामे इलाही हैं या नहीं कुफ़्र है या कुरआन को अपनी राए के मुताबिक़ बनाने में झगड़ना कि हर एक अपनी राए और ईजाद कर्दा मज़हब के मुताबिक़ उस का तर्जमा या तफ़्सीर करे येह कुफ़्र है। बहर ह़ाल ह़दीस बिल्कुल वाज़ेह़ है और इसे मुफ़स्सिरीन और मुज्तहिदीन के इख़्तिलाफ़ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं वोह झगड़ा नहीं है बल्कि तह़क़ीक़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/195)

2...ابوداود، کتاب السنة، باب النهی عن الجدال فی القرآن، ۴/ ۲۶۵، حدیث: ۴۶۰۳

3...ابوداود، کتاب الاقضیة، باب فیمن یعین علی خصومة...الخ، ۳/ ۴۲۷، حدیث: ۳۵۹۷

4...ابوداود، کتاب الاقضیة، باب فیمن یعین علی خصومة...الخ، ۳/ ۴۲۷، حدیث: ۳۵۹۸

5.....या'नी वोह बन्दा आ़लिम होगा और ज़बान से इल्मी बातें करता होगा लेकिन दिल से जाहिल और अ़क़ीदे का फ़ासिद होगा। लोग उस की चर्ब ज़बानी से धोके में आ जाएंगे और अ़मल में उस की इत्तिबाअ़ करने के सबब कसीर मख़्लूक़ लग़्ज़िशों में पड़ जाएगी। (فیض القدیر، ۱/ ۲۸۶، تحت الحدیث: ۳۰۵)

6...مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ۱/ ۵۷، حدیث: ۱۴۳

7...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الحیی، ۳/ ۴۱۴، حدیث: ۲۰۳۴

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 66

गुलाम को ख़स्सी करना, नाक काटना और इस पर ज़ुल्मो सितम करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इब्लीसे लईन का क़ौल यूं बयान फ़रमाता है :

وَلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ (پ۵، النساء:۱۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क़सम है मैं ज़रूर बहका दूंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ूएं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे।

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पैदा की हुई चीज़ें बदल देने से मुराद ख़स्सी करना है।

गुलाम का क़त्ल, उसे ख़स्सी और मुस्ला करना

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने गुलाम को क़त्ल करेगा हम उसे क़त्ल करेंगे और जो अपने गुलाम की नाक काटेगा हम उस की नाक काटेंगे।[(1)]

येह ह़दीसे पाक सहीह़ है।

❶...ابو داود، کتاب الدیات، باب من قتل عبدہ او مثل بہ...الخ، ۴/۲۳۲، حدیث:۴۵۱۵

www.dawateislami.net

रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने गुलाम को ख़स्सी किया हम उसे ख़स्सी करेंगे।[1][2]

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ مَّثَّلَ بِعَبْدِهٖ فَهُوَ حُرٌّ "या'नी जो अपने गुलाम का मुस्ला करेगा (या'नी उस का कोई उ़ज़्व काटेगा) तो वोह गुलाम आज़ाद हो जाएगा।"[3]

बुख़ारी व मुस्लिम में है :

महशर में सज़ा

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने गुलाम पर ज़िना की तोहमत लगाई बरोज़े क़ियामत उस पर ह़द क़ाइम की जाएगी।[4]

वसिय्यते रसूल

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आख़िरी बात जो याद की गई वोह येह है कि नमाज़ का ख़याल रखना, नमाज़ का ख़याल रखना और अपने ग़ुलामों और लौंडियों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना।[5]

---

1 .....येह ह़दीसे पाक या तो ज़ज़्र पर मब्नी है या फिर मन्सूख़ है।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, 5 / 262)

2 ...ابو داود، کتاب الدیات، باب من قتل عبدہ او مثل بہ...الخ، ۴/ ۲۳۲، حدیث: ۴۵۱۶

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الحدود، باب لایقاد لمملوک من مالکہ...الخ، ۵/ ۴۰۹، حدیث: ۸۱۶۵

4 ...مسلم، کتاب الایمان، باب التغلیظ علی من قذف مملوکہ بالزنا، ص ۹۰۵، حدیث: ۱۶۶۰

5 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی حق المملوک، ۴/ ۴۳۷، حدیث: ۵۱۵۶

www.dawateislami.net

रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घोड़ों और चौपायों को ख़स्सी करने से मन्अ़ फ़रमाया[1]।[2]

गुनाहे कबीरा नम्बर 67

माप तोल में डन्डी मारना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۖ﴿۲﴾ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ؕ﴿۳﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿۴﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ﴿۵﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿۶﴾

(پ۳۰، المطففین: ۱تا۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें उठना है एक अ़ज़्मत वाले दिन के लिये जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

माप तोल में डन्डी मारना चोरी, ख़ियानत और नाहक़ त़रीक़े से दूसरों के माल खाने का एक त़रीक़ा है।

---

1 .....जानवरों को ख़स्सी करने में अगर फ़ाइदा हो मसलन उस का गोश्त अच्छा होगा या ख़स्सी न करने में शरारत करेगा, लोगों को ईज़ा पहुंचाएगा। इन ही मसालेह़ की बिना पर बकरे और बेल वग़ैरा को ख़स्सी किया जाता है, येह जाइज़ है और अगर मन्फ़अ़त या दफ़्ए ज़रर दोनों बातें न हों तो ख़स्सी करना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3, 16/ 590, 591)

2 ...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمر، ۲/ ۲۵۱، حدیث: ۴۷۶۹

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 68

अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना(1)

तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾.....

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾

(پ۹، الاعراف: ۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से निडर हैं तो अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

﴿2﴾.....

حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً

(پ۷، الانعام: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यहां तक कि जब ख़ुश हुवे इस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया।

﴿3﴾.....

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۙ﴿۷﴾

(پ۱۱، یونس: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुन्या की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इस पर मुत़मइन हो गए और वोह जो हमारी आयतों से ग़फ़्लत करते हैं।

---

1 .....इस का मा'ना येह है कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उख़रवी अ़ज़ाब और ग़ैज़ो ग़ज़ब से बे ख़ौफ़ हो जाए। (ماخوذ من الحدیقة الندیة، ۲/ ۱۱۶)

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 69

रहमते ख़ुदावन्दी से ना उम्मीद होना

तीन फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....

اِنَّهٗ لَا یَایْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ (۸۷) (پ۱۳، یوسف:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।

﴾2﴿.....

وَ هُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا (پ۲۵، الشوری:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है कि मींह उतारता है उन के ना उम्मीद होने पर।

﴾3﴿.....

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ (پ۲۴، الزمر:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो।

मरते वक़्त रब तआ़ला से अच्छी उम्मीद हो

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई न मरे मगर इस त़रह़ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छी उम्मीद रखता हो।(1)

(1)...مسلم، کتاب الجنۃ، باب الامر بحسن الظن باللّٰہ تعالی عند الموت، ص۱۵۳۸، حدیث:۲۸۷۷

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 70

मोह्सिन की नाशुक्री करना[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَ ؕ (پ۲۱،لقمٰن:۱۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र अदा नहीं करता।[2]

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : ने'मत की नाशुक्री कबीरा गुनाह है और ने'मत का शुक्र मोह्सिन को बदला देना और उस के लिये दुआ करना है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 71

बचा हुवा पानी रोकना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾ (پ۲۹،الملک:۳۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता।

1.....इमाम इब्ने ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इन्कार मुराद लेना मुतअ़य्यन है क्यूंकि वोही ह़क़ीक़ी मोह्सिन है और उसे ऐसे मोह्सिन के एह्सान झुटलाने पर मह्मूल करना भी मुमकिन है जिस के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत करना वाजिब हो जैसे शोहर के ह़ुक़ूक़ अदा न करना। (الزواجر عن اقتراف الکبائر،الکبیرۃ التاسعۃ والخمسون،۱/۲۴۴)

2...ابوداود،کتاب الادب،باب فی شکر المعروف،۴/ ۳۳۵،حدیث:۴۸۱۱

www.dawateislami.net

चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बचे हुवे पानी को मत रोको कि इस की वज्ह से तुम घास को रोकोगे ।(1)(2)

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है ।

﴾2﴿.....बचे हुवे पानी को फ़रोख़्त मत करो ।(3)

इस ह़दीसे पाक को इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने रिवायत किया है ।

﴾3﴿.....जिस ने बचे हुवे पानी या बची हुई घास को रोका **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत अपने फ़ज़्ल को उस से रोक लेगा ।(4)

इस ह़दीसे पाक को इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है ।

﴾4﴿.....तीन शख़्सों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत कलाम फ़रमाएगा न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और उन के

❶...مسلم، کتاب المساقاۃ، باب تحریم فضل بیع الماء الذی...الخ، ص۸۴۶، حدیث: ۱۵۶۶

❷.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 4 स़फ़ह़ा 315 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : किसी शख़्स ने बन्जर ज़मीन जिसे अ़रबी में मवात कहते हैं आबाद की वहां कुंवां लगवा लिया लोग उस ज़मीन के इर्द गिर्द अपने जानवर चराते हैं वोह ज़मीन मवात जो हुई येह शख़्स जानवरों को चरने से रोक नहीं सकता, वोह बहाना येह करे कि किसी जानवर को बिला मुआ़वज़ा पानी न पीने दे जो उस के अपने कुंवें का है, निय्यत येह हो कि उस पानी की रोक से जानवर यहां की घास चरना छोड़ देंगे फिर येह घास मेरी अपनी होगी कि इस से पैसा कमाऊंगा, येह जुर्म है कि कुंवां तो उस का है मगर ज़मीन सरकारी छूटी हुई है, येह पानी के बहाने चरागाह की घास पर क़ब्ज़ा करना चाहता है वरना अपनी ज़मीन की खड़ी घास और काटी हुई घास की बैअ़ जाइज़ है । (مرقات)

❸...بخاری، کتاب المساقاۃ، باب من قال ان صاحب الماء...الخ، ۲/ ۹۶، حدیث: ۲۳۵۳ بتغیر قلیل

❹...مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۹۵، حدیث: ۶۶۸۴

www.dawateislami.net

लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : (1) वोह शख़्स जिस के पास किसी वीराने में बचा हुवा पानी हो और वोह उस पानी को मुसाफ़िर से रोके (2) वोह शख़्स जो किसी हुक्मरान की बैअ़त करे और उस बैअ़त से उस की ग़रज़ दुन्या ही हो कि अगर वोह उसे दुन्या (मालो दौलत वग़ैरा) से अ़ता करे तो उस से वफ़ादार रहे और अगर दुन्या में से कुछ अ़ता न करे तो बे वफ़ाई बरते और (3) वोह शख़्स जो अ़स्र के बा'द कोई सौदा फ़रोख़्त करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा ले कि मैं ने ख़ुद इतनी क़ीमत में लिया है ख़रीदने वाला उस को सच्चा समझ रहा हो ह़ालांकि वोह झूटा हो।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है और बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : "वोह मर्द जो बचे हुवे पानी को रोके उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : आज मैं अपना फ़ज़्ल तुझ से रोकता हूं जिस त़रह़ तू ने बचे हुवे पानी को रोका जिस को तेरे हाथों ने नहीं बनाया था।"[2]

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा ह़सरत उसे होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उसे होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ ابن عساکر، ۵۱/ ۱۳۸)

---

1 ...بخاری، کتاب المساقاۃ، باب اثم من منع ابن السبیل...الخ، ۲/ ۹۷، حدیث: ۲۳۵۸

2 ...بخاری، کتاب المساقاۃ، باب من رأی ان صاحب الحوض...الخ، ۲/ ۱۰۰، حدیث: ۲۳۶۹

www.dawateislami.net

गुनाहे कबीरा नम्बर 72

अ़लामत के लिये जानवर का चेहरा दाग़ना[1]

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक गधे के पास से हुवा जिस के चेहरे को दाग़ा गया था । येह देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने इस को दाग़ा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए ।"[2] इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है ।

अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में है : क्या तुम्हें येह ख़बर नहीं पहुंची कि जो किसी चोपाए के चेहरे को दाग़े या उस के चेहरे पर मारे मैं ने उस पर ला'नत की है[3]।[4]

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान : "क्या तुम्हें येह ख़बर नहीं पहुंची मैं ने उस पर ला'नत की है" इस से मा'लूम होता है कि जिस शख़्स को इस वईद की

---

1 .....(लोहा वग़ैरा गर्म कर के) आग के ज़रीए़ बतौ़रे अ़लामत चेहरे को दाग़ना येह मुत़लक़न ह़राम है ख़्वाह जानवर के साथ ऐसा किया जाए या इन्सान के साथ । अलबत्ता चेहरे के इलावा जानवर के किसी और हिस्से को बतौ़रे अ़लामत दाग़ा जा सकता है मगर इन्सान के साथ इस की भी इजाज़त नहीं ।
(فیض القدیر، ۵/۳۵۰، تحت الحدیث:۷۲۸۰)

2 ...مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب النھی عن ضرب الحیوان فی وجھہ...الخ، ص۱۱۷۲، حدیث:۲۱۱۷

3 .....चेहरे पर मारने की मुमानअ़त इस लिये की गई है कि येह जिस्म का नाज़ुक व ह़स्सास हिस़्सा है तो चेहरे पर लगने वाली इस चोट से जानवर बदनुमा हो सकता है और बसा औक़ात येह मार उस के ह़वास में ख़लल का बाइ़स बन जाती है तो हर चौपाए के बारे में येह हुक्म है कि उस के चेहरे पर मारना ह़राम है और इन्सान के चेहरे पर मारने की हुरमत तो ज़ियादा सख़्त है कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया है । (فیض القدیر ۲/۲۰۷، تحت الحدیث:۱۵۹۰)

4 ...ابوداود، کتاب الجھاد، باب النھی عن الوسم فی الوجہ...الخ، ۳/۳۷، حدیث:۲۵۶۴

www.dawateislami.net

ख़बर न पहुंची हो और उस से येह काम सरज़द हो गया हो तो वोह गुनहगार नहीं और जिस शख़्स को येह ख़बर मिल गई थी फिर भी वोह इस फ़े'ल का मुर्तकिब हुवा तो वोह इस ला'नत में दाख़िल है। यूंही आ़म कबीरा गुनाहों के बारे में भी हम येही कहते हैं मगर येह कि वोह गुनाह ऐसा हो जिस की हुरमत व क़बाह़त का इ़ल्म ज़रूरिय्याते दीन में से हो तो इस सूरत में बन्दे का जाहिल होना उ़ज़्र नहीं होगा।

गुनाहे कबीरा नम्बर 73

जुवा खेलना[1]

---

1 .....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "ग़ीबत की तबाहकारियां" में फ़रमाते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल दुन्या में जूए के नित नए त़रीक़े राइज हैं, इन में से 6 येह हैं : (1) **लॉटरी :** इस त़रीक़ए कार में लाखों करोड़ों रूपे के इन्आ़मात का लालच दे कर लाखों टिकट मा'मूली रक़म के बदले फ़रोख़्त किये जाते हैं फिर कुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ कामयाब होने वालों में चन्द लाख या चंद करोड़ रूपे तक़्सीम कर दिये जाते हैं जब कि बक़िय्या अफ़राद की रक़म डूब जाती है येह भी जुवा ही की एक सूरत है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

(2) **प्राइज़ बॉन्ड की पर्ची :** हुकूमते पाकिस्तान (200, 750, 1500, 7,500, 15,000, 40,000) रूपे की क़ीमत के इन्आ़मी बॉन्डज़ बैंक के ज़रीए़ जारी करती है और जदवल के मुत़ाबिक़ हर माह कुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ करोड़ों रूपे के इन्आ़मात ख़रीदारों में तक़्सीम करती है जिस का इन्आ़म नहीं निकलता उस की भी रक़म महफ़ूज़ रहती है वोह इसे जब चाहे भुना (या'नी केश करवा) सकता है। येह जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की सूरत है और जूए में दाख़िल नहीं लेकिन इस के मुतवाज़ी बा'ज़ लोग इन्आ़मी बॉन्डज़ की पर्चियां बेचते हैं उन पर्चियों की ख़रीदो फ़रोख़्त ग़ैर क़ानूनी नाजाइज़ व ह़राम है क्यूंकि बेचने वाला हुकूमत की

www.dawateislami.net

त़रफ़ से जारी कर्दा प्राइज़ बॉन्डज़ अपने ही पास रखता है (बल्कि बा'ज़ औक़ात तो प्राइज़ बॉन्डज़ भी बेचने वाले के पास नहीं होते) पर्ची बेचने वाला ख़रीदार को क़लील रक़म के बदले पर्ची पर महूज़ एक नम्बर लिख कर दे देता है कि अगर इस नम्बर पर इन्आ़म निकल आया तो मैं तुम्हें इतनी रक़म दूंगा। इन्आ़मी पर्ची का येह काम भी जुवा है क्यूंकि इस में इन्आ़म न निकलने की सूरत में ख़रीदार की रक़म डूब जाती है।

(3) **मोबाइल मेसेजिज़ और जुवा :** मोबाइल पर मुख़्तलिफ़ सुवालात पर मब्नी मेसेजिज़ (MESSAGES) भेजे जाते हैं जिस में मसलन कौन सी टीम मेच जीतेगी ? या पाकिस्तान किस दिन बना था ? दुरुस्त जवाबात देने वालों के लिये मुख़्तलिफ़ इन्आ़मात रखे जाते हैं, शिर्कत करने वाले के "मोबाइल बेलेन्स" से क़लील रक़म मसलन दस रूपे कट जाती है, जिन का इन्आ़म नहीं निकलता उन की रक़म ज़ाएअ़ हो जाती है, येह भी जुवा है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

(4) **मुअ़म्मा :** इस में एक या एक से ज़ियादा सुवालात ह़ल करने के लिये दिये जाते हैं जिस का ह़ल मुन्तज़िमीन की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ निकल आए उसे इन्आ़म दिया जाता है, इन्आ़मात की ता'दाद तीन या चार या इस से ज़ाइद भी होती है। लिहाज़ा दुरुस्त ह़ल ज़ियादा ता'दाद में निकलें तो क़ुरआ़ अन्दाज़ी के ज़रीए़ फ़ैसला होता है। इस खेल में बहुत सारे अफ़राद शरीक होते हैं, उन की शिर्कत दो त़रह़ से होती है : (1) मुफ़्त (2) मा'मूली फ़ीस दे कर, अगर शुरका से किसी क़िस्म की फ़ीस न ली जाए तो और कोई मानेए़ शरई न होने की सूरत में उस इन्आ़म का लेना जाइज़ है। जिस में शुरका से फ़ीस ली जाती है उस में इन्आ़म मिले या न मिले रक़म डूब जाती है, येह सूरत जुवा की है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

(5) **पैसे जम्अ़ कर के क़ुरआ़ अन्दाज़ी करना :** बा'ज़ अफ़राद या दोस्त आपस में थोड़ी थोड़ी रक़म जम्अ़ कर के क़ुरआ़ अन्दाज़ी करते हैं कि जिस का नाम निकला सारी रक़म उस को मिलेगी, येह भी जुवा है क्यूंकि बक़िय्या अफ़राद की रक़म डूब जाती है। इसी त़रह़ बा'ज़ औक़ात पैसे जम्अ़ कर के कोई किताब या दूसरी चीज़ ख़रीदी जाती है कि जिस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकल आया उसे येह किताब दे दी जाएगी येह भी जुवा ही है। याद रहे कि बा'ज़ कम्पनियां अपनी मसनूआ़त ख़रीदने वालों को क़ुरआ़ अन्दाज़ी कर के इन्आ़मात देती हैं येह जाइज़ है क्यूंकि इस में किसी की भी रक़म नहीं डूबती।

www.dawateislami.net

(6) **मुख़्तलिफ़ खेलों में शर्त् लगाना :** हमारे यहां मुख़्तलिफ़ खेल मसलन घुड़ दौड़, क्रिकेट, केरम, बिलैर्ड, ताश, शत्रन्ज वग़ैरा दो त़रफ़ा शर्त् लगा कर खेले जाते हैं कि हारने वाला जीतने वाले को इतनी रक़म या फ़ुलां चीज़ देगा येह भी जुवा है और नाजाइज़ व ह़राम। केरम और बिलैर्ड क्लब वग़ैरा में खेलते वक़्त उ़मूमन येह शर्त् रखी जाती है कि क्लब के मालिक की फ़ीस हारने वाला अदा करेगा, येह भी जुवा है। बा'ज़ "नादान" घरों में मुख़्तलिफ़ खेलों मसलन ताश या लूडो पर दो त़रफ़ा शर्त् लगा कर खेलते हैं और कम इ़ल्मी के बाइ़स इस में कोई ह़रज नहीं समझते वोह भी संभल जाएं कि येह भी जुवा है और जुवा ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 188 ता 190)

जुवा से तौबा का त़रीक़ा : जुवा खेलने वाला अगर नादिम हुवा तो उस को चाहिये कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सच्ची तौबा करे मगर जो कुछ माल जीता है वोह ब दस्तूर ह़राम ही रहेगा इस ज़िम्न में रहनुमाई करते हुवे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जिस क़दर माल जूए में कमाया मह़ज़ ह़राम है और इस से बराअत (या'नी नजात) की येही सूरत है कि जिस जिस से जितना जितना माल जीता है उसे वापस दे या जैसे बने उसे राज़ी कर के मुआ़फ़ करा ले वोह न हो तो उस के वारिसों को वापस दे या उन में जो आ़क़िल बालिग़ हों उन का ह़िस्सा उन की रिज़ामन्दी से मुआ़फ़ करा ले बाक़ियों का ह़िस्सा ज़रूर उन्हें दे कि इस की मुआ़फ़ी मुमकिन नहीं और जिन लोगों का पता किसी त़रह़ न चले, न उन का, न उन के वरसा का, उन से जिस क़दर जीता था उन की निय्यत से ख़ैरात कर दे, अगर्चे (ख़ुद) अपने (ही) मोह़ताज बहन भाइयों, भतीजों, भांजों को दे दे। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : ग़रज़ जहां जहां जिस क़दर याद हो सके कि इतना माल फ़ुलां से हार जीत में ज़ियादा पड़ा था उतना तो उन्हें या उन के वारिसों को दे, येह न हों तो उन की निय्यत से तसद्दुक़ (या'नी सदक़ा) करे और ज़ियादा पड़ने के येह मा'ना कि मसलन एक शख़्स से दस बार जुवा खेला कभी येह जीता कभी येह, उस (या'नी सामने वाले जुवारी) के जीतने की (रक़म की) मिक़्दार मसलन सौ रूपे को पहुंची और येह (ख़ुद) सब दफ़्आ़ के मिला कर सवा सौ जीता तो सौ सौ बराबर हो गए पच्चीस उस (या'नी सामने वाले जुवारी) के देने रहे। इतने ही उसे वापस दे। وَعَلٰی ہٰذَا الْقِیَاس (या'नी और इसी पर क़ियास कर लीजिये) और जहां याद न आए कि (जुवा खेलने वाले) कौन कौन लोग थे और कितना (माल जुए में जीत) लिया, वहां ज़ियादा से ज़ियादा (मिक़्दार का) तख़्मीना (تَخْمِیْنَہ या'नी अन्दाज़ा) लगाए कि इस तमाम मुद्दत में किस क़दर माल जूए से कमाया होगा उतना मालिकों (या'नी उन ना मा'लूम जुवारियों) की निय्यत से ख़ैरात कर दे, आ़क़िबत यूंही पाक होगी। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा रज़विय्या, 19/651)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَیْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَالْمَیْسِرِ وَیَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، المائدۃ: ۹۰، ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : शराब और जुवा और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कई आयाते मुबारका नाज़िल फ़रमाई हैं जो लोगों के अमवाल नाह़क़ खाने वालों की हलाकत के बारे में हैं।

जूए की दा'वत देने पर सदक़े का हुक्म

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने साथी से कहा : "आओ मैं तुम्हारे साथ जुवा खेलूं" तो उसे चाहिये कि (बत़ौरे कफ़्फ़ारा) सदक़ा दे।[1][2] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب من حلف باللات والعزی فلیقل لا الہ الا اللہ، ص ۸۹۴، حدیث: ۱۶۴۷

2 इमाम नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : उ़लमा फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सदक़ा करने का हुक्म इस लिये दिया कि उस शख़्स ने गुनाह की दा'वत दी थी। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ख़त्ताबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जितने पैसों का जुवा खेलने का कहा था, उतने पैसों का सदक़ा करे। मगर सह़ीह़ वोह है जो मुह़क़्क़िक़ीन ने कहा है और येही ह़दीसे पाक का ज़ाहिर है कि सदक़े की कोई मिक़्दार मुअ़य्यन नहीं आसानी से जितना सदक़ा कर सके, कर दे। (شرح المسلم للنووی، کتاب الایمان، باب النہی عن الحلف بغیر اللہ...الخ، ۱۱/۱۰۷)

www.dawateislami.net

जब सिर्फ़ जुवा खेलने की बात चीत करना ऐसा गुनाह है जो कि बतौरे कफ़्फ़ारा सदक़ा करने का बाइस है तो जो शख़्स जुवा खेले उस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ? ऐसा शख़्स नाहक़ लोगों का माल खाने वालों में दाख़िल है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 74

ह़रम में बे दीनी फैलाना[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِیْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ا لْعَاكِفُ فِیْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ یُّرِدْ فِیْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ۠ ﴿۲۵﴾

(پ۱۷، الحج: ۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इस अदब वाली मस्जिद से जिसे हम ने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया कि इस में एक सा ह़क़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो इस में किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

9 कबीरा गुनाह

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिदे माजिद से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ़ में इरशाद

1.....इमाम इब्ने ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हर एक ना फ़रमानी शामिल है जो इरादे से हो।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الحادی والخمسون بعد المائة، ۱/ ۴۴۴)

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "सुनो ! बिलाशुबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दोस्त नमाज़ी हैं जो नमाज़ क़ाइम करते, रमज़ान के रोज़े रखते और सवाब की निय्यत से अपने माल की ज़कात देते हैं और जिन कबीरा गुनाहों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया उन से बचते हैं।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कबीरा गुनाह कितने हैं ? फ़रमाया : कबीरा गुनाह 9 हैं : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) नाहक़ किसी मुसलमान को क़त्ल करना (3) मैदाने जिहाद से पीठ फेरना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना और (7) मुसलमान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (8) बैतुल्लाह जो तुम्हारा क़िब्ला है उस में जो बातें ह़राम हैं उन्हें ह़लाल कर लेना[1]। जो शख़्स भी इस ह़ालत में मरेगा कि इन कबीरा गुनाहों का उस ने इरतिकाब न किया हो और वोह नमाज़ क़ाइम करता और ज़कात देता हो तो वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ उस घर में होगा जिस के दरवाज़े के किवाड़ सोने के होंगे।[2]

इस ह़दीसे पाक की सनद सह़ीह़ है।

---

1 ....."**अल कबाइर**" लिज़्ज़ह़बी के तमाम नुस्ख़ों में मज़कूरा रिवायत में कबीरा गुनाहों की ता'दाद 9 ही बयान की गई है लेकिन मज़कूर आठ हैं नवां कबीरा जो जादू है उस का ज़िक्र नहीं। येह रिवायत "अबू दावूद शरीफ़" में भी है और वहां 9 कबाइर के ज़िम्न में जादू का ज़िक्र भी है। इमाम अबू बक्र बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "सुननुल कुब्रा" में आठ कबाइर ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं : मेरी या मेरे शैख़ की किताब में जादू का ज़िक्र लिखने से रह गया है।

(سنن الکبری للبیهقی، ۳/ ۵۷۳، تحت الحدیث: ۶۷۲۳)

2 ...ابو داود، کتاب الوصایا، باب ماجاء فی التشدید فی اکل مال الیتیم، ۳/ ۱۵۹، حدیث: ۲۸۷۵

سنن کبری للبیهقی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی استقبال القبلة بالموتی، ۳/ ۵۷۳، حدیث: ۶۷۲۳

www.dawateislami.net

लोगों में सब से ज़ियादा सर्कश

रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक लोगो में सब से ज़ियादा सर्कश वोह है जो हरम में किसी को क़त्ल करे या क़ातिल के बजाए किसी बे गुनाह को क़त्ल करे या ज़मानए जाहिलिय्यत के इन्तिक़ाम में किसी को क़त्ल करे ।(1)

इस हदीसे पाक को इमाम अहमद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है ।

गुनाहे कबीरा नम्बर 75

नमाज़े जुमुआ तर्क करना

तर्के जुमुआ के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जुमुआ से पीछे रह जाने वालों के बारे में इरशाद फ़रमाया : मैं ने इरादा किया कि एक शख़्स को जमाअ़त करवाने का हुक्म दूं फिर जो लोग नमाज़े जुमुआ से पीछे रह जाते हैं उन के घरों को उन के साथ जला दूं ।(2)

﴿2﴾.....लोग नमाज़े जुमुआ छोड़ने से बाज़ रहें वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों पर मोहर कर देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे ।(3)

---

1 ...مسند احمد، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، ۲/ ۵۹۷، حدیث: ۶۶۹۳

2 ...مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاة، باب فضل صلاة الجماعة... الخ، ص ۳۲۷، حدیث: ۶۵۲

3 ...مسلم، کتاب الجمعة، باب التغلیظ فی ترک الجمعة، ص ۴۳۰، حدیث: ۸۶۵

www.dawateislami.net

इस ह़दीस शरीफ़ को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾3﴿.....जो शख़्स तीन जुमुए सुस्ती के सबब छोड़ देगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल पर मोहर लगा देगा[1]।[2]

इस ह़दीसे पाक की सनद क़वी है और इसे इमाम अबू दावूद और इमाम नसाई عَلَيْهِمَا الرَّحْمَه ने रिवायत किया है।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान करती हैं : रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जुमुआ के लिये जाना हर बालिग़ पर वाजिब है।[3]

इस ह़दीस को इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

गुनाहे कबीरा नम्बर 76

मुसलमानों की जासूसी करना और इन के पोशीदा उमूर पर दूसरों को आगाह करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ٢٦، الحجرات:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंढो।

इसी ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब बिन अबी बल्तआ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का वाक़िआ भी है। ह़ज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन के क़त्ल का इरादा किया तो

1.....मोहर से मुराद ग़फ़्लत की मोहर है न कि कुफ़्र की क्यूंकि जुमुआ छोड़ना फ़िस्क़ है, कुफ़्र नहीं। इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ गुनाह दिल की सख़्ती का बाइस हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 315)

2...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب التشدید فی ترک الجمعۃ، ١/ ٣٩٣، حدیث: ١٠٥٢

3...نسائی، کتاب الجمعۃ، باب التشدید فی التخلف عن الجمعۃ، ص ٢٣٦، حدیث: ١٣٦٨

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह कह कर मन्अ़ फ़रमा दिया कि येह अस्ह़ाबे बद्र में से हैं।(1)(2)

---

❶...مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل أهل بدر، ص ۱۳۵۵، حدیث: ۲۴۹۴

❷.....सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इस वाक़िए़ की तफ़्सील बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारा मदीनए त़य्यिबा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर हुई, जब कि हुज़ूर फ़त्ह़े मक्का का सामान फ़रमा रहे थे। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने उस से फ़रमाया : क्या तू मुसलमान हो कर आई ? उस ने कहा : नहीं। फ़रमाया : क्या हिजरत कर के आई ? अ़र्ज़ किया : नहीं, फ़रमाया : फिर क्यूं आई ? उस ने कहा : मोह़ताजी से तंग हो कर। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने उस की इमदाद की कपड़े बनाए, सामान दिया। ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उस से मिले, उन्हों ने उस को दस दीनार दिये, एक चादर दी और एक ख़त़ अहले मक्का के पास उस की मा'रिफ़त भेजा, जिस का मज़्मून येह था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम (अहले मक्का) पर ह़म्ले का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारा येह ख़त़ ले कर रवाना हो गई। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब को इस की ख़बर दी, हुज़ूर ने अपने चन्द अस्ह़ाब को जिन में ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे घोडों पर रवाना किया और फ़रमाया : मक़ामे रौज़ाख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औ़रत मिलेगी, उस के पास ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ का ख़त़ है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है, वोह ख़त़ उस से ले लो और उस को छोड़ दो। अगर इन्कार करे तो उस की गर्दन मार दो। येह ह़ज़रात रवाना हुवे और औ़रत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था। उस से ख़त़ मांगा, वोह इन्कार कर गई और क़सम खा गई सह़ाबा ने वापसी का क़स्द किया ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ब क़सम फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तल्वार खींच कर औ़रत से फ़रमाया : या ख़त़ निकाल या गर्दन रख। जब उस ने देखा कि ह़ज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त़ निकाला। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ात़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बुला कर फ़रमाया : ऐ ह़ात़िब ! इस का क्या बाइ़स ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जब से इस्लाम लाया, कभी.....

www.dawateislami.net

मुसलमानों की जासूसी करने वालों का हुक्म

अगर किसी की जासूसी के सबब इस्लाम व अहले इस्लाम को कमज़ोर करना, मुसलमानों का क़त्ल होना, उन्हें कुफ़्फ़ार का गुलाम और क़ैदी बनना लाज़िम आए या लूट मार वग़ैरा जैसे उमूरे फ़ासिदा लाज़िम आएं तो ऐसा शख़्स उन लोगों में से है जो ज़मीन में फ़साद फैलाता है और खेती और लोगों को हलाक करता है पस ऐसे शख़्स के क़त्ल करने का हुक्म है और येह शख़्स अ़ज़ाब का ह़क़दार है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। येह बदीही (वाज़ेह़) बात हर जासूस जानता है कि चुग़ली करना कबीरा गुनाहों में से है तो बत़ौरे जासूस लोगों की चुग़ली करने का अ़मल तो मज़ीद कई गुनाहों के लाज़िम आने के सबब बहुत बड़ा और अ़ज़ीम गुनाह है। وَاللهُ تَعَالٰی اَعلم

.......मैं ने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उन की मह़ब्बत न आई। लेकिन वाक़िआ़ येह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उन की क़ौम से न था, मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं, उन के मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं, जो उन के घरबार की निगरानी करते हैं। मुझे अपने घरवालों का अन्देशा था, इस लिये मैं ने येह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एह़सान रख दूं ताकि वोह मेरे घरवालों को न सताएं और येह मैं यक़ीन से जानता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है मेरा ख़त़ उन्हें बचा न सकेगा। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का येह उ़ज़्र क़बूल फ़रमाया और उन की तस्दीक़ की। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूं, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) **अल्लाह** तआ़ला ख़बरदार है। जब ही उस ने अहले बद्र के ह़क़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो, मैं ने तुम्हें बख़्श दिया, येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आंसू जारी हो गए और येह आयात नाज़िल हुईं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 27, अल मुमतह़िना, तह़्तुल आयत : 1)

www.dawateislami.net

उन उमूर का बयान जिन के गुनाहे कबीरा होने का एहतिमाल है

﴾1﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक वोह अपने भाई के लिये वोह पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।[1] येह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾2﴿.....मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उस के अहलो इयाल उस की जान और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।[2]

येह हदीसे पाक सहीह है।

﴾3﴿.....रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस की ख़्वाहिश मेरे लाए हुवे दीन के ताबेअ न हो जाए।[3] इस हदीसे पाक की सनद सहीह है।

﴾4﴿.....सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : खुदा की क़सम ! वोह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं जिस की शरारतों से उस का पड़ोसी महफ़ूज़ न हो।[4]

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من خصال الایمان...الخ، ص ۴۲، حدیث: ۴۵

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب وجوب محبۃ رسول اللہ...الخ، ص ۴۲، حدیث: ۴۴

3 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب مایجب ان یکون ھوی المرء...الخ، ص ۱۱، حدیث: ۵

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب اثم من لا یامن جارہ...الخ، ۴/ ۱۱۶، حدیث: ۶۰۱۶

www.dawateislami.net

ईमान का सब से कमज़ोर दरजा

﴾5﴿.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से जो किसी बुराई को देखे उसे चाहिये कि उसे अपने हाथ से बदल दे अगर वोह उस की ताक़त न रखता हो तो अपनी ज़बान से बदल दे और अगर इस की भी इस्तिताअ़त न हो तो अपने दिल में उसे बुरा जाने और येह ईमान का सब से कमज़ोर दरजा है।[1]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

ज़ालिमों के मुतअ़ल्लिक़ मुस्लिम शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक है :

﴾6﴿.....जो अपने हाथ के साथ उन से जिहाद करे वोह मोमिन है और जो उन से अपनी ज़बान के साथ जिहाद करे वोह मोमिन है और जो उन से अपने दिल के साथ जिहाद करे वोह मोमिन है और इस के सिवा राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं[2]।[3]

ईमान से ख़ाली दिल

इस ह़दीसे पाक में दलील है कि जो शख़्स दिल में भी गुनाहों को बुरा नहीं जानता और न गुनाहों के ख़त्म होने को पसन्द करता है वोह ईमान से ख़ाली है। क़ल्बी जिहाद येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर येह कहे :

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر من الایمان...الخ، ص ۴۴، حدیث: ۴۹

2 .....या'नी ऐसे बद अ़क़ीदा और बद अ़मल लोगों की इस्लाह़ तीन जमाअ़तें तीन त़रह़ करें : हुक्काम ताक़त से कि मुजरिमों को सज़ाएं दें, अहले इ़ल्म ज़बान से कि उन्हें वा'ज़ करें, अ़वाम मोमिन दिल से कि उन से नफ़रत करें और दूर रहें ता क़ियामत येह अह़काम जारी रहें। (मिरआतुल मनाजीह, 1 / 151)

3 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر من الایمان...الخ، ص ۴۴، حدیث: ۵۰

www.dawateislami.net

अल्लाह ! बातिल और अहले बातिल को तबाहो बरबाद कर दे या उन के हाल की इस्लाह फ़रमा दे ।

﴾7﴿.....रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बिलाशुबा तुम पर फ़ासिक़ हुक्मरान मुक़र्रर किये जाएंगे जिन के कुछ काम तुम पसन्द करोगे, कुछ ना पसन्द । तो जो उन के बुरे कामों को ना पसन्द जाने वोह बरी हो गया और जो उन के बुरे कामों पर इन्कार करे वोह सलामत रहा मगर (वोह हलाक हो गया) जो उन के बुरे कामों पर राज़ी हो और उन की पैरवी करे । बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : क्या हम उन के साथ जंग न करें ? रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नहीं, जब तक वोह नमाज़ी रहें[1]।[2]

इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है ।

पेशाब से न बचने और चुग़ली के सबब अ़ज़ाबे क़ब्र

﴾8﴿.....रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसी दो क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब दिया जा रहा था तो इरशाद फ़रमाया : इन दोनों को अ़ज़ाब दिया जा रहा है और किसी ऐसी बात के सबब इन्हें अ़ज़ाब नहीं दिया जा रहा जिस से बचना बहुत दुश्वार हो, हां येह कबीरा है । इन में से एक पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ली किया करता था ।[3]

1.....इस ह़दीसे पाक में नमाज़ी रहने से मुराद मुसलमान रहना है क्यूंकि नमाज़ ही कुफ़्र व इस्लाम में फ़ारिक़ (फ़र्क़ करने वाली) है लिहाज़ा येह मत़लब नहीं कि बे नमाज़ी बादशाह हुक्काम की बग़ावत दुरुस्त है । (मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 388)

2...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب الانکار علی الامراء...الخ، ص۱۰۳۱، حدیث: ۱۸۵۴

3...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الدلیل علی نجاسۃ البول...الخ، ص۱۶۷، حدیث: ۲۹۲

www.dawateislami.net

नाहक़ झगड़े में इआ़नत की सज़ा

﴿9﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने नाहक़ झगड़े में किसी की इआ़नत की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब में रहता है यहां तक कि उस झगड़े से अलग हो जाए।[1] येह ह़दीसे पाक सह़ीह़ है।

﴿10﴾.....रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मक्र[2] और धोका आग में (ले जाता) है।[3]

इस ह़दीसे पाक की सनद क़वी है।

﴿11﴾.....रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़लाला करने वाले और जिस के लिये ह़लाला किया जाए उस पर ला'नत फ़रमाई है[4]।[5]

येह ह़दीसे पाक दो उ़म्दा सनदों के साथ मन्क़ूल है।

﴿12﴾.....हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने शोहर और उस की बीवी या आक़ा और उस के ग़ुलाम के दरमियान फ़साद कराया वोह हम में से नहीं है।[6] इस ह़दीस को इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है।

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الاحکام، باب من ادعی مالیس لہ...الخ، ۲/ ۹۲، حدیث: ۲۳۲۰

2 .....वोह फ़े'ल जिस में उस के करने वाले का बात़िनी इरादा उस के ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हो मक्र कहलाता है। (فیض القدیر، ۶/ ۳۵۸)

3 ...شعب الایمان، باب فی الامانات...الخ، ۵/ ۳۶۷، حدیث: ۶۹۷۸

4 .....इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ाशिया कबीरा नम्बर 29 के तह़्त गुज़र चुका है।

5 ...ترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء فی المحلل...الخ، ۲/ ۳۶۴، حدیث: ۱۱۲۲

6 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فیمن خبب مملوکا...الخ، ۴/ ۴۴۱، حدیث: ۵۱۷۰

www.dawateislami.net

निफ़ाक़ की दो शाख़ें

﴾13﴿.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़या और कमगोई ईमान की दो शाख़ें हैं और फ़ोह़्श गोई और ज़ियादा बोलना निफ़ाक़ की दो शाख़ें हैं।(1)

येह ह़दीसे पाक सह़ीह़ है।

﴾14﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़या ईमान से है और ईमान जन्नत में है और फ़ोह़्श गोई नेकी को तर्क करने से है और नेकी का तर्क जहन्नम में ले जाने वाला काम है।(2)

येह रिवायत दो असनाद से मरवी है और दोनों सनदें सह़ीह़ हैं।

जाहिलिय्यत की मौत

﴾15﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो इस ह़ाल में मरा कि उस पर किसी इमाम की बैअ़त न थी तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरा(3)।(4) इस ह़दीस की सनद सह़ीह़ है।

आग का खाना

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्तौरिद बिन शद्दाद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الحیی، ۳/ ۴۱۴، حدیث: ۲۰۳۴

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الحیاء، ۳/ ۴۰۶، حدیث: ۲۰۱۶

3 ....बैअ़त से अगर ख़लीफ़ा व सुल्त़ाने इस्लाम की बैअ़त मुराद है तो मत़लब येह होगा कि जब ख़लीफ़ए रसूल या सुल्त़ाने इस्लाम मौजूद हो फिर येह उस की बैअ़ते ख़िलाफ़त न करे तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 389)

4 ...السنۃ لابن ابی عاصم، باب فی ذکر السمع والطاعۃ، ص ۲۴۸، حدیث: ۱۰۹۱

www.dawateislami.net

जो किसी मुसलमान (की इहानत) के सबब एक लुक़्मा खाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस खाने के सबब क़ियामत के दिन उसे आग का खाना खिलाएगा[1] और जो किसी शख़्स की वज्ह से सुनाने और दिखाने की जगह खड़ा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन सुनाने और दिखाने की जगह खड़ा करेगा[2] और जो किसी मुसलमान (की इहानत) के सबब लिबास पहने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे आग का लिबास पहनाएगा ।[3] इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस ह़दीस को सह़ीह़ क़रार दिया है।

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 457 पर इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि दो लड़े हुवे मुसलमानों में से एक के पास जावे और उसे ख़ुश करने के लिये दूसरे की ग़ीबत करे । उसे बुरा कहे, उसे नुक़्सान पहुंचाने की तदबीरें बताए ताकि इस ज़रीए़ येह शख़्स उसे कुछ दे दे या खिलावे ऐसे ख़ुशामदी लोग आज कल बहुत हैं ।

2 .....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 6, सफ़ह़ा 457 पर इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली के बहुत मा'ना हैं : एक येह कि जो शख़्स किसी मश्हूर शरीफ़ आदमी की पगड़ी उछाले उस का मुक़ाबला करे ताकि उस मुक़ाबले से मेरी शोहरत हो दूसरे येह कि जो किसी शख़्स को दुन्या में झूटे त़रीक़े से उछाले ताकि उस के ज़रीए़ मुझे इ़ज़्ज़त व रोज़ी मिले जैसे आज कल बा'ज़ झूटे पीरों के मुरीद उस की झूटी करामतें बयान करते फिरते हैं ताकि हम को भी उस के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त मिले कि हम उस के बालके (चेले) हैं । (अशिआ़) तीसरे येह कि जो शख़्स दुन्या में नामो नुमूद चाहे नेकियां करे मगर नामवरी के लिये या जो शख़्स किसी के ज़रीए़ से अपने को मश्हूरो नामवर करे । क़ियामत में ऐसे शख़्सों को आ़म रुस्वा किया जावेगा कि फ़िरिश्ता उसे ऊंची जगह खड़ा कर के ए'लान करेगा कि लोगो येह बड़ा झूटा मक्कार फ़रेबी था ।

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الاطعمة، باب لا یدخل الجنة لحم نبت من سحت، ۵/ ۱۷۶، حدیث: ۷۲۴۸

www.dawateislami.net

साल भर क़त्ए तअ़ल्लुक़ की ख़राबी

﴾17﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़िराश सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी सह़ीह़ ह़दीस में है कि उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जिस ने साल भर तक अपने मुसलमान भाई से तर्के तअ़ल्लुक़ किया तो येह उस का ख़ून बहाने की त़रह़ है[1]।[2]

नाजाइज़ सिफ़ारिश ख़ुदा से मुक़ाबला है

﴾18﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इरशाद फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस की सिफ़ारिश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद में से किसी ह़द के लिये आड़ बन जाए तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के अम्र में मुक़ाबला किया ।[3]

इस ह़दीसे पाक की सनद उ़म्दा है ।

1.....मुरादे ह़दीस येह है कि जिस त़रह़ मुसलमान भाई को क़त्ल करना सज़ा का मूजिब है यूंही एक साल तक उस से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी रखना भी उ़क़ूबत का मूजिब है और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान : किसी मुसलमान के लिये ह़लाल नहीं कि वोह अपने भाई को तीन दिन तक छोड़ रखे ।'' येह फ़रमान तीन दिन से ज़ियादा क़त्ए तअ़ल्लुक़ की ह़ुरमत को बयान कर रहा है । (مرقاۃ المفاتیح،۸/۷۶۸،۷۶۹) यहां छोड़ने से मुराद दुन्यावी रन्जिशों की वज्ह से तअ़ल्लुक़ तर्क करना है। बद मज़हब, बे दीन से दाइमी बाईकाट करना, ता'लीमो तरबिय्यत के लिये तर्के तअ़ल्लुक़ करना (तीन दिन से) ज़ियादा का भी जाइज़ है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 448 मुल्तक़त़न)

2...ابوداود، کتاب الادب، باب فیمن یھجر اخاہ، ۴/ ۳۶۴، حدیث: ۴۹۱۵

3...ابوداود، کتاب الاقضیۃ، باب فیمن یعین علی خصومۃ...الخ، ۳/ ۴۲۷، حدیث: ۳۵۹۷

www.dawateislami.net

ता क़ियामत रिज़ा या नाराज़ी

﴾19﴿.....हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी की कोई बात करता है उसे इस बात की इन्तिहा के मुतअ़ल्लिक़ कोई वह्मो गुमान नहीं होता[1] मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक के लिये इस बात के सबब अपनी रिज़ा लिख देता है और आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की कोई बात कह देता है उसे इस बात की इन्तिहा के मुतअ़ल्लिक़ कोई वह्मो गुमान नहीं होता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक के लिये इस बात के सबब अपनी नाराज़ी लिख देता है।[2] इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

मुनाफ़िक़ को सरदार कहने की मुमानअ़त

﴾20﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुनाफ़िक़ को या सय्यिद या'नी ऐ सरदार ! मत कहो, अगर वोह तुम्हारा सरदार हुवा तो तुम ने अपने रब तआ़ला को नाराज़ कर दिया[3]।[4]

येह ह़दीस सह़ीह़ है और इसे इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने रिवायत किया है।

---

1 .....या'नी उसे ख़बर नहीं होती कि येह बात जो मैं बोल रहा हूं अल्लाह के नज़दीक कैसी अ़ज़ीमुश्शान है यूं ही बोल देता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 349)

2 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب فی قلۃ الکلام...الخ، ۴/ ۱۴۳، حدیث: ۲۳۲۶

3 .....इस हुक्म में काफ़िर, फ़ासिक़, मुनाफ़िक़ सब ही दाख़िल हैं बिला ज़रूरत ख़ुशामद के लिये इन लोगों को ऐसे अल्फ़ाज़ कहने सख़्त जुर्म है। इस से मा'लूम हुवा कि बे दीन को न तो सिर्फ़ सय्यिद कहो न सय्यिदुल क़ौम कहो बे दीन तो ज़लील है, सय्यिद इ़ज़्ज़त वाला है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 323 मुल्तक़तन)

4 ...ابوداود، کتاب الادب، باب لا یقول المملوک ربی و ربتی، ۴/ ۳۸۳، حدیث: ۴۹۷۷

www.dawateislami.net

﴾21﴿.....मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : (1) बात करे तो झूट बोले (2) वा'दा करे तो पूरा न करे और (3) उस के पास अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करे।[1]

येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

झूट और ख़ियानत के बारे में गुफ़्तगू गुज़र चुकी यहां इस ह़दीस को ज़िक्र करने से मक़्सूद वा'दा ख़िलाफ़ी को बयान करना है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने अ़ज़ीम में इरशाद फ़रमाता है :

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ

(پ۱۰، التوبۃ: ۷۵تا۷۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने **अल्लाह** से अ़ह्द किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे तो जब **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो इस के पीछे **अल्लाह** ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उसे मिलेंगे बदला उस का कि उन्हों ने **अल्लाह** से वा'दा झूटा किया*

मूंछें पस्त करने का हुक्म

﴾22﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है : रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

[1]... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، ص۵۰، حدیث: ۵۹

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : जो अपनी मूंछें न काटे वोह हम में से नहीं ।[1][2] इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی वग़ैरा ने इसे सहीह़ क़रार दिया है ।

﴾23﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आतश परस्तों की मुख़ालफ़त करो, दाढ़ियों को बढ़ने दो और मूंछों को पस्त करो ।[3]

बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त ह़ज न करना

﴾24﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने कुछ लोगों को शहरों की त़रफ़ भेजने का इरादा किया ताकि वोह उन लोगों को देखें जो इस्तित़ाअ़त के बा वुजूद ह़ज नहीं करते और उन पर जिज़्या मुक़र्रर करें । ऐसे लोग मुसलमान नहीं हैं, ऐसे लोग मुसलमान नहीं हैं ।[4]

इस ह़दीस को ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी सुनन में रिवायत किया ।

1...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی قص الشارب، ۴/ ۳۴۹، حدیث: ۲۷۷۰

2.....आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मूंछें इतनी बढ़ाना कि मुंह में आएं ह़राम व गुनाह व सुन्नते मुशरिकीन व मजूस व यहूदो नसारा है । रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ'ला दरजे की ह़दीसे सह़ीह़ में फ़रमाते हैं : मूंछें कुतर कर ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियां बढ़ाओ यहूदियों और मजूसियों की सूरत न बनो ।
(फ़तावा रज़विय्या, 22/684) (سنن کبری للبیھقی، کتاب الطھارۃ، باب السنۃ فی الاخذ من الاظفار، ۱/ ۲۳۲، حدیث: ۶۸۹)

3...مسلم، کتاب الطھارۃ، باب خصال الفطرۃ، ص ۱۵۴، حدیث: ۲۵۹، ۲۶۰

4...شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ والجماعۃ، باب جماع الکلام من الایمان، ۱/ ۷۴۱، حدیث: ۱۵۶۷

www.dawateislami.net

﴾25﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जिस ने बच्चे और उस की मां के दरमियान जुदाई डाली तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस के और उस के प्यारों के दरमियान जुदाई डाल देगा।[1] इस ह़दीस को इमाम अह़मद व इमाम तिरमिज़ी (عَلَیْہِمَا الرَّحْمَہ) ने रिवायत किया है।

वारिस को महरूम करने की सज़ा

﴾26﴿.....मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने वारिस को उस की मीरास से मह़रूम करेगा[2] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत से उस की मीरास काट देगा।[3] इस ह़दीसे पाक की सनद में कलाम है।

﴾27﴿.....हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कोई आदमी साठ साल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमांबरदारी के

---

1 ...ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی کراھیۃ الفرق بین الاخوین...الخ، ۳/ ۴۲، حدیث: ۱۲۸۷

2 .....अपने वारिस को मीरास से मह़रूम करने की बहुत सूरतें हैं किसी को वसिय्यत करना ताकि वरसा का ह़िस्सा कम हो जाए, किसी के लिये क़र्ज़ का झूटा इक़रार कर लेना ताकि वारिस के ह़िस्से कम हों बीवी को त़लाक़ दे देना ताकि वोह वारिस न हो सके, अपना कुल माल किसी को दे जाना ताकि वारिसों को कुछ न मिले, किसी वारिस को क़त्ल करा देना ताकि मीरास न पा सके या अपने बच्चे का इन्कार कर देना कि येह बच्चा मेरा है ही नहीं ताकि मीरास न पा सके, अपनी ज़िन्दगी में सारा माल बरबाद कर देना ताकि वारिसों के लिये कुछ न बचे वग़ैरा, बा'ज़ किसी बेटे को आ़क़ कर देते हैं या कह देते हैं कि हमारी मीरास से इसे कुछ न दिया जाए येह मह़ज़ बेकार है इस से वोह वारिस मह़रूम न होगा, मीरास से मह़रूम करने वाली चीज़ मुसलमान के लिये सिर्फ़ तीन हैं ग़ुलाम होना, क़त्ल, इख़्तिलाफ़े दीन, इन के सिवा किसी और वज्ह से महरूमी नहीं हो सकती। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/441)

3 ...ابن ماجہ، کتاب الوصایا، باب الحیف فی الوصیۃ...الخ، ۳/ ۳۰۴، حدیث: ۲۷۰۳

www.dawateislami.net

काम करता है फिर उसे मौत आती है तो वोह वसिय्यत में किसी को नुक़्सान पहुंचाता है तो उस के लिये जहन्नम वाजिब हो जाती है। फिर (रावि‌ये ह़दीस) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

غَیْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِیَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۲﴾ (پ۴، النساء: ۱۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जिस में उस ने नुक़्सान न पहुंचाया हो(1) *येह* **अल्लाह** *का इरशाद है और* **अल्लाह** *इल्म वाला ह़िल्म वाला है।*(2)

इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद व इमाम तिरमिज़ी (عَلَیْہِمَا الرَّحْمَہ) ने रिवायत किया है।

वारिस के लिये वसिय्यत नहीं

﴿28﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अम्र बिन ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऊंटनी पर सुवार हो कर ख़ुत़बा देते हुवे येह इरशाद फ़रमाते सुना : बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर ह़क़दार को उस का ह़क़ दिया है लिहाज़ा वारिस के लिये वसिय्यत नहीं।(3)(4) इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَہ ने सह़ीह़ क़रार दिया है।

---

1 .....अपने वारिसों को तिहाई से ज़ियादा वसिय्यत कर के या किसी वारिस के ह़क़ में वसिय्यत कर के। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 4, सूरतुन्निसा, तह़तुल आयत : 12)

2 ...ابو داود، کتاب الوصایا، باب ماجاء فی کراھیة الاضرار...الخ، ۳/ ۱۵۶، حدیث: ۲۸۶۷

3 ...ترمذی، کتاب الوصایا، باب ماجاء لاوصیة لوارث، ۴/ ۴۲، حدیث: ۲۱۲۷

4 .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** वारिस के लिये वसिय्यत जाइज़ नहीं मगर इस सूरत में जाइज़ है कि (दीगर) वारिस उस की इजाज़त दे दें। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 19, 3/938)

www.dawateislami.net

﴾29﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे ह़या और फ़ोह़्श गो को ना पसन्द फ़रमाता है ।(1)

﴾30﴿.....रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लोगों में बदतरीन मक़ाम उस शख़्स का होगा जो अपनी बीवी के क़रीब जाए और उस की बीवी उस के क़रीब आए फिर वोह उस औ़रत के राज़ को फैला दे(2)।(3) इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है ।

औ़रत के पिछले मक़ाम में सोह़बत करना

﴾31﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी बीवी के पिछले मक़ाम में सोह़बत करे वोह मलऊ़न है ।(4) इस ह़दीस को इमाम अह़मद व इमाम अबू दावूद (عَلَيْهِمَا الرَّحْمَه) ने रिवायत किया है ।

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं :

﴾32﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा जो औ़रत से उस के पिछले मक़ाम में सोह़बत करे ।(5)

---

1 ...الادب المفرد، باب الرفق، ص۱۳۵، حدیث: ۴۷۰

2 .....या'नी या तो अपनी बीवी के ख़ुफ़्या उ़यूब लोगों को बताए या उस का ह़ुस्न उस की ख़ूबियां लोगों को बताए या सोह़बत के वक़्त की गुफ़्तगू उस वक़्त के ह़ालात लोगों से कहता फिरे जैसा कि आ़म आज़ाद नौजवानों का दस्तूर है कि शबे अव्वल की बातें अपने दोस्तों को बे तकल्लुफ़ बताते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 5/81)

3 ...مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم افشاء سر المراۃ، ص۷۵۳، حدیث: ۱۴۳۷

4 ...ابوداود، کتاب النکاح، باب فی جامع النکاح، ۳/ ۳۶۲، حدیث: ۲۱۶۲

5 ...ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب النھی عن اتیان النساء... الخ، ۲/ ۴۵۰، حدیث: ۱۹۲۳

www.dawateislami.net

हाइज़ा से हलाल जान कर वती करना कुफ़्र है

﴾33﴿.....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो हैज़ वाली औरत से या औरत के पिछले मक़ाम में सोहबत करे या काहिन के पास जा कर उस की तस्दीक़ करे तो बिलाशुबा उस ने कुफ़्र किया या इरशाद फ़रमाया : वोह उस से बरी हो गया जो मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल किया गया[1]।[2] इस हदीसे पाक को इमाम अबू दावूद और इमाम तिरमिज़ी (عَلَيْهِمَا الرَّحْمَه) ने रिवायत किया है और इस की सनद पर कलाम है।

बिला इजाज़त किसी के घर में झांकना मनअ़ है

﴾34﴿.....हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स बिग़ैर इजाज़त तुम्हारे घर में झांके और तुम उस की आंख में कंकर मार दो जिस के नतीजे में उस की आंख फूट जाए तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं।[3]

येह हदीसे पाक बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है।

﴾35﴿.....रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने लोगों के घर में बिग़ैर इजाज़त झांका तो उन लोगों

1.....येह तीनों शख़्स कुरआनो हदीस के मुन्किर हो कर काफ़िर हो गए ख़याल रहे कि यहां से शरई कुफ़्र ही मुराद है इस्लाम का मुक़ाबिल और इन से वोह लोग मुराद है जो औरत से दुबर में या ब हालते हैज़ सोहबत को जाइज़ समझ कर सोहबत करें और काहिन नुजूमी को आलिमुल ग़ैब जान कर उस से फ़ाल खुलवाएं या ग़ैबी ख़बरें पूछें और अगर गुनाह समझ कर येह काम करें तो फ़िस्क़ है कुफ़्र नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, 1 / 33)

2...ابوداود، کتاب الطب، باب فی الکاھن، ۴/ ۲۰، حدیث: ۳۹۰۴

3...مسلم، کتاب الآداب، باب تحریم النظر فی بیت غیرہ، ص ۱۱۹۰، حدیث: ۲۱۵۸

www.dawateislami.net

के लिये ह़लाल है कि वोह उस की आंख फोड़ डालें।(1)(2)
इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

दीन में ग़ुलू की मुमानअ़त

﴿36﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا बयान करते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (दीन में) ग़ुलू से बचो क्यूंकि तुम से पहले के लोग ग़ुलू ही के सबब हलाक हुवे थे(3)।(4)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

(پ٦، المائدۃ:٧٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाह़क़ ज़ियादती न करो(5) और ऐसे लोगों की ख़्वाहिश पर न चलो जो पहले गुमराह हो चुके।

शैख़ इब्ने ह़ज़्म ने ग़ुलू को कबीरा गुनाह में शुमार किया है।

1...مسلم، کتاب الآداب، باب تحریم النظر فی بیت غیرہ، ص ١١٨٩، حدیث: ٢١٥٨

2.....इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़दीक : उस शख़्स की आंख को नहीं फोड़ा जाएगा और येह फ़रमाने आ़ली ज़ज्रो तौबीख़ (डांट डपट) या'नी दूसरे के घर में झांकने से सख़्त मुमानअ़त के लिये है। (مرقاۃ المفاتیح، ٧/ ٧٦، تحت الحدیث: ٣٥١٥)

3.....दीनी ग़ुलू से मुराद उमूरे दीनिया में ह़द से तजावुज़ करना और पेचीदा अश्या से मुतअ़ल्लिक़ बह़्स करना और उन उमूर की इल्लतों को ज़ाहिर करने की कोशिश करना है। (فیض القدیر، ٣/ ١٦٢، تحت الحدیث: ٢٩٠٩)

4...ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب قدر حصی الرمی، ٣/ ٤٧٦، حدیث: ٣٠٢٩

5.....यहूद की ज़ियादती तो येह कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नबुव्वत ही नहीं मानते और नसारा की ज़ियादती येह कि उन्हें मा'बूद ठहराते हैं।
(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 6, सूरतुल माइदह, तह़्तुल आयत : 77)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूरी

﴾37﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं : हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठाई जाए तो वोह राज़ी हो जाए (या'नी क़सम को क़बूल कर ले) और जो राज़ी न हो तो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई कुर्ब नहीं।(1) इस ह़दीस को इमाम इब्ने माजा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है।

﴾38﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फ़रेबी, एह़सान जताने वाला और बख़ील जन्नत में दाख़िल न होगा(2)।(3)

इस ह़दीसे पाक को इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ज़ईफ़ सनद से रिवायत किया।

﴾39﴿.....रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सान के लिये येही गुनाह काफ़ी है कि उसे हलाक कर दे जिस को रोज़ी देता है।(4)(5)

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الکفارات، باب من حلف لہ باللہ فلیرض، ۲/ ۵۴۲، حدیث: ۲۱۰۱

2 .....या'नी जो इन ऐबों पर मर जाए वोह जन्नती नहीं क्यूंकि वोह मुनाफ़िक़ है, मोमिन में अव्वलन तो येह ऐब होते नहीं और अगर हों तो रब तआ़ला उसे मरने से पहले तौबा नसीब कर देता है। येह मत़लब भी हो सकता है कि ऐसा आदमी जन्नत में पहले न जाएगा, एह़सान जताने से त़ा'ना देना मुराद है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/87)

3 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی البخل، ۳/ ۳۸۸، حدیث: ۱۹۷۰

4 ...ابو داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، ۲/ ۱۸۴، حدیث: ۱۶۹۲

5 .....इस त़रह़ कि उन्हें खाना न दे ह़त्ता कि वोह हलाक हो जाएं येह तो सख़्त ज़ुल्म है बल्कि क़त्ल है या इस त़रह़ कि उन्हें बहुत कम रोज़ी दे जिस से वोह दुबले कमज़ोर हो जाएं दो चार फ़ाक़े करा कर एक वक़्त दे दे या पेट भर कर न दे येह भी ज़ुल्म है, इस ह़ुक्म में लौंडी, ग़ुलाम पाले हुवे जानवर सब शामिल हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 5 /188)

www.dawateislami.net

हर सुनी हुई बात आगे बयान करना

﴾40﴿.....हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी के गुनाह के लिये येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात आगे बयान कर दे(1)।(2)

बुख़्ल के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने बारी तआ़ला

﴾1﴿.....

اَلَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَ یَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰہَ ھُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۴﴾ (پ۲۷،حدید:۲۴)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल को कहें और जो मुंह फेर ले तो बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।*

﴾2﴿.....

سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ (پ۴،اٰل عمران:۱۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा।

1.....हर ऐरे ग़ैरे की हर बात बिग़ैर तह़क़ीक़ किये बयान कर दे। ख़ुसूसन अह़ादीसे शरीफ़ा वरना मुह़द्दिसीन, फ़ुक़हा, उ़लमा उन की हर बात पर अ़वाम को ए'तिमाद करना पड़ेगा। लिहाज़ा येह ह़दीस फ़ुक़हा के इस क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं कि दीनी बातों में एक की ख़बर मो'तबर है, मुह़द्दिसीन ख़बरे वाह़िद का ए'तिबार करते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 151 मुल्तक़त़न)

2...مسلم، المقدمة، باب النهي عن الحديث بكل ما سمع، ص۸، حديث:۵

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ یَّبْخَلُۚ وَ مَنْ یَّبْخَلْ فَاِنَّمَا یَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖؕ وَ اللّٰهُ الْغَنِیُّ وَ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُۚ

(پ۲۶، محمد:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बे नियाज़ है और तुम सब मोहताज।

﴿4﴾.....

وَ اَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَ اسْتَغْنٰى ۙ﴿۸﴾ وَ كَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۹﴾ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿۱۰﴾ وَ مَا یُغْنِیْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿۱۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिस ने बुख़्ल किया और बे परवाह बना और सब से अच्छी को झुटलाया तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे और उस का माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा।

﴿5﴾.....

اَغْنٰى عَنِّیْ مَالِیَهْۚ﴿۲۸﴾ (پ۲۹، الحاقة:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मेरे कुछ काम न आया मेरा माल।

﴿6﴾.....

مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ﴿۴۸﴾ (پ۸، الاعراف:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था और वोह जो तुम ग़ुरूर करते थे।

﴿7﴾.....

وَ مَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴿۹﴾ (پ۲۸، الحشر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।

www.dawateislami.net

बुख़्ल ने अगलों को हलाक किया

﴾41﴿.....नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़ुल्म से बचो बिलाशुबा ज़ुल्म क़ियामत के दिन अन्धेरियां होगा और बुख़्ल से बचो कि बुख़्ल ने अगलों को हलाक किया, इसी बुख़्ल ने उन्हें ख़ून बहाने और ह़राम को ह़लाल ठहराने पर आमादा किया[1]।[2]

इस ह़दीसे पाक को इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रिवायत किया है।

﴾42﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बुख़्ल से बढ़ कर कौन सी बीमारी हो सकती है ?[3]

तीन मोहलिक अश्या

﴾43﴿.....हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ें हलाकत में डालने वाली हैं : (1) बुख़्ल जिस की पैरवी की जाए (2) नफ़्सानी ख़्वाहिश[4] जिस की इत़ाअ़त की जाए और (3) इन्सान का अपने आप को अच्छा जानना।[5]

---

1 .....बुख़्ल के लुग़वी मा'ना कन्जूसी के हैं और जहां ख़र्च करना शरअ़न, आ़दतन या मुरुव्वतन लाज़िम हो वहां ख़र्च न करना बुख़्ल कहलाता है या जिस जगह मालो अस्बाब ख़र्च करना ज़रूरी हो वहां ख़र्च न करना येह भी बुख़्ल है। (الحدیقۃ الندیۃ، ۲/ ۲۷، مفردات الفاظ القران، ص ۱۰۹)

2 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تحریم الظلم، ص ۱۳۹۴، حدیث: ۲۵۷۸

3 ...الادب المفرد، باب البخل، ص ۹۶، حدیث: ۲۹۹

4 .....इस से मुराद वोह नफ़्सानी ख़्वाहिश है जिस में हुक्मे शरीअ़त को मल्हूज़ न रखा जाए। (الحدیقۃ الندیۃ، ۱/ ۴۵۴)

5 ...حلیۃ الاولیاء، الحسن البصری، ۲/ ۱۸۳، حدیث: ۱۸۶۵

www.dawateislami.net

﴾44﴿.....इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ब त़रीक़े सह़ीह़ रिवायत किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ल्क़े के दरमियान में बैठने वाले शख़्स पर ला'नत फ़रमाई[1]।[2]

ह़सद से बचो

﴾45﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ह़सद[3] से बचो कि बिलाशुबा ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।[4]

इस ह़दीसे पाक को इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है।

नमाज़ी के आगे से गुज़रना

﴾46﴿.....रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला अगर येह जानता कि इस में

---

1 .....इस फ़रमाने आ़ली के दो मत़लब हो सकते हैं एक येह कि जो कोई किसी जल्से में आख़िर में आवे और लोगों की गर्दनें फलांगता हुवा बीच में पहुंचे वोह ला'नती है। चाहिये कि अगर किनारे पर जगह मिले तो वहां ही बैठ जावे। दूसरे येह कि येह शख़्स दरमियान में बैठा हो और लोग इस के इर्द गिर्द दस्त बस्ता खड़े हों येह अ़मल मुतकब्बिरीन का है बड़ा आदमी भी लोगों के साथ ह़ल्क़े में बैठे। (مرقات واشعہ) बा'ज़ लोग मज़ाक़ दिल्लगी करने के लिये किसी को दरमियान ह़ल्क़े में बिठा कर उसे मज़ाक़ का निशाना बनाते हैं वोह हर त़रफ़ के लोगों से मज़ाक़ करता है वोह भी ला'नती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/298)

2 ...ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراھیۃ القعود وسط الحلقۃ، ۴/ ۳۴۶، حدیث: ۲۷۶۲

3 .....किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी उस के छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इस का नाम ह़सद है। (الحدیقۃ الندیۃ، ۱/ ۲۰۰)

4 ...ابو داود، کتاب الادب، باب فی الحسد، ۴/ ۳۶۰، حدیث: ۴۹۰۳

www.dawateislami.net

क्या गुनाह है तो चालीस तक खड़े रहने को नमाज़ी के आगे गुज़रने से बेहतर जानता।[1]

﴾47﴿.....ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में कोई किसी ऐसी चीज़ की आड़ में नमाज़ पढ़ता हो जो उसे लोगों से छुपा ले[2] फिर कोई उस के सामने से गुज़रना चाहे तो उसे चाहिये कि वोह उस के सीने पर हाथ रख कर उसे रोके[3] फिर अगर वोह न माने तो उस से जंग करे कि वोह शैत़ान है[4]।[5]

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं :

﴾48﴿.....फिर अगर वोह न माने तो उस से जंग करे कि उस के साथ शैत़ान है।[6]

सलाम को आ़म करो

﴾49﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तुम उस वक़्त

1.....مسلم، کتاب الصلوۃ، باب منع المار بین یدی المصلی، ص۲۶۰، حدیث: ۵۰۷

2.....येह छुपाने वाली चीज़ दीवार हो या सुतून या लकड़ी वग़ैरा या कोई सामने बैठा हुवा आदमी या ऊंट वग़ैरा जानवर कि सब सुतरे में दाख़िल हैं।
(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 16)

3.....या'नी सख़्ती से उसे रोके यहां लड़ना भिड़ना और क़त्ल करना मुराद नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 15)

4.....शैत़ान से मुराद या तो जिन्नात का मुरिसे आ'ला है तब तो येह मत़लब होगा कि उसे शैत़ान बहका कर इधर ला रहा है या शैत़ान से इन्सान का शैत़ान मुराद है जो शैत़ानों का सा काम करे वोह शैत़ान ही होता है।
(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 15 मुल्तक़त़न)

5.....مسلم، کتاب الصلوۃ، باب منع المار بین یدی المصلی، ص۲۵۹، حدیث: ۵۰۵

6.....مسلم، کتاب الصلوۃ، باب منع المار بین یدی المصلی، ص۲۵۹، حدیث: ۵۰۵

www.dawateislami.net

तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते जब तक मोमिन न हो जाओ और तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक बाहम महब्बत न करो। क्या मैं तुम्हारी ऐसी चीज़ की त़रफ़ रहनुमाई न करूं कि जब तुम उसे कर लो तो तुम बाहम महब्बत करने लगो ? तुम आपस में सलाम को आ़म करो।(1)

تَمَّتْ وَبِالْخَیْرِ عَمَّتْ

هٰذَا اٰخِرُ کِتَابُ الْکَبَائِرِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا عَصَمَنَا اللّٰهُ وَاِیَّاکُمْ مِنَ الْکَبَائِرِ بِمَنِّهٖ وَکَرَمِهٖ اٰمِیْن وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَکِیْل

यहां किताबुल कबाइर (तर्जमा बनाम 76 कबीरा गुनाह) का इख़्तिताम हुवा और तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का रब है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और ख़ूब सलाम हो हमारे सरदार, ख़ातमुल अम्बिया ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप की पाकीज़ा आल व अस्ह़ाब पर। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हर एक को कबीरा गुनाहों से बचाए आमीन। हमें अल्लाह काफ़ी है और वोह क्या अच्छा कारसाज़ है।

(1)...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان انہ لا یدخل الجنۃ الا المؤمنون...الخ، ص۴۷، حدیث:۵۴

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	01
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	05
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)	06
पहले इसे पढ़ लीजिये !	08
ह़ालाते मुअल्लिफ़	12
मुक़द्दमा	15
कबीरा गुनाहों से बचने की बरकत	15
गुनाहों का कफ़्फ़ारा	16
गुनाहे कबीरा की ता'दाद	16
कबीरा गुनाह किसे कहते हैं ?	17
गुनाहे कबीरा नम्बर 1 : **शिर्क करना**	19
शिर्क की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	19
शिर्क की मज़म्मत में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा	20
गुनाहे कबीरा नम्बर 2 : **क़त्ले नाह़क़**	21
क़त्ले नाह़क़ की मज़म्मत में चार फ़रामीने बारी तआ़ला	21
क़त्ले नाह़क़ की मज़म्मत में 15 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	22
गुनाहे कबीरा नम्बर 3 : **जादू करना**	27
जादू की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	27
जादूगर की सज़ा	28
जादू की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	29

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
जाहिल को समझाने का अह़सन त़रीक़ा	31
एक सुवाल और इस का जवाब	32
जाहिल कब तक मा'ज़ूर है ?	32
गुनाहे कबीरा नम्बर 4 : **नमाज़ छोड़ देना**	33
तर्के नमाज़ की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	33
नमाज़ तर्क व क़ज़ा करने की मज़म्मत में रिवायात	34
आ'माल में सब से पहला सुवाल	36
क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ ह़श्र	37
जहन्नम की आग किस पर ह़राम है ?	38
गुनाहे कबीरा नम्बर 5 : **ज़कात न देना**	39
ज़कात न देने की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	39
ज़कात न देने की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	39
गुनाहे कबीरा नम्बर 6 : **वालिदैन की ना फ़रमानी करना**	42
वालिदैन की ना फ़रमानी की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	42
वालिदैन की ना फ़रमानी की मज़म्मत में 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	42
बाप जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है	43
वालिदैन की ना फ़रमानी की सज़ा जल्द मिलती है	45
ना फ़रमानी के सबब उ़म्र में कमी	46
गुनाहे कबीरा नम्बर 7 : **सूद**	47
सूद की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	47
सूद की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	48
गुनाहे कबीरा नम्बर 8 : **ज़ुल्मन यतीम का माल खाना**	49
ज़ुल्मन यतीम का माल खाने की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	49

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 9 : **रसूलुल्लाह ﷺ पर झूट बांधना**	50
गुनाहे कबीरा नम्बर 10 : **रमज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्र छोड़ देना**	52
तारिके रोज़ा की मज़म्मत में पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	52
इस्लाम के सुतून	52
गुनाहे कबीरा नम्बर 11 : **मैदाने जिहाद से भाग जाना**	54
गुनाहे कबीरा नम्बर 12 : **ज़िना करना**	54
ज़िना की मज़म्मत में चार फ़रामीने बारी तआ़ला	54
ज़िना की मज़म्मत में 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	55
गुनाहे कबीरा नम्बर 13 : **ह़ाकिम का अपनी रिआ़या को धोका देना और उन पर ज़ुल्मो जब्र करना**	58
क़ुरआन में ह़ाकिम के ज़ुल्मो जब्र की मज़म्मत	58
ह़ाकिम के ज़ुल्मो जब्र के मुतअ़ल्लिक़ 32 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	59
ह़ौज़े कौसर से महरूमी	60
सब से सख़्त अ़ज़ाब	62
बिदअ़ती मलऊ़न है	63
बदतरीन हुक्मरान	65
मक़्बूल दुआ़ वाले अफ़राद	67
गुनाहे कबीरा नम्बर 14 : **शराब पीना**	68
शराब की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	68
शिर्क के बराबर	68
शराब की मज़म्मत में पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	69
गुनाहे कबीरा नम्बर 15 : **तकब्बुर करना, फ़ख़्र करना, शैख़ी मारना और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना**	71

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुरूर व तकब्बुर की मज़म्मत में तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	71
गुरूर व तकब्बुर और उ़ज्ब की मज़म्मत में 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	72
बदतरीन मुतकब्बिर	76
गुनाहे कबीरा नम्बर 16 : **झूटी गवाही देना**	77
झूटी गवाही के सबब चार गुनाहों का इर्तिकाब	78
गुनाहे कबीरा नम्बर 17 : **लिवात़त**	79
लिवात़त की मज़म्मत में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	80
लिवात़त की सज़ा	80
गुनाहे कबीरा नम्बर 18 : **पाक दामन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना**	81
तोहमते ज़िना की मज़म्मत में दो फ़रामैने बारी तआ़ला	81
तोहमते ज़िना की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	82
गुनाहे कबीरा नम्बर 19 : **माले ग़नीमत, बैतुल माल और ज़कात के माल में ख़ियानत करना**	84
ख़ियानत की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	84
माले ग़नीमत में ख़ियानत का अन्जाम	85
माले ग़नीमत में ख़ियानत करने वाले की सज़ा	86
ज़ुल्म की अक़्साम	87
गुनाहे कबीरा नम्बर 20 : **नाजाइज़ व बातिल त़रीक़े से लोगों का माल ले कर ज़ुल्म करना**	89
ज़ुल्मन लोगों के माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	89
ज़ुल्मन लोगों के माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	90
सब से बड़ा ज़ुल्म	90

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
क़र्ज़ मुआ़फ़ न होगा	92
ह़राम से पलने वाला जिस्म जहन्नमी है	92
गुनाहे कबीरा नम्बर 21 : **चोरी करना**	93
चोर की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	94
गुनाहे कबीरा नम्बर 22 : **डाका डालना**	95
गुनाहे कबीरा नम्बर 23 : **झूटी क़सम खाना**	96
नाजाइज़ क़समों की मज़म्मत में सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा	96
ग़ैरुल्लाह की क़सम	97
गुनाहे कबीरा नम्बर 24 : **झूट बोलना**	99
झूट के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	100
झूट की मज़म्मत में 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	100
मुनाफ़िक़ की निशानियां	101
झूटा ख़्वाब बयान करने पर वईद	101
सब से बड़ी झूटी बात	103
गुनाहे कबीरा नम्बर 25 : **ख़ुदकुशी करना**	104
ख़ुदकुशी के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने बारी तआ़ला	104
ख़ुदकुशी की मज़म्मत में चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	105
गुनाहे कबीरा नम्बर 26 : **क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ फ़ैसला करना**	106
बुरे क़ाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	106
बुरे क़ाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा	107
तीन त़रह़ के क़ाज़ी	107
गुनाहे कबीरा नम्बर 27 : **दय्यूसी**	110

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 28 : **मर्दों का ज़नानी और औ़रतों का मर्दानी वज़्अ़ अपनाना**	111
ला'नत के मुस्तहिक़ मर्द व औ़रत	111
दो क़िस्म के जहन्नमी	112
औ़रत पर ला'नत के अस्बाब	113
गुनाहे कबीरा नम्बर 29 : **हलाला करना**	114
गुनाहे कबीरा नम्बर 30 : **मुर्दार, ख़ून और सूअर का गोश्त खाना**	115
गुनाहे कबीरा नम्बर 31 : **पेशाब से न बचना**	117
पेशाब से न बचने के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्तफ़ा	117
गुनाहे कबीरा नम्बर 32 : **नाजाइज़ टेक्स वुसूल करना**	118
गुनाहे कबीरा नम्बर 33 : **रियाकारी**	119
रियाकारी के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	119
गुनाहे कबीरा नम्बर 34 : **ख़ियानत करना**	122
ख़ियानत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	122
ख़ियानत के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्तफ़ा	123
गुनाहे कबीरा नम्बर 35 : **दुन्या के लिये इल्म सीखना और इल्म छुपाना**	123
इल्मो उ़लमा की फ़ज़ीलत	123
इल्म छुपाने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	124
हुसूले इल्म के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा	124
आग की लगाम	126
बुरे आ़लिम का अन्जाम	127
गुनाहे कबीरा नम्बर 36 : **एहसान जताना**	128
एहसान जताने की मज़म्मत में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा	128

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 37 : **तक़्दीर को झुटलाना**	129
तक़्दीर के मुतअ़ल्लिक़ छे फ़रामीने बारी तआ़ला	129
तक़्दीर के बारे में 15 फ़रामीने मुस्तफ़ा	130
छे अश्ख़ास पर ख़ुदा और रसूल की ला'नत	130
इस उम्मत के मजूसी	131
बिदअ़ती के सलाम का जवाब न दिया	131
तक़्दीर पर ईमान लाना लाज़िमी है	132
गुनाहे कबीरा नम्बर 38 : **लोगों की ख़ुफ़्या बातें सुनना**	135
कानों में पिघला हुवा सीसा	135
गुनाहे कबीरा नम्बर 39 : **ला'नत भेजना**	136
ला'नत भेजने के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा	136
मोमिन ला'न त़ा'न करने वाला नहीं होता	137
सब से बड़ा सूद	138
गुनाहे कबीरा नम्बर 40 : **अमीर के साथ अ़ह्द शिकनी वग़ैरा करना**	139
ईफ़ाए अ़ह्द के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	139
अ़ह्द व बद अ़ह्दी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा	139
हुक्मरान की ना गवार बात पर सब्र करो	142
गुनाहे कबीरा नम्बर 41 : **काहिन और नुजूमी को सच्चा जानना**	143
इल्मे नुजूम और नुजूमी के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	143
गुनाहे कबीरा नम्बर 42 : **शोहर की ना फ़रमानी करना**	145
शोहर की ना फ़रमानी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा	145
नफ़्ली रोज़े के लिये शोहर की इजाज़त	146
गुनाहे कबीरा नम्बर 43 : **रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ना**	148

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
क़त्ए रेह्मी के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा	148
फ़राख़िये रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़े का नुस्ख़ा	149
क़ातेए रेह्म से कौन मुराद है ?	150
गुनाहे कबीरा नम्बर 44 : **कपड़े या दीवार वग़ैरा में तस्वीर बनाना**	151
तस्वीर बनाने की मज़म्मत में आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा	151
बरोज़े क़ियामत सख़्त तरीन अ़ज़ाब	151
गुनाहे कबीरा नम्बर 45 : **चुग़ली**	153
चुग़ली के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	153
चुग़ली के सबब अ़ज़ाबे क़ब्र	153
गुनाहे कबीरा नम्बर 46 : **नौह़ा करना और चेहरा पीटना**	155
नौह़ा के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	155
गुनाहे कबीरा नम्बर 47 : **नसब पर त़ा'न करना**	156
गुनाहे कबीरा नम्बर 48 : **बग़ावत व सर्कशी करना**	157
बग़ावत व सर्कशी के मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	157
ख़ुश लिबासी तकब्बुर नहीं	158
बिल्ली के सबब औ़रत को अ़ज़ाब	158
ग़ुलाम को बे क़ुसूर मारने का कफ़्फ़ारा	160
गुनाहे कबीरा नम्बर 49 : **मुसलमान पर नाह़क़ ख़ुरूज करना और कबीरा गुनाह के मुर्तकिब को काफ़िर क़रार देना**	161
ख़वारिज की मज़म्मत	162
ख़वारिज जहन्नमी कुत्ते हैं	162
गुनाहे कबीरा नम्बर 50 : **मुसलमान को अज़िय्यत देना और बुरा भला कहना**	164
ईज़ाए मुस्लिम के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआ़ला	164

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
ईज़ाए मुस्लिम के मुतअ़ल्लिक़ 19 फ़रामीने मुस्तफ़ा	165
तक़्वा दिल में होता है	165
पड़ोसी को अज़िय्यत देने की मज़म्मत	166
मुर्दों की बुराइयां बयान करने की मुमानअ़त	167
ग़ीबत का अ़ज़ाब	168
वालिदैन को गाली देना कबीरा गुनाह है	169
गुनाहे कबीरा नम्बर 51 : **औलियाउल्लाह को अज़िय्यत देना और उन से अ़दावत रखना**	170
गुनाहे कबीरा नम्बर 52 : **फ़ख़्र व ग़ुरूर से तहबन्द वग़ैरा लटकाना**	171
तकब्बुर से तहबन्द वग़ैरा लटकाने के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	171
मोमिन का तहबन्द	174
गुनाहे कबीरा नम्बर 53 : **मर्द का रेशमी लिबास पहनना और सोना इस्ति'माल करना**	175
सोने व रेशम के इस्ति'माल के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	175
गुनाहे कबीरा नम्बर 54 : **ग़ुलाम का भाग जाना**	177
भगोड़े ग़ुलाम के मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा	177
गुनाहे कबीरा नम्बर 55 : **ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह करना**	179
ग़ैरुल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह करने वाला मलऊ़न है	179
गुनाहे कबीरा नम्बर 56 : **पराई ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के लिये ज़मीन के निशानात मिटाना**	180
पराई ज़मीन हथयाने वाला मलऊ़न है	180
गुनाहे कबीरा नम्बर 57 : **सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को बुरा भला कहना**	181

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
सहाबा को बुरा भला कहने के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	181
फ़ज़ीलते शैख़ैन के मुन्किर पर मुफ़्तरी की ह़द	183
सह़ाबी को काफ़िर कहने वाला ख़ुद काफ़िर है	184
गुनाहे कबीरा नम्बर 58 : **अन्सार को बुरा भला कहना**	186
ईमान की निशानी	186
मुनाफ़िक़ ही अन्सार से बुग़्ज़ रखता है	186
गुनाहे कबीरा नम्बर 59 : **गुमराही की त़रफ़ बुलाना या बुरा त़रीक़ा ईजाद करना**	187
बिदअ़त के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	187
गुनाहे कबीरा नम्बर 60 : **बाल जोड़ना, दांत कुशादा करना और गूदना**	188
गुनाहे कबीरा नम्बर 61 : **हथयार से मुसलमान को इशारा करना**	189
गुनाहे कबीरा नम्बर 62 : **ख़ुद को अपने बाप के इ़लावा की त़रफ़ मन्सूब करना**	190
पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	190
रह़मते इलाही से दूर अफ़राद	191
गुनाहे कबीरा नम्बर 63 : **बद शुगूनी**	192
बद शुगूनी के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा	192
गुनाहे कबीरा नम्बर 64 : **सोने चांदी के बरतनों में खाना पीना**	194
तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	194
गुनाहे कबीरा नम्बर 65 : **नाह़क़ झगड़ना, दूसरे को ह़क़ीर समझ कर उस के कलाम में त़ा'न करना, इन्तिहाई दुश्मनी रखना और ह़क़ जाने बिग़ैर क़ाज़ी का वकील बनना**	195
चार फ़रामीने बारी तआ़ला	195

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
लड़ाई झगड़े के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा	196
गुनाहे कबीरा नम्बर 66 : **ग़ुलाम को ख़स्सी करना, नाक काटना और इस पर ज़ुल्मो सितम करना**	198
ग़ुलाम का क़त्ल, उसे ख़स्सी और मुस्ला करना	198
महशर में सज़ा	199
वसिय्यते रसूल	199
गुनाहे कबीरा नम्बर 67 : **माप तोल में डन्डी मारना**	200
गुनाहे कबीरा नम्बर 68 : **अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना**	201
तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	201
गुनाहे कबीरा नम्बर 69 : **रहमते ख़ुदावन्दी से ना उम्मीद होना**	202
तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	202
मरते वक़्त रब तआ़ला से अच्छी उम्मीद हो	202
गुनाहे कबीरा नम्बर 70 : **मोहसिन की नाशुक्री करना**	203
गुनाहे कबीरा नम्बर 71 : **बचा हुवा पानी रोकना**	203
चार फ़रामीने मुस्तफ़ा	204
गुनाहे कबीरा नम्बर 72 : **अ़लामत के लिये जानवर का चेहरा दाग़ना**	206
गुनाहे कबीरा नम्बर 73 : **जुवा खेलना**	207
जूए की दा'वत देने पर सदक़े का हुक्म	210
गुनाहे कबीरा नम्बर 74 : **हरम में बे दीनी फैलाना**	211
9 कबीरा गुनाह	211
लोगों में सब से ज़ियादा सर्कश	213
गुनाहे कबीरा नम्बर 75 : **नमाज़े जुमुआ़ तर्क करना**	213
तर्के जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	213

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
गुनाहे कबीरा नम्बर 76 : मुसलमानों की जासूसी करना और उन के पोशीदा उमूर पर दूसरों को आगाह करना	214
मुसलमानों की जासूसी करने वालों का हुक्म	216
उन उमूर का बयान जिन के गुनाहे कबीरा होने का एहतिमाल है	217
ईमान का सब से कमज़ोर दरजा	218
ईमान से ख़ाली दिल	218
पेशाब से न बचने और चुग़ली के सबब अ़ज़ाबे क़ब्र	219
नाहक़ झगड़े में इआ़नत की सज़ा	220
निफ़ाक़ की दो शाख़ें	221
जाहिलिय्यत की मौत	221
आग का खाना	221
साल भर क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ की ख़राबी	223
नाजाइज़ सिफ़ारिश ख़ुदा से मुक़ाबला है	223
ता क़ियामत रिज़ा या नाराज़ी	224
मुनाफ़िक़ को सरदार कहने की मुमानअ़त	224
मूंछें पस्त करने का हुक्म	225
बा वुजूदे इस्तिताअ़त ह़ज न करना	226
वारिस को महरूम करने की सज़ा	227
वारिस के लिये वसिय्यत नहीं	228
औ़रत के पिछले मक़ाम में सोह़बत करना	229
ह़ाइज़ा से ह़लाल जान कर वती करना कुफ़्र है	230
बिला इजाज़त किसी के घर में झांकना मन्अ़ है	230

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा
दीन में गुलू की मुमानअ़त	231
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूरी	232
हर सुनी हुई बात आगे बयान करना	233
बुख़्ल के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने बारी तआ़ला	233
बुख़्ल ने अगलों को हलाक किया	235
तीन मोहलिक अश्या	235
ह़सद से बचो	236
नमाज़ी के आगे से गुज़रना	236
सलाम को आ़म करो	237
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	239
माख़ज़ो मराजेअ़	252
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़	255

रह़मते इलाही को वाजिब करने वाला अ़मल

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مِنْ مُّوْجِبَاتِ الرَّحْمَةِ اِطْعَامُ الْمُسْلِمِ الْمِسْكِيْنِ या'नी रह़मते इलाही को वाजिब करने वाली चीज़ों में से मिस्कीन मुसलमान को खाना खिलाना भी है।

(الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، الترغیب فی اطعام الطعام و...الخ، ۱/ ۴۴۴، حدیث: ۹)

www.dawateislami.net

ماٰخِذومَراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
تفسیر عبد الرزاق	امام حافظ ابوبکر عبد الرزاق بن ھمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
تفسیر البغوی	ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
تفسیر القرطبی	ابو عبداللہ بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دار الفکر ۱۴۲۰ھ
تفسیر الطبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
خزائن العرفان	مفتی نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
ابن خزیمۃ	امام محمد بن اسحاق بن خزیمۃ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۱۲ھ
ابن حبان	امام حافظ ابو حاتم محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
المصنف	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	امام ابو بکر احمد بن عمرو بزار رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
المسند	امام ابو یعلی احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
دار قطنی	امام ابو الحسن علی بن عمر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	ملتان پاکستان

www.dawateislami.net

مستدرک	امام محمد بن عبداللہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
الموسوعۃ	عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	ملتان پاکستان
سنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
فضائل الصحابۃ	امام احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار ابن الجوزی ۱۴۲۰ھ
غایۃ المقصد فی زوائد المسند	نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
دستور العلماء	علامہ قاضی عبد النبی بن عبد الرسول احمد نگری رحمۃ اللہ علیہ	کراچی پاکستان
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
السنۃ	امام احمد بن عمرو بن ابی عاصم رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۸۷ھ	دار ابن حزم ۱۴۲۴ھ
حلیۃ الاولیاء	ابونعیم احمد بن عبداللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
معالم السنن	امام ابوسلیمان احمد بن محمد خطابی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۸۸ھ	العلمیۃ حلب
شرح مسلم	ابوزکریا یحیی بن شرف نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۱ھ
عمدۃ القاری	بدر الدین محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرؤوف مناوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
شرح اصول اعتقاد اھل سنۃ	ھبۃ اللہ بن الحسن البصری اللالکائی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ الاسکندریۃ مصر
الزواجر عن اقتراف الکبائر	امام احمد بن محمد ابن حجر مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
الحدیقۃ الندیۃ	عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان

www.dawateislami.net

ذیل طبقات الحفاظ	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
نصاب اصول حدیث	مدنی علما المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۰ھ
رد المحتار	سید محمد امین ابن عابدین رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
الطیب البیان فی رد تقویۃ الایمان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ اسلامیہ لاہور
فتاوی رضویہ	اعلی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
مراۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ لاہور
غیبت کی تباہ کاریاں	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مدظلہ	مکتبۃ المدینہ
نیکی کی دعوت	مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مدظلہ	مکتبۃ المدینہ

सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे और शहज़ादियां

शहज़ादे : प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तीन शहज़ादे थे जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम (2) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (3) त़य्यिबो त़ाहिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان)

शहज़ादियां : मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चार शहज़ादियां थीं जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2) ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या (3) ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम (4) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ।

(المواہب اللدنیۃ، الفصل الثانی فی ذکر اولاد الکرام، ۴/ ۳۱۳)

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की तरफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत

(उर्दू कुतुब)

01....राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल (زَادُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़्हात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अहकामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़्हात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِاٰدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़्हात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِ فِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़्हात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़्हात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत (मुकम्मल चार हिस्से) (कुल सफ़्हात : 561)

07....शरीअत व तरीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِيْجَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاءِ) (कुल सफ़्हात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़्हात : 60)

09....मआशी तरक़्क़ी का राज़ (हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाह व नजात व इस्लाह) (कुल सफ़्हात : 41)

10....आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़्हात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआफ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़्हात : 47)

12....सुबूते हिलाल के तरीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़्हात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़्हात : 31)

14....ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़्हात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़्हात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़्हात : 1185)

(अरबी कुतुब)

17, 18, 19, 20, 21.....جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس).

(कुल सफ़्हात : 570, 672, 713, 650, 483)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़्हात : 458)

www.dawateislami.net

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़्हात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़्हात : 62)

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़्हात : 93)

26..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِي (कुल सफ़्हात : 46)

27..... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़्हात : 77)

28..... اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़्हात : 70)

29..... اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़्हात : 60)

30..... जद्दुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़्हात : 722, 723)

शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू तराजुम)

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़्हात : 896)

02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِي حُكْمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़्हात : 112)

03.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِي الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्हात : 28)

04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्हात : 142)

05.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़्हात : 54)

06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِي ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्हात : 743)

07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَامِ اَعْظَمعَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्हात : 46)

08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 853)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 1012)

10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرِعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्हात : 144)

11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्हात : 85)

12.....राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्हात : 102)

13.....उयूनुल ह़िकायात (मुतर्जम ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)

14.....उयूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम)(कुल सफ़्हात : 413)

15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़्हात : 641)

16....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्हात : 649)

www.dawateislami.net

17....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़हात : 122)

18....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)

19....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)

20....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)

21....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِى الدِّيْن) (कुल सफ़हात : 63)

22....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़हात : 36)

23....बेटे को नसीह़त (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64)

24....اَلدَّعْوَةِ اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़हात : 148)

25....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़हात : 98)

26....इस्लाहे़ आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़हात : 866)

27....आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِى طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़हात : 105)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1124)

29..... अल्लाह वालों की बातें जिल्द 2 (कुल सफ़हात : 217)

30..... कुतुल कुलूब जिल्द अव्वल (कुल सफ़हात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشيةضياء الاصباح (कुल सफ़हात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़हात : 325)

04....اصول الشاشى مع احسن الحواشى (कुल सफ़हात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشيةالنوروالضياء (कुल सफ़हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़हात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़हात : 280)

www.dawateislami.net

09....صرف بهائی مع حاشية صرف بنائی (कुल सफ़्हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़्हात : 241)

11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़्हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़्हात : 175)

13....نحو ميرمع حاشية نحو منير (कुल सफ़्हात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشی (कुल सफ़्हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़्हात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़्हात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़्हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़्हात : 101)

19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़्हात : 45)

20....خاصيات ابواب (कुल सफ़्हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़्हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़्हात : 168)

24....انوارالحديث (कुल सफ़्हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़्हात : 184)

26....تفسير الجلالين مع حاشيةانوارالحرمين (कुल सफ़्हात : 364)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़्हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6) (कुल सफ़्हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़्हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़्हात : 1332)

05....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 422)

06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 244)

07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़्हात 312)

08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)

09....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़्हात : 56)

10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)

11....इ़ल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 244)

12....सवानेह़े करबला (कुल सफ़्हात : 192)

13....अरबई़ने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़्हात : 112)

www.dawateislami.net

14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64) 15....मुन्तख़ब हदीसें (कुल सफ़्हात : 246)

16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170) 17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से) 25.... हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)

26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़्हात : 249) 27....जहन्नम के ख़तरात (कुल सफ़्हात : 207)

28....करामाते सहाबा (कुल सफ़्हात : 346) 29....अख़्लाकुस्सालिहीन (कुल सफ़्हात : 78)

30....सीरते मुस्तफ़ा (कुल सफ़्हात : 875) 31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़्हात : 133)

32....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ (कुल सफ़्हात : 59)

33....जन्नत के तलबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़्हात : 470)

34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़्हात : 49) 35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़्हात : 16)

36....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़्हात : 20)

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा﴿

01....हज़रते तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 56)

02....हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 72)

03....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 89)

04....हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 60)

05....हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 132)

06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़्हात : 720)

07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिल्द अव्वल (कुल सफ़्हात : 864)

08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिल्द दुवुम (कुल सफ़्हात : 855)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हालात (कुल सफ़्हात : 106)

02....तकब्बुर (कुल सफ़्हात : 97)

03....40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 87)

www.dawateislami.net

04....बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़हात : 115)
06....नूर का खिलोना (कुल सफ़हात : 32)
07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 49)
08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)
13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16....तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)
19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)
20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़हात : 160)
25....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

www.dawateislami.net

28....नेक बनने और बनाने के तरीक़े (कुल सफ़हात : 696)

29....फ़ैज़ाने इह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)

30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)

31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

34....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात (कुल सफ़हात : 590)

35....ह़ज व उ़मरह का मुख़्तसर त़रीक़ा (कुल सफ़हात : 48)

36....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़हात : 168)

37....ह़सद (कुल सफ़हात : 97)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....क़सम के अह़काम 02....जल्द बाज़ी 03....फ़ैज़ाने इस्लाम

04....फ़ैज़ाने दुआ (ग़ार के क़ैदी) 05....बुख़्ल

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

01....सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)

02....मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)

03....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, ह़िस्सा दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)

04....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)

05....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

06....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज (कुल सफ़हात : 48)

07....कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)

08....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़हात : 275)

09....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िकमत (कुल सफ़हात : 48)

www.dawateislami.net

10....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)

11....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

12....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)

13....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

14....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)

15....मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

16....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

17....मैं ह़यादार कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

18....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)

19....मुख़ालफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)

20....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)

21....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़हात : 49)

22....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2) (कुल सफ़हात : 48)

23....तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (3) (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)

24...तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4) (कुल सफ़हात : 49)

25....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़्ह़ात : 102)

26-27....हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़्ह़ात : 47)

27....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

28....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)

29....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

30....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)

32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)

34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

35....सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

36....क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)

37....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)

38....ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़हात : 32)

39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)

41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)

42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)

43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)

44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)

45....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)

46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)

47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)

48....इ़ग्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)

49....मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)

51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

52....ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)

53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)

54....मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ? (कुल सफ़हात : 32)

55....चमकती आंखों वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

56....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 5) (कुल सफ़हात : 102)

57....हुक़ूक़ुल इबाद की एहतियातें (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त 6) (कुल सफ़हात : 47)

58....नादान आशिक़ (कुल सफ़हात : 32)

59....सीनेमा घर का शैदाई (कुल सफ़हात : 32)

60....गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त पन्जुम (कुल सफ़हात : 23)

61....डान्सर ना'त ख़्वान बन गया (कुल सफ़हात : 32)

62....गुलूकार कैसे सुधरा ? (कुल सफ़हात : 32)

63....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)

64....काले बिच्छू का ख़ौफ़ (कुल सफ़हात : 32)

65....ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ? (कुल सफ़हात : 32)

66....अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची (कुल सफ़हात : 32)

67....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)

68....चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....अजनबी का तोहफ़ा

02....जेल का गवय्या

हिर्स की ता'रीफ़

ख़्वाहिशात की ज़ियादती के इरादे का नाम हिर्स है और बूरी हिर्स येह है कि अपना हिस्सा हासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के हिस्से की लालच रखे। या किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को **हिर्स** और हिर्स रखने वाले को **हरीस** कहते हैं। (مرقاۃ المفاتیح، ۹/۱۱۹)

www.dawateislami.net

कब गुनाहों से किनारा मैं करूंगा या रब

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब !
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह बनूंगा या रब !

कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा
कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब !

गर तेरे प्यारे का जल्वा न रहा पेशे नज़र
सख़्तियां नज़्अ़ की क्यूं कर मैं सहूंगा या रब !

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

हाए ! मा'मूली सी गर्मी भी सही जाती नहीं
गर्मिये महशर मैं फिर कैसे सहूंगा या रब !

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले हश्र में ऐब
आह ! रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब !

पुल सिरात़ आह ! है तल्वार की भी धार से तेज़
किस त़रह़ से मैं उसे पार करूंगा या रब !

क़ब्र महबूब के जल्वों से बसा दे मालिक
येह करम कर दे तो मैं शाद रहूंगा या रब !

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

दर्दे सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूं
मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब !

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब !

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से पेश कर्दा चन्द रसाइल

﴾1﴿.....एह़सासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़ह़ात : 48)

﴾2﴿.....फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 32)

﴾3﴿.....प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 48)

﴾4﴿.....सदके़ का इन्आ़म (कुल सफ़ह़ात : 48)

﴾5﴿.....सूद और उस का इलाज (कुल सफ़ह़ात : 92)

﴾6﴿.....कामिल मुरीद (कुल सफ़ह़ात : 92)

﴾7﴿.....वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़ह़ात : 74)

﴾8﴿.....जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़ह़ात : 106)

﴾9﴿.....पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है (कुल सफ़ह़ात : 64)

﴾10﴿.....सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 124)

﴾11﴿.....जामेए़ शराइत़ पीर (कुल सफ़ह़ात : 86)

﴾12﴿.....मौत का तसव्वुर (कुल सफ़ह़ात : 44)

﴾13﴿.....बुराइयों की मां (कुल सफ़ह़ात : 112)

﴾14﴿.....मक़्सदे ह़यात (कुल सफ़ह़ात : 64)

﴾15﴿......हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़ह़ात : 124)

﴾16﴿......मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 29)

﴾17﴿.....मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़ह़ात : 72)

﴾18﴿.....मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़ह़ात : 32)

﴾19﴿......तआ़रुफ़े दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 56)

﴾20﴿......फ़ैसला करने के मदनी फूल (कुल सफ़ह़ात : 56)

﴾21﴿......ग़ैरत मन्द शौहर (कुल सफ़ह़ात : 48)

﴾22﴿.....सीरते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (कुल सफ़ह़ात : 75)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तंगदस्ती और ख़ौफ़ का इलाज

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : खाना खाने के बा'द **सूरए इख़्लास** और **सूरए क़ुरैश** (दोनों सूरतें) पढ़े। (احياءُ العلوم ج٢ص٨)

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़ुबैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस के तह़्त लिखते हैं : खाने के बा'द **सूरए इख़्लास** पढ़ना हुसूले बरकत के लिये है और **सूरए इख़्लास** पढ़ने से फ़क़्र या'नी तंगदस्ती दूर होती है जब कि **सूरए क़ुरैश** पढ़ने से ख़ौफ़ और भूक से अमान ह़ासिल होगी। (مُلَخَّص از اتحافُ السّادة المتقين ج٥ص٥٩٩)

ISBN 978-969-631-517-9
0126061
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1226

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E-mail : maktabadelhi@dawateislami.net